विमल कुमार जैन

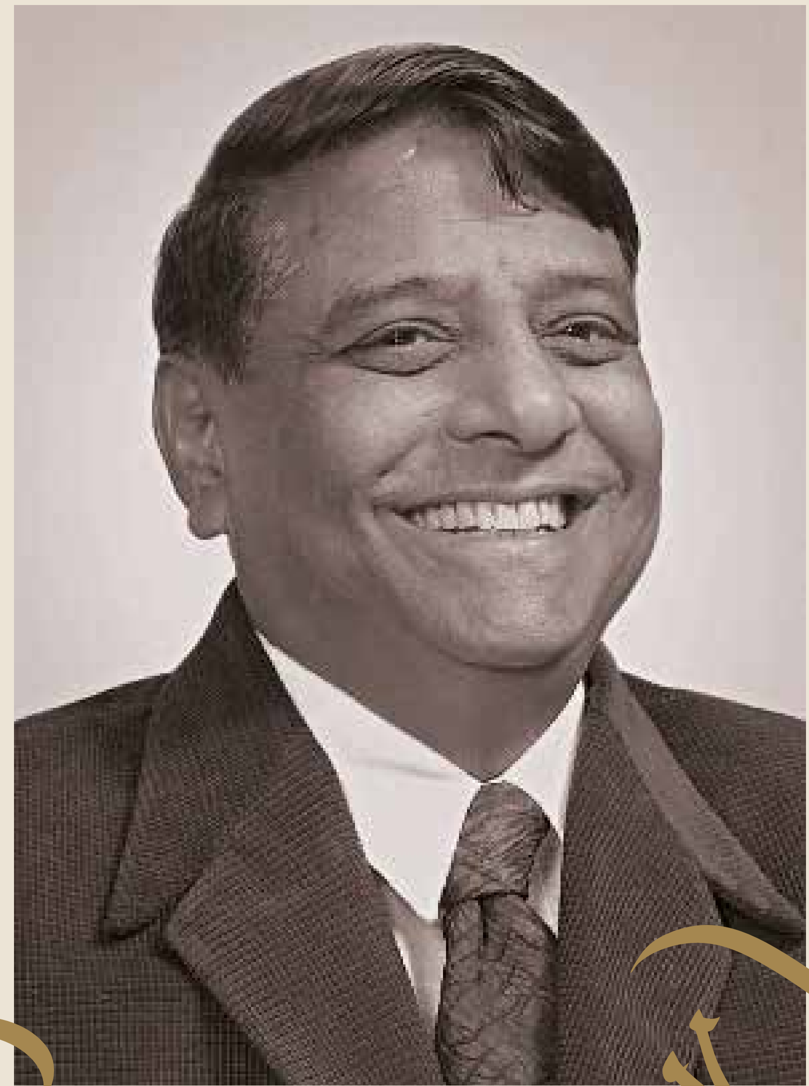

विमल कुमार जैन

1948 - 2011

उन्होंने अपनी दूरदृष्टि तथा
निर्माण व्यवसाय की बारीकियों पर पैनी नज़र के बल पर
कुमार प्रॉपर्टीज़ को अतुलनीय विस्तार दिया।

परिचय

कहते हैं कि मंज़िल की ओर बढ़ने के लिए पहली शुरूआत एक छोटे से कदम के साथ होती है। वटवृक्ष भी पूरी तरह से विकसित होने से पूर्व एक नन्हा सा अंकुर बनकर ही माटी की छाती चीरकर निकलता है और कालांतर में सघन होता जाता है। हर बड़े दरिया का उद्गम किसी पहाड़ी से टपटप कर बहती नन्हीं बूंद से ही होता है। इस अनंत ब्रह्मांड की व्युत्पत्ति का श्रेय भी वैज्ञानिक शोधानुसार एक अति सूक्ष्म कण “हिग्स बोसोन” अथवा “ईश्वरीय कण” को ही जाता है। हर सफलता के मूल में पहला कदम एक छोटी सी शुरूआत भर होता है।

सृष्टि के आरंभ से लेकर वर्तमान समय तक इतिहास के पन्ने उलट कर देखने पर हम पाएंगे कि हर उद्यम का उद्गम अत्यंत साधारण रहा है। कारों को लोकोपयोगी बनाने एवं सुलभ करने वाले हेनरी फोर्ड ने अपना पहला गैसोलीन इंजिन अपने पिता के फार्म हाउस पर बने एक छोटे से झोपड़े में बनाया था लेकिन इन्हीं की कम्पनी ने अमेरिका सहित पूरे विश्व के कार बाज़ारों में क्रांति ला दी थी। मानव इतिहास के सबसे महत्वपूर्ण आविष्कारों में से एक, कम्प्यूटर बनाने वाली विश्वविख्यात कंपनी एप्पल के सहस्थापक स्टीव जॉब्स ने अपना पहला पर्सनल कम्प्यूटर एक सहयोगी के साथ अपने पिता के गैरेज में असेंबल किया था लेकिन आज एप्पल इस क्षेत्र की सर्वश्रेष्ठ कंपनियों में से एक है। ऐसे अनेकानेक उदाहरण हैं जहां पर आप पाएंगे कि कुछ कर गुज़रने की सोच लिए हुए सीमित संसाधनों के साथ किंतु लक्ष्य साधकर ओर उसे पाने के लिए प्रबल पुरुषार्थ कर कैसे उद्यमियों ने सफलता की नई इबारतें गढ़ी हैं।

ऐसा ही एक छोटा सा किंतु दृढ़ कदम था कुमार प्रॉपर्टीज़ की स्थापना। आज से तकरीबन पांच दशक पूर्व जब पूरा देश आज़ादी की 20 वीं सालगिरह का जश्न मना रहा था, उस दिन यानि, 15 अगस्त 1966 को कुमार एंड कंपनी के नाम से मेरे दादाजी स्व. केसरीमल जी जैन ने एक यात्रा प्रारंभ की थी। पुराने पुणे के महत्वपूर्ण एवं प्रसिद्ध महात्मा गांधी मार्ग से सटकर लगी एक छोटी सी सड़क केदारी रोड में पहला कार्यालय ख़ुला और यहीं पर हमारा निवास भी था। यह वह समय था जब 1961 में पानशेत बांध के टूट जाने से पूरी तरह से तबाह हो चुका शहर पुनः स्थापित होने का प्रयास कर रहा था और सुनियोजित निर्माण उद्योग भी अपने पैर पसारने लगा था। इस तबाही का एक सकारात्मक पक्ष यह था कि इसने पुणे शहर के नवनिर्माण की भी नींव रखी थी। बिल्डरों और डेवलपरों ने नया-नया इस क्षेत्र में कदम रखा ही था और धीरे-धीरे लोगों का रुझान अपार्टमेंट लिविंग की तरफ हो रहा था।

किंतु कुमार एंड कंपनी की बुनियाद ही कुछ हटकर करने के लिए रखी गई थी। और इसी का निर्वाह करते हुए दादाजी ने एक नवीन तथा क्रांतिकारी फार्मूले की ईजाद की और उसे नाम दिया गया ‘‘आपले घर मोफत बांधून देनार’’। इसके तहत पुराने घर तथा खाली पड़ी ज़मीनें उनके मालिकों से 20 साल की लीज़ पर ली गई और वहां निर्माण कुमार एंड कंपनी ने किया। निर्मित होने के बाद उस जगह बनाए जाने वाले घरों तथा दुकानों को कुमार एंड कंपनी ने किराए पर देना शुरू किया। उस दौरान नानापेठ, गणेशपेठ, तुलशीबाग आदि क्षेत्रों में इस स्कीम के तहत कई निर्माण हुए। कंपनी को इसका ज़बर्दस्त प्रतिसाद मिला और शीघ्र ही पुणेवासियों के बीच हमारी पैठ बनने लगी। स्व. केसरीमल जी ओसवाल ने जो बुनियाद रखी थी उस पर कुमार प्रॉपर्टीज़ की बुलंद इमारत खड़ी करने का श्रेय जाता है मेरे पिताजी तथा हमारे प्रेरणा-पुंज स्व. श्री विमलकुमार जैन को। उन्होंने अपनी दूरदृष्टि तथा निर्माण व्यवसाय की बारीकियों पर पैनी नज़र के बल पर कुमार प्रॉपर्टीज़ को अतुलनीय विस्तार दिया। उन्हीं के स्थापित किए हुए मानदण्डों की बदौलत आज कुमार प्रॉपर्टीज़ का हर प्रोजेक्ट गुणवत्ता, ग्राहक संतुष्टि व भरोसे का पर्याय है। हमारी और पुणे शहर की विकासगाथा समानांतर ही चलती रही। हमारी कंपनी ने शहर की ज़रूरतों को ध्यान में रखते हुए जब, जैसे और जहां आवश्यक था, वहां अपने प्रोजेक्ट्स प्रारंभ किए। इसकी परिणति यह हुई कि जहां-जहां हमने प्रोजेक्ट्स चालू किए, उस क्षेत्र की समृद्धि और विस्तार सुनिश्चित होता गया।

मात्र 100 स्क्वायर फीट के एक छोटे से कार्यालय से प्रारंभ हुई कुमार एंड कंपनी आधुनिक पुणे के अग्रगण्य निर्माताओं में से एक कुमार प्रॉपर्टीज़ के रूप में आज अवस्थित है और अब तक 180 लाख स्क्वायर फीट जगह का निर्माण कर चुकी है। मज़रूह सुल्तानपुरी का एक बहुत ही प्रसिद्ध शेर है, ‘‘मैं अकेला ही चला था जानिबे मंज़िल मगर, लोग जुड़ते गए और कारवां बनता गया’’, इसी की एक बानगी है लगभग दो हज़ार कर्मियों और लगभग 30 हज़ार संतुष्ट ग्राहकों से समृद्ध कुमार परिवार। इस स्मारिका में उनसे जुड़े कई लोगों से चर्चा कर उनकी यादों को जीवंत करने का प्रयास किया गया है।

रजस वि. जैन

चिटनीस

एडवोकेट चिटनीस

वर्तमान समय में विज्ञापन व मार्केटिंग के दम पर लुभावने वादे किए जाते हैं और बहुत थोड़े को बहुत ज़्यादा बताकर बेचने का प्रचलन है। रियल इस्टेट का क्षेत्र भी इससे अछूता नहीं है। झूठे चित्रों के माध्यम से ग्राहकों को अपनी ओर आकर्षित कर गुणवत्ता विहीन उत्पाद बेचा जाता है तथा ग्राहक भारी दाम देकर उसे ख़रीदने के बाद पछताते रह जाते हैं। ऐसे माहौल में जब मैंने अपने लिए एक अच्छे घर की खोज शुरू की तो मैं उसके लिए बहुत भटका। लुभावने ब्रोशर्स पढ़ने के बाद जब साइट पर पहुंचते, तो पता चलता कि असलियत क्या है और प्रचारित क्या किया जा रहा है। फिर एक दिन मैं कुमार समूह की कुमार पुष्प नामक इमारत की साइट पर पहुंचा। वहां पहुंचने के बाद मुझे महसूस हुआ कि असल में गुणवत्ता किसे कहते हैं।

यूं तो कुमार समूह का नाम सुना था और श्री विमल कुमार जैन से भी प्रारम्भिक परिचय था लेकिन आज़माने का मौका पहली बार ही मिला। सब कुछ जैसा मुझे चाहिए था बिलकुल वैसा था। इसलिए कुमार पुष्प में मैंने फ्लेट बुक कर दिया।

उसके बाद सोसायटी के कामों से तथा अन्य कारणों से कई बार विमल जी से मिलना हुआ। मुझे पहली ही बार उनसे मिलकर बड़ी हैरत हुई। मैं इतने बड़े समूह के मालिक से मिलने जाने में वैसे डर रहा था लेकिन उनसे मिलने के बाद मेरा डर बिलकुल खत्म हो गया। वे इतने मृदुभाषी, आदरणीय तथा नम्र थे कि मुझे लगा ही नहीं मैं कुमार समूह के मालिक से बात कर रहा हूं। 2006 में मुझे मेरे फ्लेट का पजेशन मिल गया जो कि तय समय से पूर्व था। पजेशन मिलने के बाद भी किसी भी प्रकार की परेशानी होने पर तुरंत उसका निराकरण किया जाता रहा है।

मैं पेशे से एडवोकेट हूं तथा हमारी फील्ड में कागज़ पर लिखे हुए को ही कानून माना जाता है लेकिन इस समूह तथा श्री विमल जी पर मुझे इतना विश्वास था और अभी भी है कि उनका कहा ही कानून के बराबर था। 7 जून को उनकी मृत्यु से पूर्व सुबह मेरी बात हुई थी तथा शाम 6 बजे मिलने के लिए अपाइंटमेंट भी उन्होंने दिया था लेकिन मेरे भाग्य में शायद वह मुलाकात ही नहीं लिखी थी। उनकी असमय मृत्यु परिवार और समूह के लिए ही नहीं, बल्कि पूरे शहर के लिए बड़ी क्षति है।

आर्किटेक्ट केशव देसाई

मुझे गर्व है कि मैं विमल भाई और कुमार समूह के प्रोफेशनल से पर्सनल हुए घनिष्ठ व्यक्तियों की लिस्ट में शामिल कुछ बहुत पुराने लोगों में से एक हूं। किसी व्यावसायिक घराने से 40 से अधिक सालों का नियमित व्यावसायिक व्यवहार अपने आप में एक उपलब्धि है। न सिर्फ व्यावसायिक बल्कि इन वर्षों के दौरान घटित हुए एक-एक घटनाक्रम के हम दोनों ही पक्ष साक्षी रहे हैं। उनके सुख-दुख में मैं और मेरे सुख दुख में वे। कुछ ऐसे आपसी संबंध और ऐसी घनिष्ठता रही है हमारी कि अब लगता ही नहीं है कि कुमार प्रॉपर्टीज़ समूह या जैन परिवार कोई दूसरे हैं। इन संबंधों की शुरूआत भी रोचक रही। मैं तथा आर्किटेक्ट रामकुमार राठी पार्टनर हैं। हमारी कंपनी देसाई राठी असोसिएट्स 1971 में रविवार पेठ में स्थित सोमानी मार्केट प्रोजेक्ट कर रही थी। उस ज़मीन के मालिक श्री सोमानी के ठेकेदार ने काम रोक दिया क्योंकि वह जगह काफी संकरी थी तथा उसे काम करने में इस वजह से परेशानी हो रही थी। उसके बाद कहीं विमल भाई और सोमानी जी मिले होंगे तथा इस बाबद् चर्चा की होगी। विमल भाई ने उस काम को पूरा करने की जिम्मेदारी ली तथा ड्राइंग्स के लिए वे हमारे पास आए। लेकिन हमारे पास औपचारिक रूप से सोमानी जी ने उनको ड्राइंग्स देने संबंधी सूचना नहीं दी थी इसलिए हमने उन्हें सोमानी जी की चिट्ठी लेकर आने के लिए कहा। वे बिना माथे पर शिकन लाए लौट गए तथा सोमानी जी का एनओसी लेकर आए। उसके बाद से उनके साथ काम करने का सिलसिला जो चल निकला सो अब तक जारी है। तब ऐसा आभास भी नहीं था कि यह संबंध इतना अटूट और गहरा हो जाएगा। खेद है कि इस सफर में हमने विमल भाई और इंदर भाई को खो दिया लेकिन नियति को कौन टाल सकता है? मुझे बेहद खुशी है कि विमल भाई के बाद उनके सहोदरों ने तथा अगली पीढ़ी ने भी उनके स्थापित किए हुए सम्बंधों को उसी आत्मीयता से निभाया है जैसे विमल भाई करते थे। यदि काम की बात की जाए तो मैं कहूंगा कि कुमार प्रॉपर्टीज़ समूह के अब तक हुए प्रोजेक्ट्स में से सर्वाधिक हमने किए हैं। इसके साथ ही उनके पोर्टफोलियो के कुछ महत्वपूर्ण प्रोजेक्ट्स स्ट्रक्चर्स तथा देसाई राठी असोसिएट्स द्वारा पूरे किए गए हैं। सोमानी मार्केट के बाद हमने चेतन अपार्टमेंट पर काम किया था जो उनकी तथा दत्ता जी गायकवाड़ की जेवी फर्म का प्रोजेक्ट था। कुमार प्रॉपर्टीज़ के पहले सबसे बड़े तथा महत्वाकांक्षी प्रोजेक्ट कुमार कॉर्नर का भी आर्किटेक्चरल वर्क हमने ही किया था। इसके अलावा कुमार कैपिटल, नीता पार्क, कुमार क्लासिक, प्लीज़ेण्ट पार्क, सत्यम, आनंद सोसायटी, कुबेरा पार्क, कुबेरा चैम्बर्स, संगम पार्क, पदमजी पैलेस, कुबेरा गार्डन तथा पदमजी पैराडाइज़ हमारे द्वारा कुमार प्रॉपर्टीज़ के लिए किए गए कुछ महत्वपूर्ण प्रोजेक्ट्स में से हैं। इसके साथ ही उनके द्वारा किए गए सामाजिक सेवा के कार्यों के लिए भी उन्होंने हमें ही अवसर दिया। दरअसल विमल भाई के साथ मेरी कैमिस्ट्री इतनी जम गई थी कि हम दोनों को एक दूसरे की पसंद नापसंद का पूरा आभास हो गया था। दूसरा कारण यह रहा कि विमल भाई स्वयं आर्किटेक्चरल ड्राइंग्स आदि में बहुत रुचि रखते थे। शुरू-शुरू में तो वे खुद हमारे ऑफिस आते, साथ बैठते और ड्राइंग पर काम करते थे। इस तरह से हमारा समय भी बचता था और काम भी सही होता था। उनके द्वारा बनवाए गए कम्युनिटी हाल, दादावाड़ी जैन मंदिर, अहिंसा भवन तथा उपाश्रय भवन की भी डिज़ाइन हमने ही तैयार की थी। उनके साथ व्यावसायिक रूप से प्रारंभ हुए सम्बन्ध कब गहरी दोस्ती में बदल गए यह पता ही नहीं चला। मैं, आर्किटेक्ट रामकुमार राठी, अशोक बेहरे, दत्ताजी गायकवाड़, दिलीप मेहता तथा विमल भाई का मित्र समूह प्राफेशनली पर्सनल ग्रुप था तथा हम एक साथ ही रहते थे। प्रतिदिन का मिलना-जुलना, बाहर घूमने जाना, बिल्डर्स असोसिएशन आदि की गोष्ठियों में भाग लेना, यह सब हमारी दिनचर्या का हिस्सा था। विमल भाई जब अपना बंगला बनवा रहे थे उन दिनों मैं ऐसे ही एक बार उनके साथ साइट पर गया, वे मुझसे बोले कि उन्हें नारियल के पेड़ बहुत पसंद हैं तथा मुझे पौधे खरीदने के लिए साथ चलने को कहा। लेकिन मैंने उन्हें कहीं और से पौधे मंगाने के बजाए अपने फार्महाउस से फिलीपींस से इंपोर्टेड नारियल के पौधे मंगवाकर दिए तथा उन्होंने वे अपने बंगले में लगवाए। मेरे इस छोटे से तोहफे से ही वे बड़े खुश हुए थे। उनके कुशल नेतृत्व में कुमार प्रॉपर्टीज़ ने बहुत तरक्की की है तथा अभी भी उनकी अगली पीढ़ी उन्हीं के पदचिह्नों पर चलकर इस सिलसिले को आगे बढ़ा रही है। कुमार समूह की सबसे बड़ी खासियत यह रही कि विमल भाई ने कभी भी अपने वादों को अधूरा नहीं छोड़ा। पज़ेशंस, सेल्स, आफ्टर सेल्स सर्विस इन सब सेवाओं में कुमार समूह प्रारंभ से ही पारदर्शी रहा है। इसीलिए इन्हें सबसे बड़ा लाभ यही हासिल है कि ग्राहक इन पर विश्वास करता है जो आमतौर पर इस फील्ड में कम देखने को मिलता है। एक और कारण यह रहा कि सेठजी तथा विमल भाई के बाद पूरा परिवार इसी व्यवसाय में आगे बढ़ा और यह इनका मुख्य व्यवसाय बन गया जबकि अन्य डेवलपर्स को देखें तो उनका कोर बिज़नेस रियल इस्टेट डेवलपमेंट नहीं है। विमल भाई के रूप में मैंने एक बहुत अच्छा दोस्त, एक ज्ञानवान बिल्डर, एक समाज सेवक, एक कुशल व्यवसायी और एक बेहद अच्छा इंसान खोया है। न सिर्फ मेरे लिए बल्कि पुणे शहर के लिए एक कभी न भरा जा सकने वाला शून्य है।

अभय बम्ब

विमल जी से पहली भेंट एकदम सरसरी तौर पर हुई थी। मैं हम दोनों के मित्र महेंद्र कोठारी की वजह से उनसे मिला। बात करीब 15 साल पहले, 1990 के आसपास की होगी। किसी के ऑफिस में उनसे मुलाकात हुई और परिचय हुआ था। बातें हुई तो किसी ने उन्हें बताया कि मैं ज्योतिष और कुंडली आदि में थोड़ा दखल रखता हूं। उसके बाद वे अपनी और दिलीप मेहता जी की कुंडली लेकर मुझसे मिलने आए। उन्हें मैंने अपनी समझ और ज्ञान के अनुसार जो भी कुछ था, बताया। बस फिर तो यही सिलसिला चल निकला। हफ्ते में दो बार तो कम से कम वे मेरे क्लॉथ स्टोर आते और हम धर्म, ज्योतिष, कुंडली, दर्शन जैसे विषयों पर बातचीत किया करते थे।

इन्हीं मुलाकातों में उन्हें करीब से जानने का मौका मिला और मैंने जाना कि उस व्यक्ति के अंदर भविष्यद्दष्टा छुपा बैठा था। और हैरत की बात नहीं है कि उनकी इसी काबिलियत ने रियल इस्टेट के क्षेत्र में उनकी पकड़ इतनी मज़बूत की। वे भविष्य की रूपरेखा बड़ी ही सटीक बुनते थे। पुणे शहर में जहां-जहां उन्होंने कदम रखा, समृद्धि पीछे-पीछे चली आई। यह भविष्य के प्रति उनकी सूक्ष्म दृष्टि का ही कमाल था।

उनके लिए हमेशा मेरे मन में गुरूत्तर भाव ही रहा है। वे जब भी मुझसे मिलने आते या मैं उनसे मिलने जाता, वह मुलाकात हर बार एक नया अनुभव देकर जाती थी। वे स्वास्थ्य के प्रति बहुत सचेत थे। ज्योतिष, धर्म, दर्शन, आध्यात्म इन सब विषयों पर उनका ज्ञान गूढ़ था। आदर उनके मन में सभी धर्मो के लिए था और यथासम्भव हर धर्म के लिए उन्होंने अपनी क्षमता अनुसार दान भी दिया। लेकिन जिन दर्शन और जैन धर्म की शिक्षाओं को उन्होंने न सिर्फ माना बल्कि जीवन भर उनका पालन भी किया। देश ही नहीं विदेशों में भी जैन धर्मस्थलों की यात्राएं उन्होंने की और हर जगह की स्थापत्य कला से प्रेरणा लेकर पुणे में बिबवेवाड़ी स्थित जैन मंदिर और दादावाड़ी में स्थित अहिंसा भवन का निर्माण करवाया।

निःस्वार्थ सेवा, कड़ी मेहनत और ईमानदारी यह उनके मुख्य आदर्श रहे। इन्ही के बलबूते पर उन्होने इतने कम समय में अपना व्यावसायिक साम्राज्य खड़ा किया। उनके बनाए हुए सभी गृह प्रकल्प शानदार और खरीददारों को पूरी सुविधा देने वाले रहे। सोसाइटी हैंडओवर करते समय वे बड़ा फंक्शन करते थे। मेंटेनेंस डीड, पज़ेशन, कीमत, गुणवत्ता इन सब मामलों में कुमार समूह के बारे में मैंने तो मेरे जीवनकाल में अब तक कभी भी कुछ भी गलत नहीं पढ़ा न सुना।
संबंध बनाना और निभाना, यह उनकी एक और बड़ी खूबी थी। चाहे कितने ही व्यस्त क्यों न हों, वे अपने संबंधियों, परिचितों, दोस्तों और समाज के अन्य लोगों के यहाँ के सुख दुख के हर कार्यक्रम में उपस्थिती ज़रूर देते थे।

उनके साथ मैंने कई धार्मिक व अन्य जगहों की यात्राएं कीं। मेरे घर के लिए ज़मीन भी उन्होने ही बताई थी। उनके अंतिम दर्शन मुझे उनकी मृत्यु से चार दिन पहले ही हुए थे। उनके साथ दो घंटे तक मैं रहा और हम बातचीत कर रहे थे। फिर एक अस्पताल के उदघाटन में भी हम गए जहां पर उन्होने बढ़िया भाषण भी दिया था। उस दिन उनसे विदा लेते हुए ये कभी नहीं सोचा था कि अंतिम बार उनसे मुलाक़ात हो रही है।

उनके बारे में इतना ही कहना चाहता हूँ कि ऐसे व्यक्ति की इस समाज को, पुणे शहर को, परिवार को, कुमार समूह को, इष्टजनों को और मित्रों को बहुत ज़रूरत थी और वे बहुत ही जल्दी चले गए। हालांकि सबकी यादों में उनकी स्मृतियाँ सदैव ही जीवित रहेंगी और उनकी सीखें हमेशा सबका मार्गदर्शन करती रहेगी। कुमार समूह उन्हीं सीखों को अपनाकर आज उनके नाम को जीवंत किए हुए हैं। ऐसे विलक्षण व्यक्तित्व को नमन और कुमार समूह को भविष्य के लिए हार्दिक शुभेच्छा।

अभय बम्ब

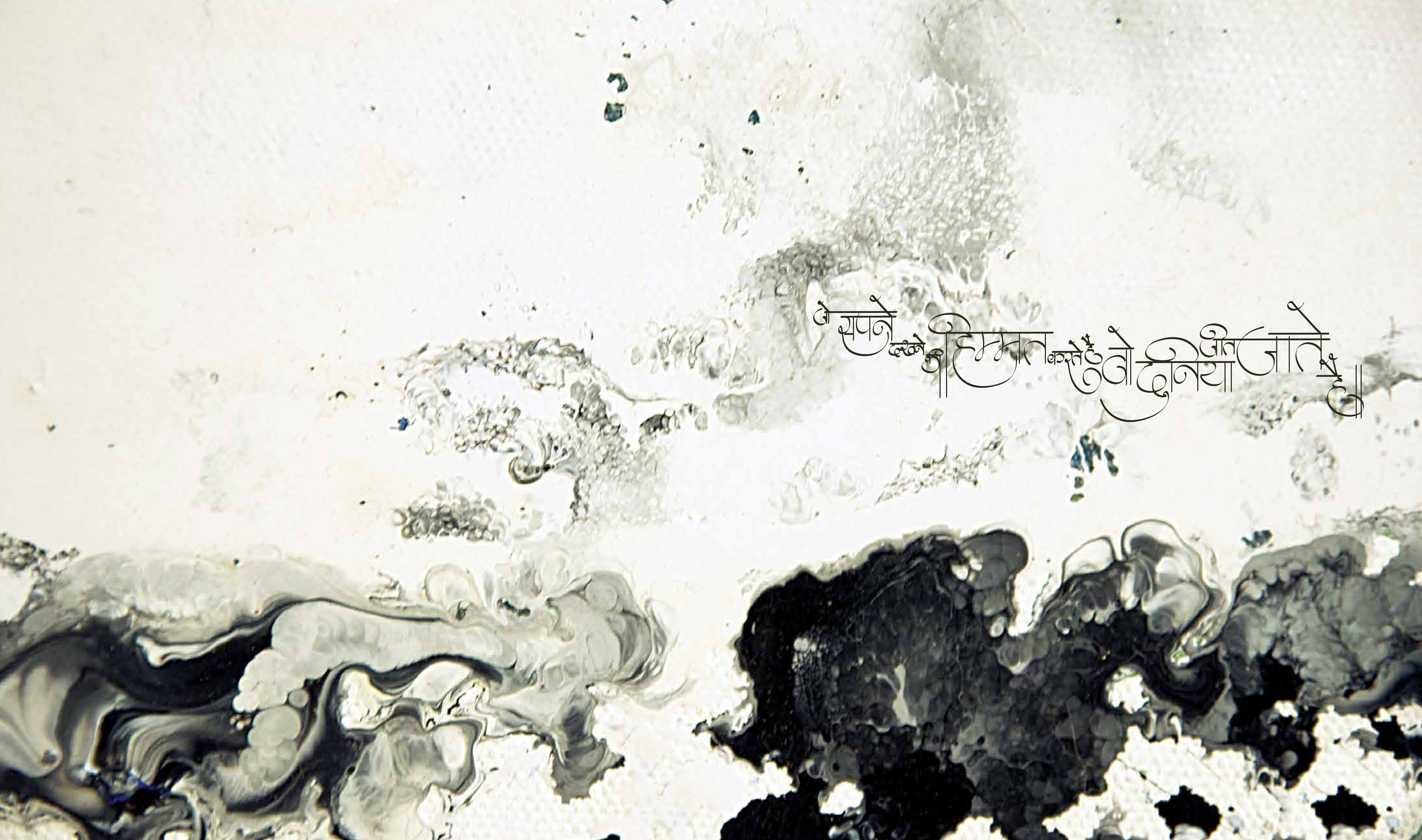
जो सपने देखने की हिम्मत करते हैं वो दुनिया जीत जाते हैं॥

अचल जैन

जैन समाज के सामाजिक सेवा कार्यों से जुड़े होने के कारण मेरा जैन परिवार तथा कुमार समूह से बहुत पुराना परिचय है। जैन युवक संगठन व दादावाड़ी मंदिर की कार्यसमिति की स्थापना में मैं तथा श्री विमल कुमार जैन व श्री केसरीमलजी ओसवाल अग्रणी भूमिका में रहे थे।इसके अलावा राजस्थान शिक्षण संघ नामक एक ट्रस्ट, जो की मारवाड़ी समुदाय के बच्चों की शिक्षा-दीक्षा का प्रबंध करता था, के गठन के समय भी हम दोनों से सक्रिय भूमिका निभाई थी। मूलतः हमारा मिलना जुलना सिर्फ समाज सेवा के कार्यों में या सामाजिक मेल मिलाप में ही नहीं बल्कि वैसे भी होता रहता था। दरअसल मुझे उनसे मिलने और बातें करने का बहुत ही शौक था क्योंकि उनसे बात करते हुए आपको अहसास होता था की यह व्यक्ति असल में कितने ज्ञानी हैं और जीवन के प्रती इनका नज़िरया कितना व्यापक और सटीक है।

जैन समाज के विभिन्न सामाज कि संगठनों में उनकी सक्रिय भूमिका थी और वे स्वयं कई संस्थाओं के जन्मदाता थे। जैनसमाज के लिए उन्होंने कई कार्य किए हैं। जिन विचारधारा तथा जिन सूक्तों के वे प्रबल समर्थक थे। हालांकि अन्य धर्मों व उनकी शिक्षाओं के प्रति भी उनके मन में उतना ही आदर और सम्मान था जितना जैन धर्म के प्रति। आदर्शों और मूल्यों के प्रति वे बेहद संवेदनशील थे। इसके साथ ही उन्होंने जो गुण अपनी भावी पीढ़ियों में डाले हैं वे भी उनकी इसी भावना को जी भी रहे हैं। अपने कर्मों से ही व्यक्ति महान बनता है, ऐसा उनका मानना था और इसी हेतु पूरे जीवन भर उन्होंने ऐसे कर्म किए कि आज भी उनका नाम सभी वर्गों में आदर के साथ लिया जाता है। कुमार समूह के साथ मिलकर मैंने एक प्रोजेक्ट कुमार पृथ्वी अचलनगर किया।

अचल जैन

अरविन्द केरिंग

अरविन्द केरिंग

विमल भाई के साथ हुआ यूं कि मुलाकातें दोस्ती में बदली और दोस्ती का रंग वक्त के साथ बहुत गहरा होता गया। हम लोग लगभग पिछले 25 वर्षों से एक दूसरे से परिचित हैं। इस बीच में हमारे कारोबारी सम्बन्ध भी बने। उनका मेरे प्रति सदैव एक छोटे भाई की तरह स्नेह रहा। हांलांकि वे मेरे भाई डा. रमेश केरिंग से ज़्यादा करीबी थे, लेकिन मेरे प्रति भी उनका स्नेह बराबर रहा। मुझे याद नहीं आता कि उनसे नज़दीकियां बढ़ने के बाद से मैंने अपनी ज़िन्दगी का कोई महत्वपूर्ण निर्णय बिना उनसे पूछे लिया हो। वे हमेशा मुझे अच्छी सलाह देते। उनके मन में हम सभी के प्रति असीम स्नेह था इसलिए हमें पूरा भरोसा था कि हमारे विषय में ये हमेशा अच्छा ही सोचेंगे।

इसके साथ ही साथ उनके विराट अनुभव व त्वरित निर्णय लेने की क्षमता ने उनके कहे को हमारे लिए पत्थर की लकीर बना दिया। उनकी कही कोई बात हमने कभी नहीं टाली, फिर वह भले ही वह पारिवारिक हो या व्यावसायिक। मैं उन चुनिंदा खुशनसीब लोगों में से हूं जो कि उनके ऑफिस या घर में कभी भी बिना किसी अपाइन्टमेंट या फोन कॉल के उनसे मिल सकते थे। और ऐसा मैं अक्सर करता रहता था। हर बार उनसे मिलने के बाद मन एकदम प्रसन्न हो जाता तथा हर बार कोई नई बात सीखने को मिलती। कारोबारी रूप देखें तो हमने कई प्रोजेक्ट्स के लिए साथ में ज़मीनें ख़रीदी। प्रॉपर्टीज़ की एक सबसे बड़ी लैण्ड डील 1994 में हुई थी। इस डील से पहले हमने साथ में कई ज़मीनों का मुआयना किया तथा इस विषय में उनकी विलक्षण प्रतिभा से मैं बहुत प्रभावित हुआ। किसी क्षेत्र का भविष्य क्या होगा, जिस ज़मीन को देख रहे हैं, वहां पर किस प्रकार की इमारतें विकसित की जा सकती है यह सब वे सिर्फ एक ही बार की विज़िट में जान लेते थे। मैं हांलांकि उनके साथ ही रहता लेकिन वहाँ के बारे में जिस प्रकार की पारखी नज़र से वे मुआयना करते वह मैं आज तक नहीं कर पाया।

लैण्ड होल्डिंग्स के बाद दो प्रोजेक्ट्स को वलपमेंट भी हमने साथ में किया। उंडरी स्थित पामस्प्रिंग्स तथा वाकड़ स्थित पिकाडिली, ये दोनों प्रोजेक्ट्स हमारी जेवी फर्म के हैं। इन दोनों प्रोजेक्ट्स के लिए भी एक व्यावसायिक साझेदार के तौर पर उनके निर्णयों पर सवाल उठाने की हमें कभी नौबत ही नहीं आई। चाहे वित्तीय लेनदेन हो अथवा प्रोजेक्ट से जुड़ा कोई अन्य महत्वपूर्ण निर्णय, अंतिम मुहर उनकी ही रहती और वह स्वीकार्य होती। आज भी उनके निधन के बाद दोनों परिवारों तथा व्यावसायिक प्रतिष्ठानों के बीच सम्बन्ध वैसे ही गहरे हैं। विमल भाई के अभूतपूर्व नेतृत्व तथा अन्य परिजनों व कुमार समूह के समर्पित व निष्ठावान स्टाफ की बदौलत कुमार समूह आज भारत के सर्वश्रेष्ठ बिल्डर्स की लीग में शामिल हो गया है।

समूह ने बड़ी ही तेज़ी से तरक्की की तथा अपने आपको न सिर्फ मज़बूती से स्थापित किया है बल्कि ग्राहकों का असीम विश्वास भी अर्जित किया है। उन्होंने जो तरक्की की राह तय की थी आज उस पर उनके बाद की पीढ़ी उनके आदर्शों को अपनाकर सफलतापूर्वक आगे बढ़ रही है। मुझे आशा ही नहीं बल्कि पूर्ण विश्वास है कि भविष्य में यह समूह और तरक्की करेगा।

अविनाश नवाथे

अविनाश नवाथे

विमल जी जैसे व्यक्तित्व के बारे में कुछ भी कहना सूरज को दीया दिखाने जैसा होगा। मेरी उनसे पहचान बहुत ही संयोग से हुई। 1985 के आसपास मैंने करियर की शुरूआत की थी। उस समय मैं विमल जी से परिचित नहीं था। मेरे एक असाइनमेंट के दौरान क्लाइंट के साथ मेरा कुछ विवाद हो गया। दरअसल मैं उस क्लाइंट का काम काफी अरसे से कर रहा था और पेमेंट के तौर पर मुझे काफी दिनों तक उन्होंने कुछ भी रुपया नहीं दिया। तंग आकर मैंने काम बंद कर दिया। एक लंबी बहस के बाद आखिरकार यह तय हुआ कि किसी अन्य मध्यस्थ के माध्यम से हमारे बीच का विवाद सुलझाया जाए। उस क्लाइंट के करीबी परिचय में विमल जी थे। विमल जी हमारे आर्बीट्रेटर बने तथा दोनों पक्षों को उन्होंने ध्यान से सुनने के बाद मेरे पक्ष को सही बताते हुए उस क्लाइंट को मुझे तय की गई रकम चुकाने को कहा। विमल जी की उपस्थिति मात्र से ही हमारे बीच में सुलह हो गई तथा तभी से मेरा विमल जी से परिचय प्रारंभ हुआ।

आरंभिक मुलाकातों में हम सोशल गेदरिंग्स में ही मिलते थे। उस दौरान मैं उनसे कंस्ट्रक्शन और रियल इस्टेट के क्षेत्र में आने वाले बदलाव और रुझानों के बारे में चर्चा किया करता था। कभी-कभी उन्हें अपने काम के बारे में भी जानकारी देता। अगर उन्हें कोई बात पसंद आती तो वे तुरंत ही तारीफ करते और कहा करते थे कि मैं तुम्हें कभी अपने प्रोजेक्ट्स भी दूंगा। लेकिन यह सौभाग्य मुझे उनसे परिचय के लम्बे अरसे के बाद मिला। 1997 में उन्होंने मुझे यह सुअवसर दिया और उनके प्रोजेक्ट कुमार पद्मालय के आर्किटेक्चरल वर्क के लिए उन्होंने मुझे बुलाया। प्रारंभिक मीटिंग्स में ही मैं यह बात जान गया था कि इनके साथ काम करने का तरीका अलग है। पद्मालय एक मास हाउसिंग प्रोजेक्ट था। उसके लिए ड्राइंग और प्लानिंग फेज़ में मेरी विमल जी के साथ कई मीटिंग्स हुई। हर मीटिंग अपने आपमें एक कार्यशाला जैसी थी। उनकी सूक्ष्म से सूक्ष्म अंश पर ध्यान देने वाली नज़र और एंड प्रोडक्ट क्या निकलना है इसका पूर्वावलोकन बड़ा ही ज़बर्दस्त था। हमारे क्षेत्र में काम करने के मोटे तौर पर तीन तरीके होते हैं। एक पूरी स्वतंत्रता दे दी जाए और आर्किटेक्ट पर ही सब निर्णय छोड़ दिए जाएं, दूसरा बिल्कुल भी स्वतंत्रता नहीं दी जाए और पूरी प्लानिंग बिल्डर अपने ही हिसाब से करवाए और तीसरा तरीका होता है कि बिल्डर एक बार अपना बिज़नेस एंगल और अपने अनुभव के आधार पर जो चाहिए वह आर्किटेक्ट को बता दे तत्पश्चात सब कुछ आर्किटेक्ट के विवेक पर छोड़ दें। विमल जी का काम करने का तरीका तीसरा वाला था।

प्रारंभ में मैं इस प्रकार के काम का अभ्यस्त नहीं था इसलिए कई बार उन्हें मज़ाक में कह भी दिया करता था कि ‘‘शेठ आप आर्किटेक्ट के लिए केवल इतनी गुनजाइश छोड़ते हैं कि वह ड्राइंग में सिर्फ अपना नाम टाइप कर साइन कर दे।’’ लेकिन बाद में मुझे यह तरीका जमने लगा। एक बार अपने अनुसार पूरी समझाइश देने के बाद वे टेक्निकल व्यक्ति को उसकी क्रिएटिविटी दिखाने का पूरा मौका देते थे। उनके पास विराट अनुभव था और यही उनकी तीव्र समृद्धि का कारण था। अपने पास उपलब्ध संसाधनों का भरपूर इस्तेमाल करते हुए ग्राहकों को इष्टतम उत्पाद देना, यह उनकी विषेशता थी। यही कारण है कि आज आप कुमार समूह के किसी भी प्रोजेक्ट को देखें तो पाएंगे कि वहां पर उसे इस्तेमाल करने वाले ग्राहक की हर सुविधा को पर्याप्त महत्व दिया गया है। न कम, न अधिक, जितना आवश्यक है उतना ही। यह कला बड़ी ही मुश्किल से आती है और विमल जी इसमें माहिर थे। पद्मालय के बाद भी एक लम्बे अंतराल तक हमने कोई काम नहीं किया।

उसके बाद कुमार पाल्म्स प्रोजेक्ट के लिए उन्होंने फिर से मुझे अवसर दिया। कुमार पाल्म्स के लिए हमने एक अद्‌वितीय प्लान बनाकर उन्हें दिखाया। इस प्लान के अनुसार हर फ्लेट में लिविंग रूम को टेरेस आ रही थी। इसके लिए हमने काफी डीटेल्ड स्टडी कर प्रोजेक्ट तैयार किया। हांलांकि इस प्रकार की डिज़ाइन के अनुसार कंस्ट्रक्शन कॉस्ट आम प्रोजेक्ट्स के मुकाबले थोड़ी ज़्यादा आ रही थी लेकिन सेलिंग पॉइंट ऑफ व्यू से यह एक अद्भुत प्रयोग था। यह विमल जी की ही निगाह थी कि उन्होंने प्रोजेक्ट की महत्ता को देखते हुए बढ़ी हुई कंस्ट्रक्शन कॉस्ट के बावज़ूद उस डिज़ाइन को फाइनल किया।

उसके बाद मैंने समूह के लिए कुमार सुरभि, मोहननगर, वारजे तथा मॉडल कॉलोनी स्थित प्रोजेक्ट्स का काम भी किया। एक सबसे बड़ा अंतर जो इस समूह के साथ काम करने के दौरान मैंने महसूस किया वह यह था कि कभी भी कंसल्टेशन फीस को लेकर कोई अव्यवसायिक रवैया मुझे देखने को नहीं मिला। वे गुण की कद्र करते थे और गुणी व्यक्ति उसकी पर्याप्त कीमत भी देते थे। उनकी दुःखद मृत्यु के दो ही दिनों पूर्व मैं उनसे मोहननगर प्लान को लेकर मिला था। मेरे साथ मेरी टीम के दो सदस्य और थे। हम लोगों ने करीब 3 घंटे तक चर्चा की और प्लान फाइनल किया। बाहर निकलने पर मेरे साथ आए दोनों व्यक्ति बोले कि इनके बारे में अब तक जितना सुना था उससे कहीं ज़्यादा पाया है। इतने बड़े समूह के मुखिया और व्यवहार में लेशमात्र भी अहं नहीं, यह उनकी ख़ूबी थी।

अभय छाजेड़

अभय छाजेड़

1985 में यूथ कॉंग्रेस के माध्यम से राजनीति में पूरी तरह से सक्रिय होने के पहले मैं वकालत किया करता था। कोर्ट में और समाज के कार्यक्रमों में अक्सर विमल जी से मुलाक़ात होती रहती थी। यूं मेरी और मनीष की भी दोस्ती रही है क्योंकि हम दोनों को ही खेलों का बड़ा शौक रहा है। 1991 में राजीव गांधी जी की मृत्यु के बाद मैं उनकी स्मृति में एक बेडमिंटन टूर्नामेंट आयोजित करवाता था। एक बार उनसे मुलाक़ात में मैंने ज़िक्र किया और उस टूर्नामेंट को कुमार समूह के नाम से आयोजित करवाने का अनुरोध किया। उन्होने सहर्ष उसे स्वीकार किया और उसके बाद करीब 12 साल तक टूर्नामेंट आयोजित होता रहा। आयोजन को लेकर उनका उत्साह देखते ही बनता था और खेल में नए टैलंट को बढ़ावा देने में भी उन्हे बढ़ी खुशी मिलती।

इसके साथ ही समाज के हर काम में भी वे बड़े सक्रिय रहते थे और दादावाड़ी, जैन मंदिर, अहिंसा भवन जैसी सामाजिक भवनों के निर्माण में उन्होने सक्रिय योगदान दिया और अपना पूरा समय, प्रयास और विशेषज्ञता उसमें लगाई। हालांकि मेरा राजनीतिक झुकाव होने के बावजूद भी कभी भी ऐसा कोई मौका नहीं आया जब उन्होने मुझे कोई फ़ेवर करने का कहा हो। वे इन चीजों के सख्त खिलाफ थे। मेरा और उनका जुड़ाव राजनीतिक था ही नहीं। कार्पोरेशन में उनका बड़ा सम्मान था। आमतौर पर बिल्डर्स को लोग शक की निगाहों से ही देखते हैं लेकिन विमल जी इस मामले में सबसे अलहदा थे।

शहर की राजनीति में सक्रिय होने की वजह से शहर के विकास कार्यों को लेकर मैं कई बार खुद उनसे मिलने जाता और चर्चा करता था। उनका नज़रिया और अनुभव बहुत ही शानदार था और शहर के डीपी को लेकर उनके कई सुझाव हमने आज़माये और अपनाए भी हैं। वे प्रक्रिया को सरल करने को लेकर बहुत ही चिंतातुर रहते थे। उनका कहना था कि कोई भी सरकारी काम जनता के लिए बोझ और परेशानी का सबब नहीं बनना चाहिए।

समाजसेवा और बच्चों के शिक्षण को लेकर उन्होने जो कार्य किए उनकी जितनी सराहना की जाए कम है। कई धर्मार्थ संस्थानों से वे प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से जुड़े हुए थे। उनके नेतृत्व में कई संस्थाओं ने जनसेवा के कई सराहनीय कार्य सम्पन्न किए हैं और अभी भी कर रहे हैं। हॉर्टिकल्चर और बायोटेक्नालजी में रुचि लेकर उन्होने एक नई कंपनी खोली और मनीष आज सफलतापूर्वक उसकी बागडोर सम्हाल रहे हैं। मेरे उनके व्यावसायिक संबंध कभी नहीं रहे लेकिन पारिवारिक रूप से हम जुड़े हुए हैं। हम दोनों के परिवारों का एक दूसरे के यहाँ काफी आना-जाना लगा रहता है।

उन्होने कभी भी अपने पद व प्रतिष्ठा का बेवजह दिखावा नहीं किया और न ही कभी उसका फायदा उठाने की कोशिश की। इस ऊंचाई पर रहकर भी सादगी बनाए रखने की कला उनसे सीखने लायक थी। उनसे मेरी अंतिम मुलाक़ात मृत्यु से लगभग 20 दिन पूर्व हुई थी। उन्होने दादावाड़ी मंदिर के संबंध में कुछ चर्चा करने के लिए मुझे बुलाया था। उनकी अंतिम यात्रा में मैं भारी मन से शामिल हुआ और जो जनज्वार उस दिन उमड़ा था उसे देखकर उनके प्रति मन में सम्मान और बढ़ गया। एक सुधारक, अच्छे बिल्डर, बेहद ही उमड़ा व्यक्तित्व के रूप में यह शहर हमेशा उन्हें याद करता रहेगा।

कार्य ही सफलता
की बुनियाद है ॥

भंवर संघवी

विमल कुमार जी और परिवार से हमारे सम्बन्ध काफी पुराने हैं। मेरे पिताजी तथा सेठजी (केसरीमलजी), दोनों का प्राइवेट मनीलेंडिंग का व्यवसाय था। इसके साथ ही एक ही समाज से होने के कारण दोनों ही परिवारों में बहुत घनिष्ठता है। लेकिन मेरी उनसे करीबी पहचान सन 2000 के बाद हुई। हम 30-35 परिवारों का एक ग्रुप है, जिसके तहत हम लोग भारत में तथा भारत से बाहर एक साथ घूमने जाते हैं। विमल जी के साथ पहला टूर मैंने यूरोप का किया था। भाभी, विमल भाई, मैं, मेरी पत्नी तथा 14 अन्य कपल्स के साथ हम लोग यूरोप के टूर पर गए थे। उस टूर पर मैंने जाना कि विमल भाई कितने ज्ञानी हैं तथा उनकी विचारधारा कितनी उच्च कोटि की है। इसके साथ ही उनके हेल्पिंग नेचर से भी मैं बहुत प्रभावित हुआ। टूर के दौरान हर छोटी से छोटी चीज़ का वे पूरा ध्यान रखते थे। उनके साथ सफर करना अपने आप में एक सुखद अनुभव होता था। न सिर्फ टूर के दौरान बल्कि उससे पहले भी कहां जाना है, कहां ठहरना है, भोजन का मेन्यू क्या होगा जैसी हर चीज़ की प्रीप्लानिंग करने के लिए वे मेरे ऑफिस आते थे तथा सारी चीज़ें इंटरनेट पर स्टडी करके फाइनल करते थे।

भारत में हम लोग मुख्य रूप से जैन तीर्थों की यात्राओं पर जाया करते थे। जैन धर्म तथा उसकी शिक्षाओं के वे परम समर्थक तथा पालन करने वाले थे। यहां तक कि हमारी विदेश यात्राओं में भी वे प्लानिंग करके एक न एक जैन मंदिर की यात्रा करते ही थे। गिरनार ग्रुप के सदस्यों के सभी परिवारों के आपस में अच्छे सम्बन्ध हो गए हैं। विमल भाई सभी सदस्यों के सुख-दुख में शामिल होने के लिए चाहे जैसे भी हो समय निकाल ही लेते थे। विमल भाई क्रिकेट के भी बहुत शौकीन थे। किसी भी महत्वपूर्ण क्रिकेट टूर्नामेंट के दौरान वे अपने बंगले पर सबको बुलाते और साथ में मैच देखते थे। मैच के दौरान तथा मैच के बाद साथ में ही खाना-पीना, इसका उन्हें बड़ा शौक था। 2011 वर्ल्डकप का सेमीफाइनल, जिसमें भारत ने पाकिस्तान को हराया था, हमने उनके घर पर ही देखा था। उन्हें मेहमाननवाज़ी तथा खातिरदारी करने का बड़ा शौक था।

हमने साथ में यूरोप, साउथ अफ्रीका, स्केन्डिनेवियन देश, अमेरिका, साउथ एशियन देश तथा अन्य जगहों की यात्रा की। हर एक यात्रा में विमल भाई हमारे साथ थे। वे समय के बड़े पाबन्द थे। हमारी यात्राओं के दौरान सारा मैनेजमेंट उन्हीं के जिम्मे रहता था तथा वे बड़े ही बेहतरीन ढंग से सारी ग्रुप एक्टिविटीज़ को मैनेज करते। मुझे अपने रियल इस्टेट कंसल्टेशन के व्यवसाय को स्थापित करने में विमल भाई से बड़ी मदद मिली। वे हमेशा नई आने वाली अच्छी प्रॉपर्टीज़, ज़मीनें तथा मार्केट की स्थिति आदि के बारे में जानकारी दिया करते थे जिससे कि मुझे आगे बढ़ने में बहुत मदद मिली। वे हमेशा चाहते थे कि उनकी समृद्धि के साथ ही साथ जो लोग उनसे जुड़े हैं, वे भी समृद्ध बनें। रियल इस्टेट मार्केट में उनका नाम बड़े आदर के साथ लिया जाता है। वे अपने ग्राहकों के लिए पूरी तरह से समर्पित थे। कुमार समूह इतना कस्टमर फ्रेंडली है कि उनके लिए हम रियल इस्टेट एजेंट आंख मूंदकर किसी भी प्रकार का आश्वासन अपने ग्राहकों को दे देते थे। इस क्षेत्र में ग्राहकों को आमतौर पर होने वाली परेशानियां जैसे कॉस्ट एस्केलेशन, समय पर पजेशन नहीं और धोखाधड़ी का कुमार समूह में कोई स्थान नहीं है। चूंकि विमल भाई खुद ईमानदारी को सबसे उपर रखते थे इसलिए आज समूह भी उनके आदर्शों को मानकर चल रहा है। उनके साथ मेरी आखिरी मुलाकात में हम दोनों स्पेन जाने का कार्यक्रम बना रहे थे। पिछले वर्ष उनकी दुःखद मृत्यु के बाद से गिरनार ग्रुप का कोई विदेश भ्रमण नहीं हुआ है। उनके अवसान के बाद हमने अपने एक अन्य साथी मिलाप रांका को भी खो दिया है। इन दोनों साथियों की कमी हम अपने हर आने वाले टूर पर महसूस करेंगे। टूर पर होने वाली हर एक्टिविटी और उसमें उनका बढ़-चढ़ कर हिस्सा लेना एक यादगार है।

भंवर संघवी

अशोक शांतिलाल जैन

विमल जी के भोपला चैक वाले घर के नज़दीक वर्मा ज्वेलर्स है। उसके मालिक वर्मा जी की मेरे पिताजी शांतिलाल जी जैन से अच्छी पहचान थी तथा वे अक्सर वहां जाते रहते थे। वहीं पर पिताजी की तथा श्री केसरीमलजी ओसवाल की पहचान हुई तथा बाद में हमारे पारिवारिक सम्बन्ध स्थापित हो गए। यह तकरीबन 1979-80 की बात है। भिक्षु ग्रेनमार्ट की स्थापना उस समय नहीं हुई थी। पिताजी ने 1982 में मार्बल का व्यवसाय प्रारंभ किया तथा श्री केसरीमलजी से तथा विमल जी से इसके लिए चर्चा की। उस समय विमल जी कुमार कॉर्नर प्रोजेक्ट पर काम कर रहे थे। उस प्रोजेक्ट में अपने ख़ुद के फ्लेट के लिए उन्होंने भिक्षु ग्रेनमार्ट को ही मार्बल का ऑर्डर दिया। इस तरह से हमारा व्यावसायिक असोसिएशन भी प्रारंभ हुआ। प्रारंभ से ही वे व्यवसाय में पूर्णतः पारदर्शी रहे। इसके साथ ही मैं उनकी गुणवत्ता की कद्र करने के गुण से बहुत प्रभावित हुआ। वे कहते थे कि ''आप लोगों को कम गुणवत्ता का उत्पाद देकर धोखा दे सकते हैं लेकिन यह ख़ुद को धोखा देने के बराबर है।''

निर्माण व्यवसाय में लगने वाले सभी उत्पादों के विषय में उनकी गहरी पैठ थी तथा सभी मायनों में वे उच्च गुणवत्ता के प्रोडक्ट्स ही इस्तेमाल करते थे। उनके लिए व्यवसाय में ईमानदारी सर्वोपरि थी तथा इसी के दम पर कुमार समूह ने एक सबसे बड़ी नेमत जो हासिल की है वह है अपने ग्राहकों का विश्वास। सप्लायर्स, वेंडर्स के साथ उनकी डीलिंग्स प्रोफेशनल थी तथा किसी भी प्रकार की दिक्कत उनके साथ व्यवसाय करने में हमें न अब तक आई है और मुझे पूरा भरोसा है कि आगे भी नहीं आएगी। उनके साथ मेल-मुलाकातों का दौर लगा रहता था। जैन समाज के किसी भी कार्यक्रम में उन्हें बढ-चढ़कर हिस्सा लेते हुए देखना एक अलग ही अनुभव होता था। इसके साथ ही जिन दर्शन, स्पिरिचुअल टीचिंग्स, वास्तु आदि विषयों पर उनसे चर्चा करना हमेशा ही जानकारीपरक और सुखद होता था।

हमने साथ में कई तीर्थस्थलों की यात्रा की है। पालीताना, नागेश्वर तथा राजस्थान के अन्य मंदिरों की यात्रा में मैं उनके साथ गया था जहां पर बहुत सा वक्त उनके साथ बातें करने में बिताया और उन्हें तथा उनके विचारों को उसी दौर में मैंने बेहतर ढंग से पहचाना। मेरी उनसे सैकड़ों मुलाकातें हुई होंगी, लेकिन शायद ही कभी मैंने उनके चेहरे पर परेशानी के भाव देखे हों। सबके प्रति सकारात्मक सोच रखना और सबके भले की कामना करना, यह उनकी पहचान थी। हैरत की बात नहीं है कि आज तक मैंने पीठ पीछे उनकी बुराई करने वाला कोई नहीं देखा। आज वे भौतिक रूप से हमारे बीच में उपस्थित नहीं है लेकिन फिर भी अपनी दिनचर्या में कोई न कोई तो मौका ऐसा आता है जब उन्हें आप याद कर सकते हैं। निर्णय लेने की उनकी अद्भुत क्षमता के बल पर उन्होंने कुमार प्रॉपर्टीज़ का इतना विशाल परिवार इतनी सक्षमता से संवारा और सम्हाला है जिसका कोई सानी नहीं है।

अशोक शांतिलाल

ब्रह्म प्रकाश गौड़

श्री विमल जैन से मेरी मुलाकात सन् 1994 में हुई। उन दिनों मेरी तैनाती पुणे में हुई थी। मैं पुणे में एक घर खरीदने की फिराक में था। किसी विभागीय सहकर्मी ने श्री विमल जैन से परिचय करा दिया। उन्हीं के माध्यम से घर खरीदा गया। मैंने अपनी आर्थिक स्थिति को आँक कर एक फ्लैट तय किया था। यह इतना छोटा था कि कालान्तर में मेरे परिवार के लिए पूरा न पड़ता। इसलिए, विमलजी ने पास की सोसाइटी में, जहाँ अपेक्षाकृत बड़े फ्लैट थे, जाने पर जोर दिया। अंतर अधिक न था। पर, मैंने पैसों की कमी की मजबूरी जाहिर की। वे बोले, “घर कहाँ रोज-रोज लेते हैं। अपनी हैसियत से थोड़ा बढ़ कर ही लेना चाहिए। जैसे-जैसे समय बीतता है, पैसों का जुगाड़ हो जाता है।”

मेरी हिम्मत न पड़ी, मैंने ना कर दिया। उन्होंने बेबाकी से कहा, ”आप गलती कर रहे हैं। कुछ दिनों में ही आपको इसका अहसास हो जाएगा।” बात सच निकली। दो-तीन महीनों में ही मुझे लगा कि मैं वह दूसरा बड़ा फ्लैट ले सकूँगा। मैंने विमल जी से चर्चा की। उन्होंने पता कर कहा, “अब नहीं होगा। आप चूक गए। उस सोसाइटी में सारे फ्लैट बिक गए।” घर खरीदते समय विमलजी की जिस बात ने मुझे बहुत आकृष्ट किया, वह थी उनकी बेबाकी।

घर खरीदने के बहाने से हमारा परिचय हो गया। ऑफिस के सिलसिले से मेरा वास्ता विमलजी से कभी न पड़ा। पर, दूसरी बातें हमें करीब ले आईं। मुझे अध्यात्म में रुचि थी, विमलजी को धार्मिक शिक्षाओं व मंदिरों के वास्तु में महारत हासिल थी। हम दोनों एक ही जगह योगाभ्यास के लिए जाते थे। अतः,कई वर्षों तक सप्ताह में दो दिन मिलना होता रहा। इन बातों के चलते मेल-जोल का एक सिलसिला शुरू हो गया।

कब औपचारिकता प्रगाढ़ आत्मीयता में बदल गई पता ही नहीं चला। श्री विमल जैन के लिए मेरा संबोधन “विमल भाई” में बदल गया। उनका नाम जिह्वा पर आते ही, प्रेम से भीगी अनेक मीठी स्मृतियाँ मन में आप ही आप उठ खड़ी होती हैं। इस आलेख में दो-तीन ऐसी घटनाओं का जिक्र करना आवश्यक समझता हूँ जो मेरे और विमल भाई के व्यक्तिगत संबधों की मार्फत उनके चरित्र की कुछ विलक्षण विशेषताओं पर प्रकाश डालती हैं।

1997 में प्रमोशन पर पुणे से मेरा ट्रान्सफर कोल्हापुर हो गया। बेटे की शिक्षा के कारण से मेरे परिवार को पुणे में ही रहना पड़ा। एक समय आया जब ट्रान्सफर के आठ महीने बीत रहे थे। पुणे के सरकारी आवास को खाली करने की मियाद निकट थी। जो फ्लैट मैंने पुणे में ले रखा था, वह तो बहुत छोटा था। मैं इसी उधेड़-बुन में था कि परिवार को कहाँ शिफ्ट करूँ। एक दिन विमल भाई से मुलाकात हुई। बातों-बातों में उन्होंने पूछा कि परिवार कहाँ रहेगा। मैंने अपने फ्लैट का जिक्र किया। इस पर उन्होंने कहा कि वह छोटा है वहां आपका परिवार नहीं रह पाएगा अतः उन्होंने एक ऐसा फ्लैट बताया, जो अभी बिका न था और हमारी जरूरतों के अनुरूप था। मेरा परिवार वहाँ रहने लगा। सबसे बड़ी बात यह थी कि वहाँ पड़ोस में एक विभागीय अफसर रहते थे। वे बहुत सज्जन थे और उनके कारण मेरे परिवार को बहुत सहारा मिला। मुझे उम्मीद थी कि मेरा ट्रान्सफर जल्दी ही वापस पुणे हो जाएगा। पर ऐसा न हुआ। एक डेढ़ साल बाद हमने विमल भाई की मदद से ही पुराना फ्लैट निकाल कर यह फ्लैट खरीद लिया। इस प्रकार विमल भाई की भूमिका मेरे व्यक्तिगत जीवन में एक सरपरस्त या आश्रयदाता के रूप में रही।

कोल्हापुर में मेरे एक सीनियर सहकर्मी थे - शर्माजी। शर्माजी बड़े सज्जन पुरुष थे और मेरे मन में उनके लिए बहुत आदर भाव था। उनका बेटा पुणे में नौकरी करता था। वे उसके लिए एक फ्लैट खरीदना चाहते थे। उन्होंने पुणे में बहुत फ्लैट देखे पर मन कहीं जम न रहा था। इसी बीच, एक बार किसी कार्यवश विमल भाई सिर्फ दिन भर के लिए कोल्हापुर आए। दोपहर में वे मुझसे मिलने कोल्हापुर ऑफिस में आए। मैंने शर्माजी से परिचय करा दिया। इस प्रकार शर्माजी को यह ज्ञात था कि विमल भाई मेरे मित्र हैं। विमल भाई को भी शर्माजी से मिल कर बहुत अच्छा लगा था।

एक सप्ताहान्त, शर्मा जी पुणे में थे। मैं भी अपने परिवार के पास था। उन्होंने फोन कर मुझे पूछा कि क्या वे कुमार ग्रुप के कुछ प्रोजेक्ट्स देख सकेंगे। मैंने विमल भाई से पूछा। उन्होंने अपना एक आदमी साथ कर दिया। मैं भी शर्माजी और उनकी पत्नी के साथ गया। हमने कई प्रोजेक्ट्स देखे। उनमें अनेक फ्लैट थे जो खरीदे जा सकते थे। पर एक प्रोजेक्ट ऐसा था जिसका एक फ्लैट हमें बहुत पसंद आया। यह प्रोजेक्ट लगभग कम्पलीट था और शर्माजी के बेटे के ऑफिस के बहुत निकट था। प्रोजेक्ट की आखरी बिल्डिंग बन कर तैयार होने थी। महीने दो महीने का ही काम बाकी था। उसमें भी सिर्फ एक ही फ्लैट बिकने को रह गया था। वह शर्माजी के बेटे को मिल सकता था। हमने बाहर-बाहर उस फ्लैट की कीमत पता की। शर्मा जी ने जिस कीमत का अनुमान कर उसकी व्यवस्था कर रखी थी, उससे यह कीमत कुछ ज़्यादा ही थी। पर, हमने सोचा कि यदि यह न बन सकेगा तो फिर दूसरे फ्लैट के लिए हाँ कर देंगे।

हम विमल भाई के पास आए। उन्होंने पूछा कि क्या पसंद आया। डरते-डरते शर्माजी ने उनसे अपने मन की इच्छा बताई। विमल भाई ने एक क्षण न लिया। एक ऐसी रकम बताई जो शर्माजी के अनुमान से थोड़ी ही ज़्यादा थी। शर्माजी ने तुरंत हामी भर दी। विमल भाई ने कहा, “एग्रीमेन्ट इससे पचास हजार रूपये कम का होगा। आप पचास हजार रूपए का ड्राफ़्ट अलग से दे दीजिएगा। यह रकम सोसाइटी चार्ज आदि के लिए होगी।” बस डील पक्की हो गई। दो महीने में बेटे को फ्लैट मिल जाएगा, इसलिए शर्माजी में फटाफट पैसों का इन्तजाम कर पेमेन्ट की व्यवस्था कर दी। वे मुझे बताते रहते थे। एग्रीमेन्ट एमाउन्ट का पेमेन्ट हो गया।

अंत में वह दिन भी आया जब शर्मा जी का बेटा सोसाइटी चार्ज के पचास हजार रूपयों का ड्राफ्ट देने को गया। केवल भाई (विमल भाई के आज्ञाकारी कनिष्ठ भ्राता) ने उसे यह कह कर लौटा दिया कि अब और कोई पेमेन्ट नहीं चाहिए। बेटे ने बाहर निकल कर शर्माजी को फोन पर सूचित किया। शर्मा जी के लिए यह सर्वथा अप्रत्याशित था, कुछ-कुछ दिक्क़त तलब भी। इस ड्राफ्ट को बनवाने के लिए किसी रिश्तेदार ने पैसे दिए थे। एक बार उन्हें पैसे वापस कर दिए गए, तो दोबारा माँगने में बहुत दुविधा होती।

शर्माजी ने मुझे सूचित किया। मैने उनके सामने ही विमल भाई को फोन किया और बताया कि केवल भाई अभी पचास हजार का ड्राफ्ट नहीं ले रहे हैं। यह भी पूछा कि क्या बाद में लेंगे। विमल भाई ने तुरंत कहा, “नहीं, बाद में क्यों, कभी नहीं लेंगे। मैंने ही केवल को बोल दिया है कि बाकी पचास हजार रूपए नहीं लेना है।” इसका कारण उन्होंने बताया कि उन्होंने एग्रीमेंट अमाउंट का पेमेंट तय समय में कर दिया इसलिए अब बाकी का पैसा मैं न अभी लूंगा और न ही भविष्य में।

पचास हजार रुपये कुमार ग्रुप के लिए बड़ी बात भले न हो। पर, शर्माजी नौकरी-पेशा आदमी थे। अच्छी-खासी छूट तो पहले ही मिल गई थी। अब ऊपर से पचास हजार और कम हो गए। रिश्तेदार के कर्ज से मुक्ति हो रही थी। शर्माजी के लिए निःसंदेह यह एक बड़ी छूट थी। जिस आमदनी की प्राप्ति में कोई संदेह न हो, उसे कोई इस प्रकार से छोड़ दे, तो उस व्यक्ति की सदाशयता में कोई शक-शुबहे की गुंजाइश नहीं रह जाती है। मैं और शर्माजी दोनों मन ही मन विमल भाई के प्रति एक अनिर्वचनीय कृतज्ञता भाव से भर गए।

कुछ वर्ष बाद की बात है। मैं अभी कोल्हापुर में था। पुणे में पदासीन, एक अन्य विभागीय सीनियर ने भी पुणे में घर खरीदने का मन बनाया था। एक दिन उनसे मुलाकात हुई तो उन्होंने कहा कि मैं उनकी कुछ मदद करूँ। मेरी जान-पहचान का दायरा तो विमल भाई पर ही शुरू और खत्म होता था। फिर मैंने उनको ही कहा। उन्होंने कई प्रोजेक्ट्स के ब्रोशर भेज दिए। कई शनिवार मैंने घूम घूम कर सारे घर देखे। सीनियर को बताया भी। पर, वे हाँ ना कुछ न बोलते थे। मैं थोड़ा आजिज हो रहा था। एक दिन इत्तफाकन विमल भाई से मुलाकात हो गई। बातों-बातों में इन सीनियर का जिक्र आया। उन्होंने बताया कि ये सीनियर अपने कई मातहतों को इस काम में लगा चुके हैं तथा आप नाहक ही इनके लिए परेशान हो रहे हैं। आप इसमें बीच में न पड़ें उन्हें अगर लेना होगा तो मैं दे दूंगा लेकिन कुछ ऊँच-नीच हुई तो आपके बीच में होने पर ख्वामखाह आप दुखी होंगे तथा हो सकता है कि मेरे पास किसी अन्य ग्राहक को न लाएं। मैं आपसे आजीवन सम्बन्ध चाहता हूं, इसीलिए चाहता हूं कि आप शर्मा जी जैसे ग्राहकों को लाएं और मुझे विश्वास है कि उन जैसे सज्जनों की आपके सहयोगियों में कमी नहीं है। उनकी स्नेह में पगी बातें सुनकर मैं भावविभोर हो गया तथा

विमल भाई के सुझाव में मेरे प्रति प्रेम का जो मंतव्य था, मैं उसका कायल हो गया। उन्होंने मेरे हृदय में अपनी पैठ और भी गहरी कर ली थी। अवरुद्ध कंठ से धन्यवाद करते हुए मैंने उनसे विदा ली। कहना न होगा कि यथोक्त क्षमा-याचना करते हुए उन सीनियर से, जहाँ तक उनके फ्लैट की खरीद का प्रश्न था, मैंने अपना पल्ला छुड़ा लिया।

विमल भाई के स्नेह-सिक्त शब्द - ‘‘मैं आपसे आजीवन संबंध चाहता हूँ’’ - मेरे इस जीवन की एक अमूल्य निधि हैं। आज वे सदेह इस जगत में नहीं हैं। पर, उनको मेरा सप्रेम नमन, शुभकामनाएँ व आशीर्वाद।

अशोक बेहरे

अशोक बेहरे

निर्माण व्यवसाय एक ऐसा क्षेत्र है जहां पर साख कायम करने में वर्षों लग जाते हैं और उसे बनाए रखने के लिए बहुत प्रयास करते रहना पड़ते हैं। इस व्यवसाय में पुणे शहर में विमल जी ने जो मिसाल कायम की है वह बहुत ही सराहनीय है। मेरा उनका परिचय 1976 से है। वे आर्किटेक्ट रामकुमार राठी के माध्यम से एक ज़मीन का प्रस्ताव लेकर मुझसे मिलने आए थे। ज़मीन शिवाजीनगर में थी और उसके कागजात देखने पर पता चला कि वह पर्डी ज़मीन है। मैं उसे खरीदने के लिए तैयार नहीं था लेकिन राठी जी ने मुझसे कहा कि तुम्हें पसंद नहीं हो तो मेरे लिए ही लेकर रख लो। खैर, वह ज़मीन मैंने ली और तब से हम दोनों एक दूसरे के संपर्क में आए।

मेरी कंपनी विश्वामित्र एंड संस थी। राठी जी और विमल जी के साथ मिलकर हम तीनों ने कुबेरा (KUBERA, Kumar, Behrey, Rathi) के नाम से पार्टनर्शिप फ़र्म की स्थापना की। यह 1979 की बात है। मुझे यह कहते हुए बहुत गर्व है कि उसके बाद के 25 वर्षों तक कुबेरा समूह ने आधुनिक पुणे की नीव रखी और शहर की हर दिशा में कई प्रोजेक्ट्स किए। वे सभी प्रोजेक्ट्स आज अपनी गुणवत्ता की वजह से बेंचमार्क बने हुए हैं।

वे बहुत ही मृदु भाषी थे और उनका दिल बहुत बड़ा था। वे स्वभाव से दयालु और मिलनसार थे। अपने इन्हीं गुणों की बदौलत उन्होने निर्माण उद्योग के लिए सर्वश्रेष्ठ मानदंड स्थापित किए। उन्होने और हमने साथ में, और उन्होने अकेले भी जो भी प्रोजेक्ट्स किए उनमें खास बात यह रही कि हमने जिस कीमत पर ग्राहक से बुकिंग ली और कमिट किया, उसी कीमत पर पज़ेशन भी दिया। फिर भले ही निर्माण के दौरान लागत बढ़ भी जाये, लेकिन ग्राहकों तक कभी उसका प्रभाव आने नहीं दिया।

मैं और राठी जी, हम दोनों ही उनसे बड़े थे। उन्होने हमेशा हमें उसी तरह से मान दिया। बड़ों को मान देना और छोटों को स्नेह देना, यह उनका एक और अच्छा गुण था। जब भी कभी कन्स्ट्रक्शन हाउस आते, बड़ी ही विनम्रता से हमसे और पूरे स्टाफ से मिलते और सबके हालचाल लेते। अपने बच्चों को भी उन्होने अच्छी परवरिश दी और वे भी उनके बनाए सम्बन्धों को उसी सम्मान से निभा रहे हैं। शिवाजी नगर में उनके साथ किए पहले प्रोजेक्ट से लेकर कुबेरा समूह के आखिरी प्रोजेक्ट तक कभी भी किसी भी प्रकार का विवाद हम लोगों में नहीं हुआ। इसका प्रमुख कारण रहा कि वे अपनी तरफ से ऐसी कोई गुंजाइश छोड़ते ही नहीं थे कि कोई भी परेशानी आए। वे भले ही इंजीनियर न रहे हों, लेकिन प्रोजेक्ट के एक्ज़ीक्यूशन और ड्राइंग आदि का उन्हे गहरा ज्ञान था। अक्सर साइट से संबन्धित हर मामले को वही सुलझाते और निगाह रखते थे।

उनकी मृत्यु से कुछ दिन पहले ही 21 मई को मेरे बेटे की साइट पर भूमिपूजन के लिए आए थे और उसे बहुत प्रोत्साहित भी किया था। वही मेरी उनसे आखिरी मुलाक़ात थी। उनकी मृत्यु की खबर एक गहरे सदमे की तरह मिली। मैंने एक छोटा भाई, स्नेही और परिजन खोया है और इसकी क्षतिपूर्ति असंभव है।

व्यक्ति अपने
कार्य से महान
होता है अपने
जन्म से नहीं ।।

आर्किटेक्ट बुटाला

सन् 1969 या 70 की बात है। मेरे बड़े भाई उल्लास एवं पिताजी का आइरन व स्टील फेब्रीकेशन का व्यापार था। सोमवार पेठ में हमारा वर्कशॉप हुआ करता था। कुमार प्रापर्टीज़ की स्थापना हुए तीन-चार साल ही हुए थे। पिताजी की पुरानी पहचान केसरीमलजी से होने के कारण हम कुमार प्रापर्टीज़ का फेब्रीकेशन जॉब किया करते थे। मैं उस दौरान अभिनव कॉलेज से अपनी बैचरल ऑफ आर्कीटेक्चर की डिग्री कर रहा था। कभी-कभी मैं भी वर्कशॉप पर जाया करता था। उस समय काम के ही सिलसिले में विमल भाई का भी हमारे वर्कशॉप में आना-जाना लगा रहता था। उनसे प्रारंभिक पहचान तभी हुई थी। 1971 में मेरी बैचलर डिग्री तथा एक साल का प्रैक्टिस प्रोबेशन पीरियड खत्म होने के बाद मैंने आर्किटेक्ट बघेल के साथ काम शुरू किया। 1977-78 में विमल भाई ने आर्किटेक्ट रामकुमार राठी के साथ मंडई गुप्तेवाड़े में एक प्रोजेक्ट शुरू किया।

यह प्रोजेक्ट मूलतः प्रारंभ जिसने किया था, उनके लिए ड्राइंग तथा अन्य सरकारी सैंक्शन वगैरह का काम मैंने किया था। उन्होंने बाद में विमल भाई तथा राठी जी को यह प्रोजेक्ट हैंडओवर कर दिया था। मैंने कुछ समय के लिए राठी जी के यहां भी नौकरी की थी। इस वजह से वे भी मुझे पहचानते थे तथा विमल भाई से भी पुरानी जान-पहचान थी। ड्राइंग पर मेरा नाम देखकर दोनों ही मुझे पहचान गए तथा मुझे बुलाया। केसरीमलजी, राठी जी तथा विमलभाई के साथ मेरी मीटिंग हुई जिसमें कि केसरीमलजी ने मुझ जैसे नए तथा कम अनुभवी आर्किटेक्ट पर अविश्वास जताया। लेकिन विमलभाई ने मुझे अवसर दिया तथा उस प्रोजेक्ट का बाद में भी सारा काम मैंने ही देखा।

तभी से मेरा कुमार समूह से जुड़ाव प्रारंभ हुआ। यह विमलभाई की सबसे बड़ी खासियत थी। वे नई पीढ़ी को अवसर देने में सदा भरोसा करते थे। मेरे लिए सौभाग्य का अवसर सिर्फ यहीं खत्म नहीं हुआ। आगे चलकर मुझे उनका पार्टनर बनने का भी अवसर मिला, लेकिन उससे पूर्व की कहानी भी अत्यंत रोचक रही। 1985-86 में आर्किटेक्ट जयंत दाढ़े एक लैण्ड डील के सिलसिले में मेरे पास आए। मैं उस समय आर्थिक रूप से बहुत अधिक सक्षम नहीं था। मैंने विमल भाई से इसके संबंध में चर्चा की तो उन्होंने मुझे आश्वस्त करते हुए कहा कि ''चिंता मत करो'', उनके यह तीन शब्द जादुई असर कर गए। उन्होंने दाढ़स बंधाया तो मैंने तथा जयंत दाढ़े ने उस ज़मीन के मालिक से आगे की औपचारिकताएं पूरी कर ज़मीन ख़रीद ली। विमलभाई का सम्बल ही काम कर गया, उनसे हमें किसी भी प्रकार की आर्थिक सहायता लेने की ज़रूरत नहीं पड़ी।

लेकिन शायद किस्मत को कुछ और मंज़ूर था। उस ज़मीन के सौदे में उसके तथाकथित मालिक ने हमारे साथ धोखाधड़ी की थी तथा फ़र्ज़ी कागज़ात बनवा कर हमें ज़मीन बेच दी थी। हम अपनी अब तक की कमाई सारी पूंजी उसमें गंवा बैठे। वह मेरे पूरे जीवन का सर्वाधिक निराशा भरा काल था। मैं पूरी तरह से हताश होकर एक बार फिर विमल भाई के पास पहुंचा। मेरी बात सुनकर उन्होंने जो कहा वह मेरे आने वाले जीवन के लिए एक बड़ी सीख बन गया। उन्होंने मुझसे कहा कि ''इसे अपनी असफलता नहीं बल्कि एक सीख की तरह से देखो और यह सोच कर फिर से सब शुरू करो जैसे यही तुम्हारे कर्मजीवन की शुरुआत है।''

उसके बाद उन्होंने मेरे तथा दाढ़े साहब के साथ पार्टनरशिप फर्म बुटाला एंड डाढ़े एसोसिएट्स की स्थापना की। चमत्कार की शुरुआत हो चुकी थी। कुछ ही वर्षों में हमारी फर्म ने उनके साथ मिलकर बिबवेवाड़ी, सहकार नगर, तिलक रोड सहित कई अन्य क्षेत्रों में विभिन्न प्रोजेक्ट किए। दरअसल वे किसी को हताश-निराश या दुखी देख ही नहीं सकते थे। वे स्वयं इतनी सकारात्मक ऊर्जा लिए हुए थे कि उनके समक्ष जाने वाला भी उससे अछूता नहीं रह सकता था। मेरे लिए वे न केवल मेरे आदर्श थे बल्कि एक बड़े भाई की तरह स्नेह रखते थे। वे मेरी गलतियों पर डांटते और उपलब्धियों पर हौंसला बढ़ाते थे।

निर्माण क्षेत्र की छोटी से छोटी बारीकी पर उनकी पैनी नज़र रहती थी तथा अक्सर ही वे अपने साथ काम करने वाले इंजीनियर, आर्किटेक्ट तथा अन्य तकनीकी पक्ष वाले लोगों के साथ अपने अनुभव साझा भी करते थे। मैं तो यहां तक कहूंगा कि उनके नेतृत्व में कुमार प्रॉपर्टीज़ एक ऐसी कार्यशाला रही जिसमें इस इंडस्ट्री के कई बेहतरीन आर्किटेक्ट, इंजीनियर तथा अन्य कुशल कर्मियों ने ट्रेनिंग ली है। उनके अनुभव तथा विराट ज्ञान के समकक्ष कोई उदाहरण पुणे शहर के निर्माण क्षेत्र में तो नहीं मिलेगा।

मकरंद पाटनकर

1990 में मेरे पिताजी ने नारायणपेठ में सिरेमिक मास्टर्स शोरूम प्रारंभ किया। उस दौर में ओरिएंट टाइल्स ने अपने उत्पाद पुणे के मार्केट में लांच किए थे और हमने उसकी पहली डिस्ट्रीब्यूटरशिप ली थी। कुमार समूह के साथ व्यवसाय 1993 में प्रारंभ हुआ। वैसे इस सिलसिले में मेरी मुलाकात पहले राजस सर से हुई थी। विमल जी से पहले मुलाकात का मौका नहीं मिला था। राजस सर को ओरिएंट के प्रोडक्ट्स पसंद आए तथा उन्होंने अपने कुछ प्रोजेक्ट्स के लिए हमें ऑर्डर दिया। नारायणपेठ में हमारे शोरूम के पास एक होटल था जिसके बटाटावड़े बहुत प्रसिद्ध हैं। एक बार मैं ऑर्डर के सिलसिले में कुमार के भवानीपेठ ऑफिस गया तो अपने साथ वे बटाटावड़े लेकर गया, उसका स्वाद राजस सर को बहुत पसंद आया तथा उन्होंने केवल जी तथा विमल जी को भी वड़े चखाए। उन्हें भी वे बहुत पसंद आए। उसके बाद से तो मैं जब भी अपॉइंटमेंट के लिए फोन करता तो वे याद दिलाना न भूलते कि वड़े लेकर जाना है। इसके साथ ही विमल जी को मुझसे गाना सुनने का बड़ा शौक था। मैं किशोर कुमार साहब का बड़ा फैन हूं तथा उनके बेटे अमित कुमार के साथ जुड़ा हुआ हूं। हम किशोर दा के कंसर्ट्स करने के लिए पूरे विश्व में साथ में कई जगह गए हैं। अक्सर हमारी छोटी सी भी मुलाकात हो तो भी वे चार लाइनें ही सही लेकिन सुनते ज़रूर थे और भरपूर तारीफ भी करते थे। इस समूह के इतने आगे बढ़ने का कारण मेरी नज़र में यह है कि परिवार के सभी लोग एक ही व्यवसाय में हैं और सभी को इस क्षेत्र में गहरा ज्ञान है। पूरा परिवार बेहद शिक्षित और तकनीकी रूप से दक्ष है। इसके साथ ही विमल जी के विजन ने समूह के आगे भी बढ़ाया और प्रसिद्धि भी दी। लोगों का विश्वास आज जो कुमार समूह के प्रति बना है उसके पीछे मेरे विचार में विमल जी की नीतियां और उनकी ईमानदारी ही है। यहां तक कि सप्लायर्स को भी उन पर इतना भरोसा है कि आज भी मुझे ऑर्डर फैक्स से आता है और चाहे कितना भी बड़ा ऑर्डर हो इस समूह को सप्लाय करने में हम कभी नहीं हिचकते। पुणे के बिल्डरों में ऐसी पार्टी नहीं देखी है और मैं अपने आप को खुशनसीब समझता हूं कि इतने बड़े समूह के साथ मुझे जुड़ने का मौका मिला।

मकरंद पाटनकर

दत्ताजी गायकवाड़

दत्ताजी गायकवाड़

श्री विमल कुमार जैन तथा कुमार समूह के साथ ही मेरा निर्माण व्यवसाय में पदार्पण हुआ था। मैं उससे पूर्व बीयू भण्डारी समूह के साथ उनके ऑटोमोबाइल व्यवसाय में एक पार्टनर के रूप में संलग्न था। मैं निर्माण व्यवसाय के प्रति उस समय न तो आकृष्ट रहा और न ही कभी इसे अपनाने के बारे में मैंने सोचा था। राजनीति, ऑटोमोबाइल व्यवसाय आदि में ही मैं अत्यधिक व्यस्त था। विमल जी से मिलना भी संयोगवश ही हो पाया। मेरी बहन की एक ज़मीन का सौदा कुमार समूह के साथ हुआ। उसकी औपचारिकताएं पूरी करने के लिए वह एडवोकेट वैद्य के यहां गई थी और वहीं पर विमल जी भी आए हुए थे। चूंकि वह अकेली रहती है अतः उसने कागज़ी कार्रवाई आदि को देखने के लिए मुझे भी उन्हीं के यहां बुलाया। वहां पर हमारी पहली मुलाकात हुई। सामान्य बातचीत में जब उन्हें मेरे बारे में मैंने बताया तो वे बड़े प्रभावित हुए तथा मेरे सामने इस ज़मीन के निर्माण तथा विकास में पार्टनर बनने का प्रस्ताव रखा।

मैं अपने व्यवसाय तथा सामाजिक जीवन में अत्यधिक व्यस्त था अतः मैंने प्रारंभ में उन्हें मना कर दिया। थोड़े दिनों के बाद वे मेरे एक मित्र आर्किटेक्ट रामकुमार राठी, जो कि उनके भी करीबी परिचित थे, के माध्यम से मुझसे मिलने आए तथा पार्टनरशिप का अपना प्रस्ताव दोहराया। राठी जी उस वक्त कुमार ग्रुप से जुड़े हुए थे तथा उनके कई प्रोजेक्ट्स पर बतौर आर्किटेक्ट काम कर रहे थे। उन्होंने मुझसे विमल जी की तथा कुमार समूह की बहुत तारीफ की। मैंने भी विचार कर यह तय किया कि एक अच्छे समूह के साथ जुड़ने में कोई बुराई नहीं है। इस तरह से सन् 1976 में हमारी फर्म कुमार एंड गायकवाड़ की स्थापना हुई एवं मैं, विमलजी तथा राठी जी बतौर पार्टनर भी एक दूसरे से जुड़ गए।

हमारा पहला प्रोजेक्ट क्वाटर गेट में प्रारंभ हुआ। उसके बाद तो हमने कई प्रोजेक्ट्स पर साथ में काम किया। शहर के कस्बापेठ, औंध, बावधान व अन्य क्षेत्रों में विभिन्न रहवासी तथा व्यवसायिक इमारतों का निर्माण कुमार एंड गायकवाड़ के तहत हुआ। कुमार समूह के साथ हमारा सबसे बड़ा प्रोजैक्ट ''सत्यपुरम (बंग्लो प्रोजैक्ट)'' था। सत्यपुरम प्रोजेक्ट की ज़मीन मध्यप्रदेश के राजनीतिज्ञ स्व. माधवराव सिंधिया की थी। उनके इस्टेट मैनेजन कर्नल लाड मेरे अच्छे मित्रों में से एक थे। प्रारंभ में कर्नल लाड ज़मीन की बिक्री के सिलसिले में विमल जी से मिले। किंतु जब विमल जी को उनके और मेरे परिचय के बारे में ज्ञात हुआ तो उन्होंने हमारी पार्टनरशिप फर्म के माध्यम से वह प्रोजेक्ट किया। हांलांकि सन् 1995 के बाद से हमने साथ में कोई प्रोजेक्ट नहीं किया, लेकिन कुमार समूह के साथ जुड़ाव एक अच्छा अनुभव रहा। विमल जी और मैं उसके बाद से अच्छे मित्र हो गए। भले ही हम व्यवसायिक रूप से साथ में न हों लेकिन हमारे व्यक्तिगत एवं पारिवारिक संबंध अभी भी गहरे हैं।

अविनाश भोंसले

जैन परिवार और कुमार समूह से मेरा परिचय ललित जी के माध्यम से हुआ। मैं कॉलेज के समय से ही ललित जी से परिचित था। 1979 में मैंने व्यवसाय प्रारम्भ किया और 1993 में सहकार नगर की एक ज़मीन के सिलसिले में मेरी ललित और विमल जी से मुलाक़ात हुई। सहकार नगर का वह प्लॉट मैंने उनसे खरीदा था। उसके बाद तो हमारी जेवी फ़र्म ने करिश्मा, मेगापोलिस सहित और कई प्रोजेक्ट्स पर साथ में काम किया। कुमार समूह के साथ मेरा जुड़ाव मनीष के साथ भी रहा। इसका कारण ये कि हम दोनों को खेलों का शौक रहा है और हमारे सोचने का तरीका भी एक जैसा ही है।

हमारी साझेदारी के साथ ही बिल्डर समूहों की गोष्ठियों में, क्रेडाई की मीटिंग्स में और अन्य कई आयोजनों में जब विमल जी मुलाक़ात होती, वे बड़ी ही गर्मजोशी के साथ मिलते, परिवार के और व्यवसाय के हालचाल पूछते। कई मामलों में वे पिता की तरह सख्त भी रहे और कई में एक दोस्त की तरह सलाह भी दी। सामाजिक कार्यों और किसी भी अच्छे काम के लिए वे हमेशा तैयार रहते थे। पूरे परिवार को उन्होने एक सूत्र में बांधा और जब बँटवारे की नौबत आई तो इतने सलीके से सारा काम निपटाया कि कहीं भी कोई विवाद की गुंजाइश नहीं रही। उनके मित्रों, हितैषियों और आदर सम्मान करने वालों की कभी कमी नहीं रही। इतने विराट व्यक्तित्व के लिए सहज ही आदर भाव उमड़ कर आता है।

हालांकि उनका जीवन बड़े उतारचढ़ावों से भरा रहा लेकिन कभी भी उन्हे मैंने पस्त या परेशान नहीं देखा। सुख हो या दुख, सबका उन्होने एक समान भाव से सामना किया और न सुख में कभी अति उत्सुक हुए और न दुख में अति भावुक। छोटी सी उम्र से व्यवसाय में कदम जमाने शुरू किए और व्यवसाय को बुलंदियों तक पहुंचाया। उनके अनुभव का कोई सानी नहीं था। बीच में भाई की दुखद मृत्यु ने उन्हे दुख तो बहुत पहुंचाया लेकिन उसके बाद उनके परिवार को उन्होने जिस तरह से सम्हाला, वह बहुत ही अनुकरणीय है।

वे बहुत ही तीक्ष्ण बुद्धि वाले थे और निर्माण व्यवसाय की बारीकियों पर उनका अनुभव बहुत था। वे निर्माण व्यवसायों के कु-प्रचलनों से बहुत विचलित होते थे और उन्होने ऐसा कोई काम नहीं किया जो कि एक बिल्डर के तौर पर उनकी साख पर दाग लगाता हो। कुमार समूह के साथ मैं आज भी जुड़ा हुआ हूँ। उनके नक्शे कदम पर चलकर मनीष और राजस उनके यश में वृद्धि ही कर रहे हैं। उनकी अकाल मृत्यु से निर्माण उद्योग ने भविष्यद्दष्टा नेतृत्व को खो दिया है,
ऐसा मेरा मानना है।

अविनाश भोंसले

जैन समाज के विभिन्न सामाजिक संगठनों में उनकी
सक्रिय भूमिका थी
और वे स्वयं कई संस्थाओं के जन्मदाता थे।

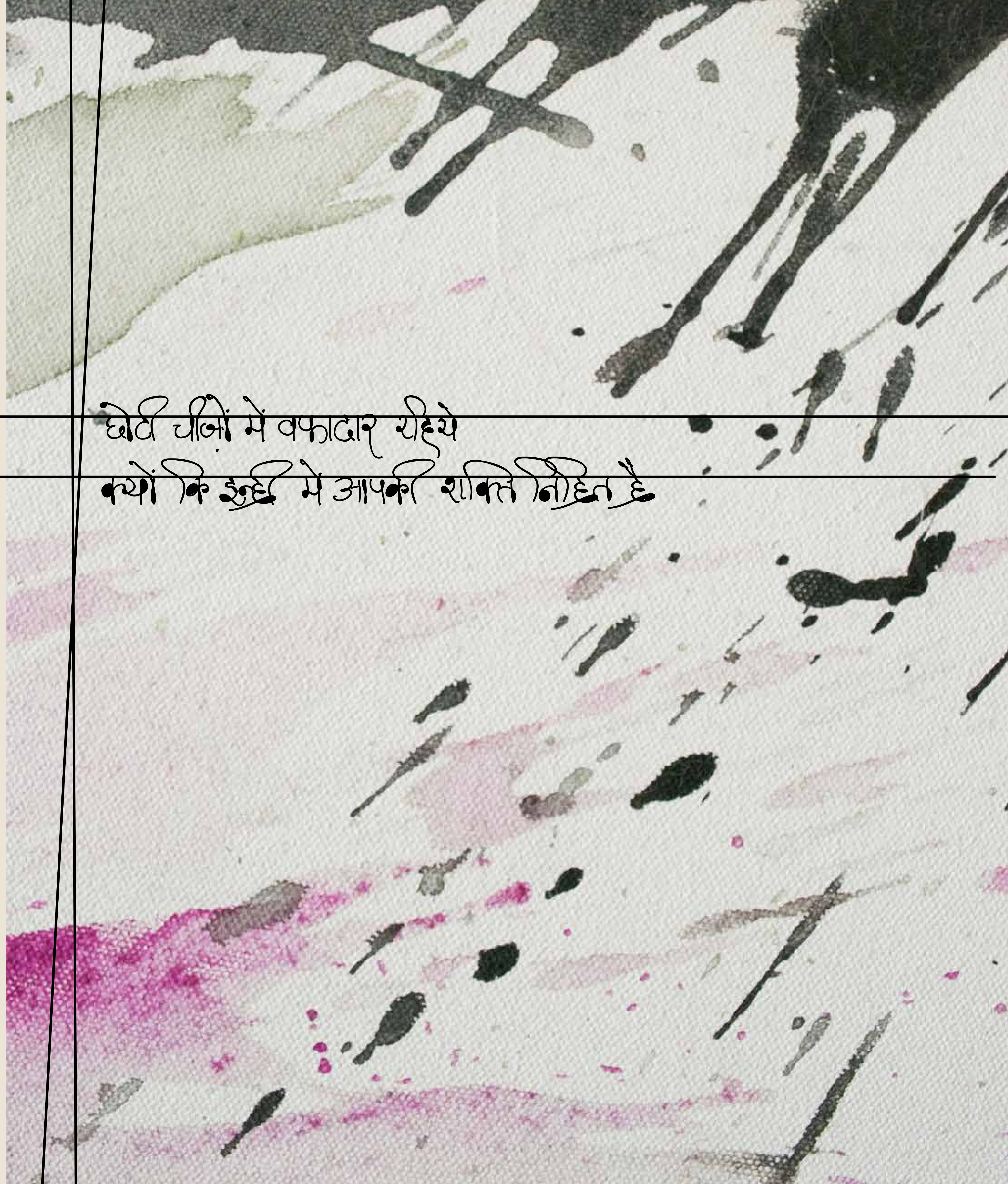

दिलीप मेहता

दिलीप मेहता

आमतौर पर हम इतनी देर तक पूना क्लब में नहीं रुकते थे, लेकिन उस दिन हमें देर हो गई। मैं विमल जी और हमारी पूना क्लब की मित्रमंडली रोज़ की तरह वहां मिले और चर्चाएं कर रहे थे। विमल और मैं दोनों मिलकर अगले दिन होने वाली पार्टी के लिए अपने परिचितों को फोन पर निमंत्रण दे रहे थे। यही करते-करते 10 बज गए और हम दोनों फिर वहां से रवाना हुए। घर पहुंचने के बाद एक बार फिर किसी कारण से विमल ने मुझे फोन किया। उसके बाद हम दोनों अपने-अपने काम में व्यस्त हो गए। दोपहर में मैं किसी काम से अपने कुमार कॉर्नर में अपने एक रिश्तेदार के यहां गया। वहीं पर मुझे वह अविश्वसनीय दुःखद ख़बर मिली कि जिस दोस्त शादी की सालगिरह की पार्टी की मैं सुबह से तैयारी कर रहा था वो दोस्त ही नहीं रहा। मुझे गहरा धक्का लगा। यह 7 जून 2011 की बात है और 8 जून को विमल की शादी की सालगिरह थी।

मैं और विमल बचपन से साथ पढ़े, साथ बढ़े और कंस्ट्रक्शन की एबीसीडी भी साथ ही में सीखी। हम तीन दोस्त, मैं, विमल और वालू (वालचंद्र पालरेचा) उस समय कॉलेज में पढ़ रहे थे जब सेठ जी (केसरीमलजी) ने कुमार प्रॉपर्टीज़ की स्थापना की थी। उस समय हम तीनों को साइट पर जाने का बड़ा शौक था। वहां जाकर हम बड़ी लगन से काम सीखते भी थे और करते भी थे। यही कारण था कि निर्माण व्यवसाय से जुड़े हर आयाम से विमल अच्छे से परिचित भी हो गया था और वेल ट्रेण्ड भी। विमल के घर यानी कुमार प्रॉपर्टीज़ के सबसे पहले ऑफिस भोपला चैक पर सेठजी की गद्दी के पीछे एक छोटे से कमरे में हम तीनों साथ में कॉलेज की पढ़ाई भी किया करते थे और लिटरेचर भी पढ़ते थे। हिंद पाकेट बुक्स की हिंदी फिक्शन के हम बड़े शौकीन थे।

सेठजी ने विमल के बहनोई आर्किटेक्ट श्री नयन पालरेचा के साथ मिलकर शीघ्र ही कुमार प्रॉपर्टीज़ को पुणे के अग्रणी बिल्डर्स की श्रेणी में लाकर खड़ा कर दिया था। विमल ने बाद में ग्रेजुएशन अधूरा छोड़कर पूरी तरह से कुमार प्रॉपर्टीज़ को आगे बढ़ाने में ख़ुद को लगा दिया। विमल की एक ख़ासियत थी कि वह किसी भी ग़लत बात को बर्दाश्त नहीं करता था और यही कारण रहा कि आज कुमार प्रॉपर्टीज़ अपनी फ्री एंड फेयर डील्स के लिए जाना जाता है। वैसे तो मैं और विमल कुछ प्रोजेक्ट्स में पार्टनर भी रहे लेकिन व्यावसायिक रूप से हमारा सबसे सफल उद्यम था हमारी कंस्ट्रक्शन मटेरियल सप्लाय फर्म जो हम दोनों ने मिलकर खोली थी। हमारी फर्म 1988 तक कार्यरत थी। कुमार प्रॉपर्टीज़ का भवानीपेठ वाला ऑफिस दरअसल हमारी सप्लाय फर्म का ऑफिस था। मुझे अच्छे से याद है कि 1979 में जब कुमार समूह ने अपना पहला सबसे बड़ा ओनरशिप प्रोजेक्ट कुमार कॉर्नर लांच किया तब उसे इतना ज़बर्दस्त प्रतिसाद मिला कि उसमें फ्लेट बुक करने के लिए भवानीपेठ ऑफिस के बाहर लोग लाइन लगाकर खड़े थे। दरअसल उस समय पुणे में मारवाड़ी समुदाय का कोई बिल्डर नहीं था तथा समुदाय के बहुत से लोग शहर में स्थापित हो रहे थे, ऐसे में कुमार कॉर्नर लांच हुआ तो इस समुदाय के कई लोगों ने उसमें फ्लेट बुक किए थे। हम दोनों भी साथ में ही कुमार कॉर्नर में शिफ्ट हुए।

विमल और मेरी घनिष्ठता और आपस में हमारा एक दूसरे पर विश्वास इतना था कि मेरी शादी तय करने के लिए मेरे परिवार के साथ मेरी ओर से वह गया था तथा उसके वक्त मैं। मेरी शादी 17 मई को हुई तथा उसी साल 8 जून को उसकी शादी तय हुई थी। शादी के बाद जब मेरी पत्नी पहली बार अपने मायके चली गई तो हम दोनों भी राजस्थान घूमने के लिए निकल गए। इधर हम दोनों राजस्थान भ्रमण पर थे और उधर विमल के गांव कोट में सेठजी तथा अन्य घरवाले चिंता में पड़ गए। उसकी शादी की तारीख पास आ रही थी और जबसे हम निकले थे तबसे हमने घर में कोई ख़बर भी नहीं दी थी। घूम-फिर कर अंततः 2 जून को मैं, विमल तथा मेरी पत्नी, हम तीनों कोट पहुंचे तब जाकर घरवालों की सांस में सांस आई।

विमल के लिए रिश्ते अनमोल थे। आमतौर पर किसी को अपना कह देना काफी आसान है लेकिन उस अपनेपन को ताज़िन्दगी निभाना कोई विमल से सीखे। सामाजिक साहचर्य को उसने अपने जीवन में बहुत महत्व दिया। चाहे जैन समाज का कार्य हो या पुणे शहर के कल्याण से जुड़ा कोई आयोजन विमल उसमें न केवल शामिल होता था बल्कि उस आयोजन को सफल बनाने में बढ़-चढ़कर सहयोग भी करता था। जैसा कि मैंने कहा कि रिश्ते बनाना और निभाना उसका गुण था, ऐसे में ऐसे व्यक्ति को यदि परिवार में ही रिश्ते टूटने जैसी स्थिति का सामना करना पड़े तो उस पर क्या बीतेगी, इसका सहज ही अंदाज़ा लगाया जा सकता है। ऐसा एक क्षण उसके जीवन में आया था जब ललित अलग हुआ। उसे इस बात से गहरा दुःख पहुंचा था। किंतु हर परिवार की अपनी एक कहानी होती है और इसी तरह से इस परिवार की कहानी में भी यह मोड़ आया लेकिन हर्ष का विषय है कि दोनों परिवारों ने व्यावसायिक तौर पर दिन दूनी रात चौगुनी तरक्की की।

विमल के साथ-साथ छोटे-बड़े स्तर पर ऐसे कई लोग हैं जिन्होंने सफलता की नई इबारतें लिखी हैं। उसके साथ जुड़ने वाले सप्लायर्स, इंजीनियर्स, आर्किटेक्ट्स तथा निर्माण व्यवसाय से जुड़े कई लोगों ने अभूतपूर्व तरक्की की। दरअसल यह विमल का एक और बड़ा गुण था। अपने साथ जुड़ने वाले सभी लोगों को वह हमेशा खुश तथा समृद्ध देखना चाहता था। उसे पूना शहर से भी बड़ा लगाव था। प्रशासनिक क्षेत्र में भी सभी लोगों से उसके संबंध सौहार्द्रपूर्ण रहे। कुमार समूह की सबसे बड़ी ख़ासियत रही है शहर के लगभग हर क्षेत्र में उनकी उनकी उपस्थिति।

मुझे ख़ुशी है कि कुमार समूह की वर्तमान पीढ़ी विमल, इंदर तथा सेठजी द्वारा स्थापित मूल्यों को और समृद्ध कर रही है। विमल के अवसान से जो क्षति समूह को, समाज को तथा पुणे शहर को हुई है उसकी क्षतिपूर्ति तो असंभव है लेकिन उसके आदर्शों को अपनाकर यह समूह इसी तरह सफलता के नए सोपान चढ़ता रहे ऐसी मैं कामना करता हूं।

फरहाद खारेघाट

फरहाद खारेघाट

कुमार समूह से मेरा परिचय 1995 के आसपास हुआ। मैं बेसिकली मुंबई में प्रेक्टिस करता हूं। 1995 में श्री ललित कुमार जैन मुझसे कुमार करिश्मा के लिए मिले तथा उसका काम चालू हुआ। शुरूआती मीटिंग्स में विमल जी से मुलाकात नहीं हुई। करिश्मा का पूरा काम ललित जी ही देख रहे थे। कभी कभी राजस जी तथा इंदर भाई से मुलाकात होती थी। सन् 2000 में ग्रुप के सेपरेशन के बाद करिश्मा फेज़ 2 के समय मेरी पहली बार मुलाकात विमल जी से हुई। उसके बाद से तो हमने कई प्रोजेक्ट्स पर साथ में काम किया। कुमार करिश्मा कोथरूड क्षेत्र का संभवतः पहला मास हाउसिंग प्रोजेक्ट था जिसका कि प्लाट एरिया बहुत बड़ा था। उस दौरान उसकी ड्राइंग्स, डीटेल्स संबंधित मीटिंग्स में छोटी से छोटी बात पर बहुत महत्व दिया गया तथा एक लम्बे डिस्कशन के बाद फाइनल ड्राइंग तैयार हुई। कुमार समूह एक क्लाइंट के तौर पर बहुत ही प्रोफेशनल तथा स्ट्रेट फारवर्ड है। लेकिन फिर भी इनसे व्यवहार बहुत ही इनफार्मल तथा दोस्ताना रहा है।

एक सबसे महत्वपूर्ण गुण जो मैंने नोटिस किया वह यह है कि अपने सभी प्रोजेक्ट्स को लेकर इनका अप्रोच बहुत की सीरियस तथा डेडिकेटेड रहता है। मुझे याद है कि हम पाषाण क्षेत्र में एक प्रोजेक्ट की ड्राइंग्स पर काम कर रहे थे तथा विमल जी उसमें बहुत डीपली इन्वाल्व थे। कई चेंजेस के बाद आख़िरकार हमने नकशा पास होने भेजा लेकिन म्युंसिपल परमिशन नहीं मिली। अगले दिन मीटिंग में विमल जी मुझसे बोले कि ''मुझे रात भर नींद नहीं आई'', इससे दिखता है कि वे कितने किसी भी प्रोजेक्ट को लेकर कितने गम्भीर रहते थे। कुमार के साथ कुमार करिश्मा के बाद मैंने कुमार प्रेसीडेंसी, कुमार प्राइमस, पार्क इंफीनिया, प्लेनेट आईटी फेज़ 1 तथा 2 तथा मुंबई के कुछ प्राजेक्ट्स पर काम किया है। आर्किटेक्ट के तौर पर मुझे यह कहने में हिचक नहीं होगी कि उनसे काफी कुछ सीखने को मिला। माइन्यूट डीटेल्स को लेकर उनका अप्रोच तथा फोरथाट बेहतरीन था। प्रेसीडेंसी फेज़ 1 के दौरान मुझे उनके विचारों को जानने का मौका मिला।

किसी प्रोजेक्ट में फ्लेट्स की पोज़ीशन, उसमें हर सुविधा के लिए ज़रूरी जगह, इकॉनॉमिक अस्पेक्ट्स आदि सभी पर वे बराबर ध्यान देते थे। तीन से चार बार तथा कई बार इससे अधिक करेक्शस के बाद फाइनल ड्राइंग तैयार होती जो कि फ्लॉलेस होती थी। इसके साथ ही उनके साथ काम करते हुए उन्हें इस चीज़ का अहसास हो गया था कि मैं क्या सबसे बेहतर कर सकता हूं तथा मेरा परफेक्शन लेवल क्या है। वे उसीके हिसाब से करेक्श्नस करवाते। हमेशा कहते थे आप इससे अ़च्छा कर सकते हो, आपको करना चाहिए। उनकी मृत्यु के कुछ ही दिन पहले मेरी उनसे मुंबई के मेंरे ऑफिस में मुलाकात हुई थी जिसमें हमने कुमार पृथ्वी की ड्राइंग फाइनल की थी। मेंरे अभी तक के करियर में वे एक सबसे इंट्रेस्टिंग तथा रेस्पेक्टफुल व्यक्ति थे जिनके साथ मैंने काम किया तथा जिनसे बहुत कुछ सीखा।

फतेहचंद रांका

फतेहचंद रांका

विमल भाई से मेरी मुलाकात पहली बार दादावाड़ी मंदिर के प्रथम ट्रस्ट गठन के समय हुई। यह 1982 की बात है। वैसे तो हम दोनों ही गोड़वाड़ जैन समाज के हैं, इस नाते उनसे परिचय तो बहुत पुराना था लेकिन करीब से जानने का मौका 1982 के बाद ही मिला। मंदिर के ट्रस्ट गठन के दौरान उनका उत्साह देखने लायक था। पहले 11 ट्रस्टियों में वे और मैं हम दोनों ही थे। उस दौरान उनसे बातचीत के दौरान धर्म, समाज, सेवा, व्यवसाय आदि के बारे में उनके विचारों को मैंने जाना तथा उनसे मैं बहुत प्रभावित हुआ। हालांकि ट्रस्ट तीन साल बाद भंग हो गया लेकिन हमारा मिलना जुलना चलता रहा।

सन् 2000 से हम लोगों ने साथ में बहुत सी यात्राएं की। हम लोग प्रत्येक वर्ष देश-विदेश की कई जगहों पर घूमने जाते थे तथा साथ में लम्बा समय बिताते थे। मेरे अनुसार तो वे हर महफिल ही जान थे। उनका स्वभाव मज़ाकिया तथा दोस्ताना था और अपना सोशल सर्कल उन्होंने बहुत विस्तृत कर रखा था। इस सर्कल में उनसे उम्र में छोटे-बड़े हर प्रकार के लोगों का समावेश था। न सिर्फ़ जैन समाज में बल्कि अन्य सभी वर्गों में उनका बहुत आदर-सम्मान था। उनके व्यवहार की ख़ासियत देखिए कि दिनभर में वे सैकड़ों लोगों से मिलते और हर किसी से मिलने के बाद उनसे मिलने वाले को यह प्रतीत होता कि वह उनके कितने करीब है। यह एक अद्भुत काबिलियत थी उनकी जो बहुत ही कम लोगों में पाई जाती है। उनके आख़िरी दिन लोकमान्य तिलक अस्पताल के बाहर जो लोगों का हुजूम इकट्ठा था वही अपने आप में दर्शा रहा था कि लोग उन्हें कितना पसन्द करते हैं। उनके तर्क, हर विषय पर उनका अद्भुत कौशल तथा उनकी अचूक सलाहें, ये तीन चीज़ें मैं हमेशा याद करता रहता हूं। ज्योतिष का उन्हें अच्छा ज्ञान और खुद का उस पर बहुत विश्वास था। वे भले ही हमें कहते हों कि ज्योतिष पर ज़्यादा विश्वास नहीं करना, लेकिन ख़ुद हर चीज़ के लिए विश्वास करते। हर काम मुहूर्त देखकर करते। उनके दोस्तों में, परिचितों में तथा परिजनों में कई ऐसे होंगे जिन्हें उनकी दी हुई सलाह से बहुत फायदा हुआ। मैं स्वयं कई बार उनसे सलाह लेता था। कई लोग ऐसा कहते हैं और मेरा भी ऐसा मानना है कि जैसे उनकी दूरदृष्टि उनके व्यवसाय में थी ठीक उसी प्रकार जीवन के अन्य पहलुओं के प्रति भी उनकी भविष्य को लेकर निगाह काफी पैनी थी। उन्हें भविष्य दर्शन की काबिलियत हासिल थी। क्योंकि उनके पास जो ज्ञान और अनुभव था वह महज़ किताबें पढ़ने से हासिल नहीं किया जा सकता है, यकीनन उन्हें कोई ईश्वरीय देन थी। जैन धर्म के लिए उन्होंने अपना सर्वस्व अर्पित कर रखा था। पुणे सहित देश के कई जैन मंदिरों में उन्हें कई धर्मार्थ कार्य करवाए। दान-धर्म हेतु उनका हाथ बहुत खुला था। अहिंसा भवन, उपाश्रय, गोड़वाड़ समाज भवन, वीरायतन आदि ऐसी कई इमारतों के निर्माण में उनका अतुलनीय सहयोग कोई नहीं भुला सकता है।

इसके अलावा भी अनेक धर्मार्थ कार्यों के लिए वे हमेशा तत्पर रहते थे। में लायन्स क्लब से जुड़ा हुआ हूं। हमारे क्लब की ओर से मुकुंदनगर मे एक डायलिसिस सेंटर खोला गया है जहां पर नाममात्र की फीस में लोगों के लिए डायलिसिस, रक्त जांच, पैथॉलॉजी आदि की सुविधाएं उपलब्ध हैं। विमल भाई ने सहर्ष उस सेंटर के लिए 6.25 लाख रुपए की एक डायलिसिस मशीन दान की थी व उसके शुभारम्भ के अवसर पर आए भी थे और एक प्रेरक भाषण दिया था। अपने परिवार के प्रति उन्होंने जिस कर्तव्यनिष्ठा का परिचय देते हुए अपनी जिम्मेदारियां निभाई वह समाज में एक मिसाल है। भोपला चैक के घर से अपना सफर प्रारंभ कर उन्होंने जो उंचाईयां छुई हैं वे अतुलनीय है। अपने छोटे भाइयों, बच्चों तथा भाइयों के बच्चों आदि सबके लिए उन्होंने एक सुखद भविष्य सुनिश्चित किया। मेरे साथ उनका रिश्ता बहुत ही अलग था। हम लोग तकरीबन हर दूसरे दिन मिलते थे। वे उनके घर से दिन में भोजन के बाद जब फिर से ऑफिस के लिए निकलते तो रास्ते में हमारे लक्ष्मी रोड वाले या अन्य किसी शोरूम पर, जहां भी मैं रहूं, वहां आते और हम साथ में एक कप चाय पीते, फिर वे अपने ऑफिस के लिए निकल जाते। पिछले कई वर्षों से यहलगभग नियम की तरह हम लोग पालन कर रहे थे। उनकी दुखद मृत्यु वाले दिन सुबह तकनीबन 9.30 बजे तक मैं उनके साथ था। वे अपने विवाह की वर्षगांठ की पार्टी के लिए सभी लोगों को फोन कर रहे थे व प्लानिंग कर रहे थे। वहां से निकलने के बाद मुझे अपने शोरूम पर आए हुए थोड़ा ही वक्त हुआ था कि उनके एक्सीडेण्ट की खबर आ गई। हम हतप्रभ रह गए थे। मै। तो यही कहूंगा कि उनके रूप में जैन समाज ने तथा इस शहर ने एक ऐसा व्यक्ति खो दिया है जो सबको प्रिय था। वे एक कोहिनूर थे जिन्हें हम खो चुके हैं।

श्री चंद्रवर्धन भण्डारी

श्री चंद्रवर्धन भण्डारी

विमल कुमार जी के साथ मेरा जुड़ाव थोड़ा अलग था। हमारा संबंध भावनात्मक और रचनात्मक था। 11 जून को वो पहली बार मेरे घर आने वाले थे। मैंने उन्हे निमंत्रण दिया था। लेकिन शायद होनी को कुछ और मंजूर था और उससे चार दिन पहले ही वे हमेशा के लिए हम सबको अपनी यादें देकर चले गए। हमारे संबंध प्रगाढ़ तो 2005 के बाद हुए। उससे पहले जान पहचान थी ही लेकिन नियमित अंतरालों पर मिलना जुलना नहीं हो पाता था।

उनकी याददाश्त बड़ी ही तेज़ थी और जिससे एक बार मिल लें और उनसे कुछ कह दें तो उसे वे याद रखते थे। मेरी भाभी श्रीमती नीता गांधी और विमल जी का परिवार एक बार डेक्कन क्वीन में सफर कर रहे थे और बातचीत में उन्होने भाभी से कहा कि आप कभी हमारे परिवार के साथ पालिताना चलिये, मैं आपको लेकर जाऊंगा। इस बात के तकरीबन चार साल बाद उन्होने 2010 में अपनी कही बात रखी और हमारा परिवार उनके साथ पालिताना गया था। इतनी पुरानी बात याद रखना और संबंध निभाने की खातिर उसे पूरा करना, यह उनका गुण मुझे गहरे तक प्रभावित कर गया।

आदमी पहचानने की उनकी कला का मैं कायल था। वे एक्सरे की भांति आदमी को भीतर-बाहर से पहचान जाते थे। निगाह इतनी बारीक थी कि किससे क्या काम, कब और कैसे करवाना है, यह उन्हे बहुत बेहतर ढंग से आता था। बहुत कम बोलते लेकिन सटीक बोलते थे। उनसे जुड़े हर छोटे-बड़े व्यक्ति का वे पूरा ध्यान रखते और उसकी बेहतरी के लिए चिंतित रहते।

मुझे फॉक्सवेगन की डीलरशिप लेने के लिए पक्का निर्णय लेने में उन्होने बड़ी मदद की थी। उनके दिये हुए महालक्ष्मी के फोटो से मुझे बहुत लाभ मिला।

जब भी मिलते तो अलग-अलग विधाओं पर ज्ञान की बातें बताते थे। धर्म, जीवन मूल्य, आपसी संबंध इन सब बातों पर हमेशा उन्होने मुझे मित्रवत सलाह दी जो कि मेरे जीवन में बहुत काम आई हैं। मैं तो यह मानता हूँ कि वे चमत्कारी व्यक्तित्व थे जिन्हें भविष्य का बोध हो जाता था। उनकी मर्सिडीज उन्होने मेरे ही शोरूम से खरीदी थी। हालांकि इन मामलों में बिलकुल भी ख़र्चीले नहीं थे लेकिन बच्चों की ज़िद के चलते वे कार लेने मेरे शोरूम पर आए थे।

व्यापार में सादगी, नम्रता, अगाध ज्ञान, इन गुणों ने उन्हे व्यक्तिगत और व्यापारिक जीवन में बहुत सफलता दिलाई। वे एक दिव्य आत्मा थे जिन्होने हमेशा सबका भला चाहा और भला किया। वे कुमार समूह के लिए ऐसी सुदृढ़ नीव तैयार करके गए हैं जिस पर कुमार समूह और जैन परिवार की बुलंद इमारत बनी है और हमेशा कायम रहेगी।

जितना कठिन संघर्ष होगा
उतनी ही जीत शानदार होगी

जयंत इनामदार

जयंत इनामदार

यह गलाकाट प्रतिस्पर्धा का युग है। एक दूसरे से आगे निकलने की होड़ लगी है। कार्पोरेट घरानों में तो यह अंधी दौड़ और बुरी है। ऐसे में यदि कहीं आपको कोई ऐसा व्यावसायिक घराना और व्यक्तित्व मिले जो अपने साथ-साथ स्वस्थ प्रतियोगिता का निर्वाह करते हुए अन्य लोगों को भी समान रूप से आगे बढ़ने के अवसर दे तथा युवा पीढ़ी व नए व कम तजुर्बेदार लोगों को आगे बढ़ाए तो यह अविश्वसनीय ही होगा। लेकिन ऐसा ही अविश्वसनीय व्यावसायिक घराना है कुमार प्रॉपर्टीज़ समूह और ऐसे अविश्वसनीय व्यक्तित्व थे स्व. विमल कुमार जैन। एक ही परिवार के इतने सारे सदस्य एक साथ मिलकर इतने सौहार्द्रपूर्ण ढंग से विभिन्न प्रकार के व्यवसायों का सफलतापूर्वक निर्वाह कर रहे हैं, ऐसी मिसाल वस्तुतः मिलनी बड़ी मुश्किल है। मेरी विमल जी से मुलाकात व बातचीत PBAP, BAI आदि संगठनों की गोष्ठियों के दौरान होती रही थी। लगभग 1990 से हम दोनों एक दूसरे से परिचित थे। हमारी चर्चा अक्सर कंस्ट्रक्शन इंडस्ट्री और इसमें आ रहे नए नए बदलावों को लेकर होती थी। मैं इस विषय में उनके अद्भुत ज्ञान से बहुत प्रभावित हुआ। वे एक सरल, सामान्य तथा ज़मीनी व्यक्ति थे। उनसे बातचीत के दौरान ज़रा सा भी भास नहीं होता था कि वे इतने बड़े रियल इस्टेट समूह के मालिक हैं। व्यावसायिक रूप से हम 2005 में एक दूसरे से जुड़े।

पहला प्रोजेक्ट खराड़ी स्थित कुमार पेरीविंकल था जो मैंने कुमार समूह के लिए किया था। उस प्रोजेक्ट के दौरान मेरी विमल कुमार जी से कई बार मीटिंग्स हुई। उस समय मैंने उन्हें और करीब से जाना तथा उनके व्यक्तित्व का एक और गुण मेरे समक्ष आया जो कि एक प्रोफेशनली कमिटेड ओनर का था। चूंकि उनका अनुभव विराट था तथा इतने सारे सफल प्रोजेक्ट्स कर चुकने के बाद उनके अंदर जो प्रोफेशनल ईज़ आ गया था वह अद्भुत था। टेक्नीकल पर्सस विषेषकर आर्किटेक्ट्स तथा सीनियर इंजीनियर्स के लिए उनके मन में बहुत आदर था। उनका अनुभव तथा हमारा ज्ञान इन दो चीज़ों के समागम से जो भी प्रोजेक्ट की प्लानिंग या ड्राइंग तैयार होती वो अपने आप में बेमिसाल होती थी। प्लानिंग फेज़ से ही उनका पूरा ध्यान इस बात पर रहता था कि प्रोजेक्ट उसके टार्गेट कस्टमर के लिए पूरी तरह से उपयोगी हो। उनकी कही हुई एक बात हमेशा मुझे ध्यान रहती है, वे कहा करते थे कि "अच्छा आर्किटेक्ट वह है जो ख़ूबसूरती और उपयोगिता दोनों को समान रूप से महत्व देते हुए डिज़ाइन बनाए।" आगे मैंने उनके साथ और भी प्रोजेक्ट्स किए और अभी तक कर ही रहा हूं। कमर्शियल कम रेसीडेंशियल प्रोजेक्ट पर उनकी कमाल की कमांड थी। यही कारण है कि कुमार समूह के कमर्शियल कम रेसीडेंशियल प्रोजेक्ट्स अपने-अपने प्रभावक्षेत्र में पूरी तरह से सफल हैं। इस प्रकार के प्रोजेक्ट्स में उनका ज़ोर इस बात पर रहता था कि कमर्शियल कम रेसीडेंशियल प्रोजेक्ट में दोनों के उपयोगकर्ताओं को एक दूसरे से व्यवधान न हो।

राजनीतिक क्षेत्र में भी उनके कई अच्छे मित्र रहे हैं लेकिन एक अच्छी बात उनकी यह थी कि कभी उन्होंने अपने राजनीतिक संबंधों का उपयोग ख़ुद के फायदे के लिए नहीं किया। निर्माण व्यवसाय के बुरे चलनों से वह हमेशा दूर रहे और हमेशा फ्री एंड फेयर डीलिंग में विश्वास किया। सामाजिक मेलजोल में उनका कोई सानी नहीं था। अपने परिचितों के प्रत्येक सुख दुख में वे हमेशा अग्रणी भूमिका निभाते हुए शामिल होते थे। मेरी कंपनी स्ट्रडकॉम के 50वें स्थापना दिवस के कार्यक्रम में वे न सिर्फ एक बुलावे पर आए बल्कि उन्होंने एक प्रेरणादायी भाषण भी दिया। निर्माण क्षेत्र के लिए वे हमेषा एक आदर्श व्यक्तित्व तथा इनोवेटर के रूप में जाने जाते रहेंगे।

कृष्णकुमार गोयल

विमल भाई मेरी ज़िन्दगी के सबसे महत्वपूर्ण निर्णय के लिए प्रेरणा देने वाले व्यक्ति थे। यह निर्णय था रियल इस्टेट के क्षेत्र में उतरने का। 1978-79 में मैं विमल भाई से एक लैण्ड डील के लिए मिला था। खराड़ी की एक ज़मीन का सौदा मैंने एक व्यक्ति से किया था। हमारी डील फाइनल ही होने वाली थी कि उन्होंने वह ज़मीन विमल भाई को दिखाई और उन्हें वह ज़मीन पसन्द आ गई। तब हमारी मुलाकात हुई और डील फाइनल विमल भाई से हुई। खराड़ी की उस ज़मीन पर उन्होंने बाद में सोना-रूपा अपार्टमेंट का निर्माण किया। पहली ही बार में उनसे मिलकर मैं काफी प्रभावित हुआ। मुझे सबसे अच्छी बात उनकी यह लगी कि बड़ी ही कम उम्र में उन्होंने प्रभावी व्यवसायिक दक्षता हासिल कर ली थी और साथ ही मारवाड़ी समुदाय का होने के कारण हमारी प्रारंभिक घनिष्ठता बड़ी ही जल्दी हो गई थी। उनकी व्यवसाय करने का साफ-सुथरा तरीका, कमिटमेंट व दोस्ताना व्यवहार, इन तीन चीज़ों ने मुझे बहुत प्रभावित किया। रियल इस्टेट क्षेत्र के प्रति उनका उत्साह और उनके काम करने की शैली को देखकर मैंने भी इस क्षेत्र में उतरने का निर्णय किया था।

हालांकि मुझे यह अवसर बहुत बाद में मिला। मैंने 1983 में सेनेटरी, हार्डवेयर तथा सीमेंट सप्लाय का काम शुरू किया। विमल भाई से भी मिलना-जुलना सामाजिक कार्यक्रमों में लगा ही रहता था। धीरे-धीरे मेरा परिचय इंदर भाई, केवल भाई व ललित भाई से भी हुआ। सीमेंट व सेनेटरी वेयर के ऑर्डर के सिलसिले में ललित भाई हमारे यहां आते रहते थे। लेकिन विमल भाई से मेरी मुलाकातों की फिर से शुरूआत हुई 1990 के बाद। 1988 में मैंने कोहिनूर ग्रुप के नाम से रियल इस्टेट फर्म की स्थापना की। 1990 में मैंने, श्री सुजीत जैन तथा विमल भाई ने पार्टनरशिप में खड़की में कोहिनूर प्लाज़ा नामक प्रोजेक्ट पर काम किया। उसकी प्लानिंग और निर्माण के दौरान कई बार हमारा मिलना हुआ। जब भी वे मिलते व्यवसाय, मार्केट, ज़मीनों के दाम आदि के बारे में भविष्य में क्या करना है तथा वर्तमान में क्या ठीक होगा इसके बारे में जानकारी देते। उनकी भविष्य के प्रति निगाह बहुत ही पैनी और सटीक थी। इसी के फलस्वरूप आज आप देख सकते हैं कि पुणे शहर के दूर-दराज़ के क्षेत्रों तक में आज कुमार प्रॉपर्टीज़ समूह के पास ज़मीनें हैं जो उनकी दूरदृष्टि के चलते उन्होंने उस दौर में ही ख़रीद ली थी।

उनका रहन-सहन का तरीका भी मुझे बहुत ही प्रभावित करता था। रेबैन का चष्मा, सिल्क का शर्ट पहने सदैव मुस्कुराने वाले विमल भाई सहज ही किसी को भी अपना बना लेते थे। धर्म के प्रति नज़रिया एक और उनका गुण था जिसकी वजह से मैं उनका आदर करता हूं। यूं दिखावे के लिए तो धर्म के नाम पर दान-चढ़ावा तो सभी लोग करते हैं लेकिन उनका उस कार्य के प्रति उत्साह देखकर मैं दंग रह गया। बिबवेवाड़ी में जैन मंदिर की प्राण-प्रतिष्ठा के समय उन्होंने मुझे भी बुलाया था। इतना भव्य मंदिर और इतना शानदार आयोजन और वह सब आगे रहकर सारी व्यवस्थाएं देख रहे थे, यह सब देखकर मुझे बहुत ही सुखद प्रतीत हुआ।

2010 में एक ऐसा सुअवसर आया कि हम लोग एक दूसरे के और करीब आए। और अबकी बार यह हुआ कि यह दोस्ती रिश्तेदारी में बदली। मेरे छोटे भाई राजेंद्र गोयल के बेटे मोहित की शादी इंदर भाई की बेटी अपूर्वा से करने का प्रस्ताव लेकर विमल भाई, मनीष व अन्य परिजन हमारे घर आए। हमारे लिए तो ख़ैर यह बड़े ही हर्ष का विषय था। यहां पर विमल भाई के एक और गुण ने मुझे प्रभावित किया और वह था एक परिवार के मुखिया होने की जिम्मेदारी निभाना। उन्होंने इंदर भाई के न होने की कमी ज़रा भर महसूस नहीं होने दी और शादी बड़ी धूमधाम से संपन्न करवाई। सिर्फ हम ही नहीं बल्कि उनसे जुड़े सभी लोगों ने इस पर उनकी बहुत प्रशंसा की थी। मैं आज भी उनके बारे में सोचता हूं तो दुख होता है पर साथ ही गर्व भी होता है कि ऐसी शख़्सियत के साथ मैं न सिर्फ एक दोस्त की तरह जुड़ा बल्कि हमारे पारिवारिक सम्बन्ध भी बने।

लक्ष्मीनारायण व्यास

लक्ष्मीनारायण व्यास

विमल सेठ से परिचय यूं तो बहुत पुराना है। मेरा प्रारंभ से ही ज़मीनों का, प्रॉपर्टी का तथा कंस्ट्रक्शन का व्यवसाय रहा है। कभी-कभी उनसे सामाजिक कार्यक्रमों में अथवा किसी अन्य आयोजन में मुलाकात हो जाती थी लेकिन नियमित रूप से मिलने का दौर 2005 से प्रारंभ हुआ। मैं मेरे एक प्रोजेक्ट, जिसका कि पहले स्लैब का काम लगभग पूरा हो चुका था, को लेकर मैं उनसे मिला। उसकी लोकेशन तथा अन्य बातों को देखते हुए मैंने तथा उन्होंने उसे साथ में करने का निश्चय किया। इसकी पहल हम दोनों के ही कॉमन दोस्त श्री एंथोनी पॉल ने की। उन्होंने ही सजेस्ट किया कि हमें साथ में प्रोजेक्ट करना चाहिए। मेरे लिए तो यह बड़ी ही खुशी की बात थी। मैं तुरंत इसके लिए तैयार हो गया। किंतु उसके आर्किटेक्चरल प्लान से वे खुश नहीं थे। उन्होंने मुझसे एक मुलाकात में इसकी चर्चा की। मैंने उनसे कहा कि "आपको जो सही लगे वो करिए" तो वे बोले कि "इसे तोड़ना पड़ेगा, प्लान नया बनाना पड़ेगा तथा उसके हिसाब से स्लैब बनेंगे।" मैं इसके लिए भी तैयार हो गया। आखिर उनका अनुभव और पकड़ इतनी ज़बर्दस्त थी कि उनकी बात को टालना संभव ही नहीं था। निःसंदेह उस प्लान में कुछ खामियां होंगी। यह सब सोचकर मैंने हर निर्णय उन्हें लेने को कहा। उन्होंने पूरा प्लान अपनी देखरेख में बनवाया और इस तरह से हमारा व्यावसायिक गठजोड़ प्रारम्भ हुआ। एक ख़ास बात यह थी कि उन्हें भी ज्योतिष में गहरी रुचि थी और मैं भी कुण्डली विधान तथा ज्योतिष में बहुत विश्वास रखता हूं। किसी प्रोजेक्ट के सम्बन्ध में अथवा जीवन के किसी निर्णय लेने के समय हम अक्सर उसके ज्योतिषीय पक्ष पर लंबी चर्चा करते थे। वे अपने परिवार, नए प्रोजेक्ट, बच्चों के बारे में तथा हर बात के बारे में ज्योतिष को लेकर चर्चा किया करते थे। निर्माण के क्षेत्र में उनकी बराबरी करना कठिन था। उनकी दूरदृष्टि का कमाल देखिए कि पुणे के विकास को लेकर वे इतने आशान्वित थे तथा उन्हें पता था कि किस दिशा में पुणे भविष्य में बढ़ेगा। इसी के चलते उन्होंने लगभग हर क्षेत्र में ज़मीनें लेकर रखीं। इसी के साथ वे पुणे के व्यवस्थित विकास को लेकर भी बहुत चिंतित रहते। इसके लिए उनकी एक अलग सोच थी पुणे के डीपी को लेकर उन्होंने कई दफा म्युंसिपल कमिश्नर्स तथा अन्य वरिष्ठ अधिकारियों से चर्चा की तथा सलाह दी। मुझे याद पड़ता है कि बिल्डिंग की पेरीफेरी के हिसाब से पाइपलाइन तथा सीवेज लाइन डालने की शुरूआत उन्हीं के प्रयासों से हुई थी। अपने राजनीतिक सम्बन्धों का उन्होंने कभी दुरूपयोग नहीं किया। उनकी छवि "लीगली क्लीन" व्यक्ति की थी। अगर कोई एजेंट या अन्य कोई परिचित उनके पास किसी भी प्रकार की विवादित ज़मीन अथवा प्रोजेक्ट का प्रस्ताव लाता भी तो वे या तो डांट कर उसे चलता कर देते अथवा प्रेम से समझाते कि इसमें कहां खोट है तथा क्यों यह प्रोजेक्ट नहीं करना चाहिए। इसके साथ ही वे एजेंट्स को एंकरेज भी करते थे। उन्हें तकनीकी पक्षों की जानकारी खुद भी देते अथवा उन्हें सजेस्ट करते कि यह पढ़ो तो जानकारी मिलेगी। अभी तक उनकी की हुई एक भी लैण्ड डील मोटे तौर पर किसी विवाद में नहीं फंसी। धर्म तथा समाज सेवा उनके व्यक्तित्व का एक और अलहदा रूप था। उन्होंने जैन धर्म सहित अन्य समाजों तथा सेवाकार्यों में मुक्तहस्त से दान दिया। इसके बावजूद कभी उसका अन्यथा श्रेय लेने की कोशिश नहीं की।

डॉ. शिवाजी राव एस कदम

अपने जीवन के सफर में हम यूं तो कई लोगों से मिलते हैं लेकिन उनमें से सबको अपने करीबी लोगों में जगह नहीं दे सकते हैं। हालांकि कुछ होते हैं जो कि अपने अलहदा मानवीय गुणों की वजह से हमारे करीब आ जाते हैं। हम उनके गुणों की कद्र करने लगते हैं और उनकी उपलब्धियों पर खुश भी होते हैं और उनका सम्मान भी करने लगते हैं। हमारे साथ उनका संबंध विशुद्ध दोस्ती वाला रहता है जिसमें कि न तो स्वार्थ की जगह होती है और न ही किसी प्रकार से कुछ पाने की आकांक्षा। विमल कुमार केसरीमल जैन मेंरे जीवन में ऐसे ही हृदय अनुरागी व्यक्तियों में से एक रहे हैं। मैंने हमेशा उनके साथ अपने व्यक्तिगत सम्बन्धों का सुखद अनुभव लिया है और अब वे अनुभव यादों के रूप में मनमस्तिष्क में अंकित हैं।

मुझे ये तो याद नहीं कि उनसे पहली मुलाक़ात कहाँ और कब हुई, लेकिन ये ज़रूर याद है कि मैं उनकी दूरदृष्टि, प्रतिबद्धता और ईमानदारी से प्रभावित होकर ही उनके बहुत करीब आया। उनके इन गुणों ने मेंरे मानस पर ऐसा प्रभाव डाला कि एक छोटी सी मुलाक़ात ही हमारे भविष्य के सम्बन्धों की नीव बन गई।

तब से अब तक बहुधा उनसे मुलाकातें हुई हैं। और जैसे-जैसे उन्हे और जानता गया, उनके प्रति मेंरे मन में सम्मान बढ़ता ही गया। उनमें ऐसी अतुलनीय योग्यताएँ थी जो कि बहुत ही कम लोगों में देखने को मिलती हैं। आमतौर पर परिवार से समृद्ध कोई व्यक्ति तरक्की करे और सफलता के नए सोपान चढ़े तो यह कोई आश्चर्य की बात नहीं है। असल सराहना तो उस व्यक्ति की की जानी चाहिए जिसने कि फर्श से शुरुआत की और अपनी मेहनत, दूरदृष्टि, बुद्धिमत्ता और मानवीय गुणों की वजह से बुलंदियों को छुआ। मैं ऐसे व्यक्ति की हमेशा ही बड़ी कद्र कर्ता हूँ और यही कारण था कि विमल जी का मैं बहुत आदर करता था और अभी भी मेंरे मन में उनका वही स्थान है।

विमल कुमार जी का परिवार राजस्थान से महाराष्ट्र आया और उन्होने पुणे को अपनी कर्मस्थली बनाया और विराट सफलता अर्जित की। कुल मिलाकर यह कहा जा सकता है कि वे सामान्य रहने के लिए पैदा ही नहीं हुए थे।

उन्होने बहुत ही साधारण शुरुआत कर कुमार प्रॉपर्टीस की स्थापना की। उस समय शहर में पानशेत बांध ने बड़ी तबाही मचाई थी। उन्होने इस तबाही में अवसर देखा और प्रभावित परिवारों को वहन करने योग्य कीमतों में यथेष्ट प्रयास कर घर भी दिये और साथ ही अपने व्यवसाय को विस्तार भी दिया।

कुमार प्रॉपर्टीस ने लोगों के दिलों में बड़ी जल्दी जगह बना ली और विमल कुमार जी ने कड़ी मेहनत कर उस नाम को बनाए रखा है। विमल कुमार जी में इस क्षेत्र में सफलता के लिए ज़रूरी हर गुण था। वे पुणे के विकास की क्षमता को बहुत पहले ही भाँप चुके थे। उन्होने शहर की बढ़ती सीमाओं और बढ़ती जनसंख्या को देखते हुए अपना व्यापार तेज़ी से बढ़ाया। उन्होने अपनी व्यावसायिक बुद्धिमत्ता के चलते बहुत ही मौके की जगहों पर ज़मीनें ली। शुरुआत उन्होने किराए पर घर देने से की और फिर धीरे धीरे अपना विस्तार किया और आज उनकी कंपनी मेगा टाउनशिप्स बना रही है। एक भविष्यदृष्टा व्यापारी होने के साथ ही विमल कुमार जी एक बहुत ही बेहतरीन व्यक्ति भी थे। वे अपने परिवार के मुखिया के तौर पर, अपने समूह के नेतृत्व कर्ता के तौर पर और एक सामाजिक उत्तरदायित्व वाले नागरिक के तौर पर बहुत ही जिम्मेदार और अनुकरणीय व्यक्ति रहे हैं। वे शारदा निकेतन, अहिंसा भवन, एचवी देसाई आइ हॉस्पिटल आदि संस्थाओं के माध्यम से हमेशा समाजसेवा के कार्यों में तत्पर रहे। वे बहुत ही धार्मिक व्यक्ति थे और विमलनाथ जैन मंदिर के निर्माण में उनका अहम योगदान रहा। परिवार के मुखिया के तौर पर उन्होने अपने भाइयों को मार्गदर्शन दिया और अपने बच्चों को भी काबिल बनाया। उनके दोनों बेटे, मनीष और राजस, उनकी परंपरा को पूरी निष्ठा के साथ निभा रहे हैं।

मेंरे लिए ये गर्व की बात रही कि मैं एक दोस्त और विश्वासपात्र के रूप में उनसे जुड़ा। यदा-कडा हमारी जो मुलाकातें होती थी उनमें हम कई विषयों पर बात करते और एक दूसरे के साथ अपने विचार साझा करते थे। मुझे स्वीकार करने में कोई हिचक नहीं है कि मैंने उनसे बहुत कुछ सीखा है। मुझे बहुत खुशी होती है कि उनके दोनों बेटों का भी मुझसे समान रूप से प्रेम है। हमने सोचा तो यही था कि विमल कुमार जी जीवन भर एक दोस्त और मार्गदर्शक के तौर पर हमारे साथ रहेंगे लेकिन परमपिता की इच्छा शायद कुछ और थी। खैर उनकी यादें और उनकी सीखें आज भी हमारे जेहन में हैं और हमेशा रहेगी।

डॉ. शिवाजी राव
एस कदम

यदि आप दृढ़ संकल्प और पूर्णता से काम करेंगे तो सफलता जरूर मिलेगी ॥

मदनलाल सोनिगरा

मदनलाल एफ सोनिगरा

मुझे विमल सेठ का स्मरण अनायास ही हो आता है। जब-जब मैं अपने पुराने शोरूम (सोनल सिरेमिक्स सेवन लव्स चौक) जाता हूं तो उनकी याद आ जाती है। कुमार समूह के साथ हम तब जुड़े जब उनका कार्यालय भवानीपेठ में शिफ्ट हुआ। लगभग 1981 के आसपास की बात होगी, हमारे पास उस वक्त क्लासिका टाइल्स की एजेंसी थी और सबसे पहले उसी सिलसिले में मैं विमल सेठ से मिला था। उन्हें क्लासिका के उत्पाद पसंद आए तथा उस समय कुछ प्रोजेक्ट्स के लिए उन्होंने बड़े ऑर्डर भी हमें दिए। उसी दौरान टाइल सिलेक्शन के लिए एक बार वे शोरूम पर आए। मेरे केबिन में बैठते ही उन्होंने मुझे कहा कि इस जगह में वास्तु दोष है, उसके प्रभाव से तुम्हारा व्यवसाय अपेक्षित रूप से सफल नहीं हो पा रहा है। मैं उनकी बात सुनकर हैरान रह गया। अब चूंकि हमारी भी कुछ ही साल पहले शुरूआत हुई थी इसलिए इस कारण से हमारा व्यवसाय प्रभावित हो रहा है, इसका हमें कोई अंदाज़ा भी नहीं था। मैं उनकी इस बेबाक राय से बहुत प्रभावित हुआ तथा उनसे विस्तार से उसके बारे में चर्चा की। उन्होंने बताया कि हमारे शोरूम का शौचालय बहुत गलत जगह पर था और उसे हटाना ज़रूरी था।

कुछ समय तक तो हमने इस बात पर ध्यान नहीं दिया। उसके बाद दो या तीन बार और उनका आना हुआ और उन्होंने मुझे उसे हटाने के लिए टोका भी। अंततः कुछ ऐसा हुआ कि हमें वह हटाना ही पड़ा और कुछ ही समय में उसका असर दिखने लगा। हमारे व्यवसाय में वृद्धि होने लगी। शीघ्र ही हमारे पास कजारिया टाइल्स की भी डिस्ट्रीब्यूटरशिप आ गई। कजारिया के आने के बाद से कुमार समूह के साथ हमारा व्यापार दोगुना हो गया। विमल सेठ के व्यक्तित्व के यूं तो कई गुण ऐसे थे जो आपको प्रभावित करे लेकिन व्यक्तिगत तौर पर मुझे उनकी सादगी और अपनत्व ने गहरे तौर पर प्रभावित किया। वास्तु के उनके गहरे ज्ञान का मैं लोहा मान गया क्योंकि उन्होंने एक ही बार के निरीक्षण में हमारे यहां जो गलत था वो भांप लिया था। उसके बाद से वे जब भी मिलते तो मैं हमेशा इस बात के लिए उन्हें धन्यवाद देता था। वे बहुत ही सरल व्यक्ति थे और उनका आचार-विचार व व्यवहार बहुत ही उच्च कोटि का था। हर किसी की मदद करना, सलाह देना, विवादों का सरल तरीके से हल निकालना यह उनके व्यवहार के सराहनीय गुण थे। उनके विनोदी स्वभाव का तो मैं कायल था। कुमार समूह की तथा विमल सेठ की प्रतिष्ठा इतनी है कि कभी भी उनके यहां से कितना भी बड़ा ऑर्डर आ जाए, हम सप्लाय करने में हिचकते नहीं हैं। पेमेंट टर्म्स इतने बढ़िया रहे कि कभी किसी प्रकार का विवाद इस समूह के साथ हमारा या किसी अन्य डिस्ट्रीब्यूटर का नहीं हुआ है। उनके साथ व्यावसायिक रूप से जुड़ने के बाद हमारी फर्म ने बहुत तरक्की की है। आज हमारे शहर में दो बड़े सिरेमिक शोरूम हैं। 1994 में मेरे उनके साथ पारिवारिक सम्बन्ध भी जुड़े। मेरे नए शोरूम पर उनका आना नहीं हो पाया। नए शोरूम पर बुलाने के लिए उनकी दुःखद मृत्यु के दिन सुबह ही मैं उन्हें फोन करते-करते रह गया। मेरी नज़र में उन्हें सच्ची श्रद्धांजली यही होगी कि उनके द्वारा स्थापित किए गए मूल्यों और आदर्शों का पालन करते हुए यह समूह उत्तरोत्तर प्रगति करे और उनका नाम रोशन हो।

नरेंद्र भण्डारी

जीवन के सफर में यदा-कदा आपको कुछ ऐसे चरित्र मिल जाते हैं जो न केवल आपके स्मृति-पटल पर एक अपनी अमिट छवि अंकित कर चले जाते हैं बल्कि अपनी सीखों और अनुभवों से आपके समक्ष एक सम्पूर्ण नीति-शास्त्र ही प्रस्तुत कर देते हैं। ऐसा नीतिशास्त्र जिसे पढ़ने और अपनाने पर आप अपने जीवन में सदा उन्नति के पथ पर ही अग्रसर होंगे। ऐसे ही एक विलक्षण व्यक्तित्व से मुझे मिलने का सौभाग्य प्राप्त हुआ, न केवल मिलने का बल्कि उनके साथ काम करने का, वक्त बिताने का और उनका स्नेहपात्र बनने का सुअवसर भी मुझे भाग्यवश प्राप्त हुआ। वे विलक्षण व्यक्तित्व थे श्री विमल कुमार जैन। तकरीबन 40 सालों से मेरा परिवार जैन परिवार से परिचित है।

प्रारंभिक जान-पहचान मेरे पिताजी तथा श्री केसरीमलजी ओसवाल के मध्य थी। हमने आइरन एंड स्टील व्यवसाय प्रारंभ किया था और उसी विषय में मेरी मुलाकात लगभग 1987 में विमल जी से हुई। पूर्व पारिवारिक पहचान होने की वजह से हमें व्यावसायिक सम्बन्ध शुरू करने में भी कोई समस्या नहीं हुई। और जैसे सौहाद्रपूर्ण तथा घनिष्ठ हमारे पारिवारिक सम्बन्ध रहे ठीक वैसी ही उष्णता से हम व्यावसायिक रूप से भी जुड़े। दरअसल कुमार प्रॉपर्टीज़ जैसे व्यावसायिक समूह के साथ व्यापार एक सुखद अनुभव ही रहता है क्योंकि यह समूह व्यापार भी एक मानवीय स्पर्श तथा सम्बन्धों की गरमाहट के साथ करता है। इनके साथ व्यापार करते हुए हमें कभी लगा ही नहीं कि हमारे सम्बन्ध व्यावसायिक हैं। इसका प्रमुख कारण रहा विमल जी, केवल जी तथा इंदर जी की व्यावसायिक व पारिवारिक सूझबूझ। इस समूह के साथ डीलिंग हमेशा फेयर और फ्री फ्रॉम ट्रबल्स रही हैं। समाजसेवा के प्रति उनके जज़्बे को मैं सलाम करता हूं। वे जिस सामीप्य और सहजता के साथ संलग्न होकर सामाजिक सेवा कार्यों में हिस्सा लेते थे, वह जज़्बा वाकई काबिल ए तारीफ है। मैं भी लायंस क्लब इंटरनेशनल से बतौर इंटरनेशन डाइरेक्टर जुड़ा हुआ हूं तथा समय-समय पर सामाजिक सेवा कार्यों में हिस्सा लेते रहता हूं। वे अपने करीबियों को बेबाक होकर सलाह देते थे। उनसे मिलने के बाद जब-जब मुझे जीवन का कोई महत्वपूर्ण निर्णय लेना होता तो मैं उनसे ज़रूर सम्पर्क करता था और वे पूरी आत्मीयता से मुझे उस बाबद् सलाह भी देते और मार्गदर्शन भी।

उनकी आकस्मिक मृत्यु के सिर्फ दो दिन पूर्व ही मुझे उनके साथ हैदराबाद-पुणे फ्लाइट में सफर के दौरान खुलकर बातचीत करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था। लेकिन उस वक्त यह अहसास नहीं था कि मैं आख़िरी बार उनके दर्शन कर रहा हूं। वे व्यवसाय के, समाजसेवा के, आत्मीय संबंधों के, प्रेम के, सौहार्द्र के तथा ख़ुशमिजाजी के प्रेरणा पुंज के रूप में सदा ही हमारी स्मृतियों में आलोकित रहेंगे।

नरेंद्र भण्डारी

पी सी बागमार

विमल शेठ से मेरा परिचय तकरीबन 22 वर्षों पूर्व हुआ। उनके साले अमृत मेहता मेरे अच्छे मित्र हैं, उन्हीं ने मेरा परिचय विमल शेठ से करवाया था। मेरा कॉंक्रीट तथा अस्फॉल्ट रोड बनाने का व्यवसाय था। वे चाहते थे कि उनके प्रोजेक्ट गिरिजाशंकर के रोड्स का निर्माण मैं करूं। मैं हमेशा से अपने द्वारा किए जाने वाले काम को लेकर बड़ा सिलेक्टिव रहा हूं। ऐसे में इतने बड़े बिल्डर और उनका काम है यह सोचकर मैं तो शुरू में काम करने को लेकर अधिक उत्साहित नहीं था। अमृत मेहता ने उन्हें मेरे बारे में बताया था और उन्हीं के साथ मैं एक बार उनसे मिलने गया। पहली ही मुलाकात में वे मुझे बोले कि '' आप काम कबसे शुरू कर रहे हैं।'' उनका यह बेबाक रवैया देखकर मैं हैरत में पड़ गया और सोचने लगा कि ये किस प्रकार के व्यक्ति हैं? न तो इन्होंने दाम की बात की न ही काम बताया और सीधे काम शुरू करने का बोल रहे हैं, पता नहीं इनके मन में क्या है? क्या पेमेंट मेरे अनुसार देंगे? क्या मुझे अपने हिसाब से काम करने देंगे? ऐसी अनेक शंकाएं मेरे मन में आने लगीं। उसके बाद उन्होंने मुझे सीधे गिरिजाशंकर साइट पर आने का बोल दिया। वहां जाने के बाद साइट पर बहुत सारा कंस्ट्रक्शन मटेरियल रखा हुआ था, इसका बहाना बनाकर मैंने फिर भी उनके काम को टालना चाहा। लेकिन उन्होंने मुझसे कहा कि यह मटेरियल भी आप ही हटवा लें, इसका जो भी ख़र्च होगा मैं दूंगा। अब उनके इस हठ को जानकर मैंने भी सोचा कि काम शुरू कर ही देते हैं जो भी होगा देखा जाएगा। लेकिन मेरे कौतुहल की सीमा नहीं रही जब उन्होंने न सिर्फ़ मुझे मेरे अनुरूप काम करने दिया बल्कि काम ख़त्म होने पर तारीफ भी की और जितना भी पेमेंट बनता था वह तुरंत ही अदा कर दिया। तब से मेरे और उनके सम्बन्ध प्रगाढ़ होते गए।

उस दौरान उनके साथ काम करने का अनुभव मैं आज भी याद करता हूं तो बड़ा भावविभोर हो जाता हूं। वे एक बिल्कुल ही विलक्षण प्रतिभा वाले व्यक्ति थे। किसी आदमी की कैसे अचूक परख करना और उस पर कितना विश्वास करना, इसकी उनमें अद्भुत क्षमता थी। कभी-कभी मैं उनकी कार्यशैली और व्यवहार का अवलोकन करता तो उनके व्यक्तित्व के अनेक पहलू मेरे सामने उजागर होने लगे। उनका व्यवसाय करने का एक अलग ही ढंग था। अपने व्यवसाय में मैंने जिन-जिन व्यक्तियों से सीख कर बातें अपनाई थी उन सबमें से विमल शेठ एक अतिमहत्वपूर्ण व्यक्ति थे। धीरे-धीरे मुझे उनकी दूरदृष्टि और सकारात्मक विचार पद्धति बहुत आकर्षित करने लगी। उनके साथ साइट विज़िट पर जाने पर मुझे पता चला कि यह व्यक्ति बाहर से भले ही सख़्त और अंदर से कितने नर्म हैं। वे कड़क स्वभाव के ज़रूर थे। काम में कोताही व बेईमानी कतई बर्दाश्त नहीं करते थे। कदाचित यही कारण था कि मेरे और उनके बीच बहुत ही प्रगाढ़ सम्बन्ध बने क्योंकि मैं भी इसी विचारधारा का पालन करता हूं। वे कहीं भी किसी से मुझे मिलवाते तो मेरे विषय में भरपूर तारीफ करते।

आध्यात्म व धर्म में उनकी गहरी रुचि थी। मैं ओशो का भक्त हूं। उनकी छत्रछाया में मैंने काफी समय व्यतीत भी किया है। उन्होंने मुझे स्वामी सत्यप्रेम की उपाधि भी दी थी। इसी कारण धर्म व आध्यात्म के विषय में भी मेरी उनसे काफी चर्चा होती रहती थी। उन्होंने कई बार अपने व्यावसायिक मित्रों की संगत में, जिनमें मैं भी उपस्थित रहता था, मेरे विषय में चर्चा की। वे कहा करते थे ''तुम्ही ह्यांचेकडे जाऊन थोडावेळ बसा'' मैं समझ जाता कि उनका इशारा ओशो की तरफ है। ओशो के प्रवचनों की पुस्तक या ऑडियो कैसेट वे मुझसे अनेक बार लेकर जाते। जब वापस करने आते तो उस विषय में हम दोनों बैठकर घंटों तक चर्चा किया करते थे। किसी भी साइट पर रोड निर्माण करने का काम हो अथवा किसी प्रकार का ट्रीटमेंट कार्य हो, उन्होंने मुझ पर हमेशा भरपूर विश्वास किया व हर चीज मेरे निर्णय के अनुसार ही की। न कभी मैंने उन्हें कोई कोटेशन दिया और न ही रेट सम्बन्धी कोई चर्चा उन्होंने मुझसे की। इतना अगाध प्रेम करने वाले और इतना विश्वास करने वाले मेरे मित्र आज मेरे साथ नहीं है, इस बात पर चाहकर भी विश्वास नहीं होता है। मैं हमेशा यह बात कहता हूं और मानता हूं कि विमलशेठ मेरे सच्चे मार्गदर्शक रहे हैं। उनसे व्यवसाय के अनेक सूत्र मैंने सीखे हैं। बारामती होस्टल का काम करते वक्त माननीय विट्ठल शेठ मनियार व माननीय शरदचंद्र जी पंवार, तलेगांव मंदिर का काम करते वक्त वहां के आ. गुरूमहाराज, केरिंग हॉस्पिटल का काम करते वक्त श्री अरविंद केरिंग व ऐसे अनेक आर्किटेक्ट व साथी बिल्डरों के समक्ष वे मेरे बारे में जितनी तारीफ करते थे, वह मेरे जीवन की अमूल्य निधि व सच्ची कमाई है, ऐसा मैं समझता हूं। भले ही आर्थिक रूप से वे बहुत सक्षम और समृद्ध थे लेकिन इसका लेशमात्र भी दंभ उन्हे कभी नहीं हुआ। पैर उनके हमेशा ज़मीन पर रहे। अपने साथ या अपने से नीचे काम करने वाले व्यक्तियों के प्रति उनका प्रेमभाव निस्सीम था।

वे हर प्रकार से प्रयत्नशील रहते थे कि उनके साथ-साथ वे सभी तरक्की करें जो उनसे जुड़े हैं। मेरे परिजनों से भी बड़ी आत्मीयता थी। मेरे बंगले के निर्माण के समय उन्होंने बहुत रुचि दिखाई और हर प्रकार से मुझे सुझाव भी दिए और सहयोग भी दिया। उनकी फराखदिली ही कहेंगे कि मेरे घर और विशेषकर मेडीटेशन हॉल के विषय में वे हमेशा तारीफ करते थे। इतने छोटे जीवनकाल में इतनी विराट कीर्ति अर्जित करने वाले ऐसे महान व्यक्तित्व को मैं कोटि-कोटि प्रणाम करता हूं।

जयंतराव दत्तात्रेय पानसे

जयंतराव दत्तात्रेय पानसे

विमल कुमार जी के लिए तो जो बोला जाए कम है। यूं देखा जाये तो हम दोनों एक दूसरे के लिए वेंडर और क्लाईंट ही थे, लेकिन आज मैं उनके लिए यह लिख रहा हूँ, यह इस बात का सबूत है कि हमारे संबंध कितने अच्छे रहे होंगे। 1967 में मेरी विमल जी से मुलाक़ात हुई थी। अशोक बेहरे जी, राठी जी आदि सब कॉमन दोस्त ही थे। मैं पेंटिंग के कांट्रैक्ट लिया करता था। उसी सिलसिले में हम लोगों के व्यावसायिक संबंध भी शुरू हुए लंबे चले। मेरा अक्सर ललित जी के साथ प्रशासनिक कार्यों से कलेक्टर या म्युंसिपल कार्यालय जाना होता रहता था। कुछ अधिकारीगण जैसे दिनेश अफजलपुरकर (1962 बैच के IAS) आदि से हमारे बड़े ही घनिष्ठ संबंध रहे।

उनसे घनिष्ठ संबंध होने के कई कारण थे लेकिन सबसे बड़ा कारण था कि हमारी वेवलेंथ एक जैसी थी। हम कई विषयों पर एक जैसी राय रखते थे। व्यवसाय में स्पष्टता, ईमानदारी हम दोनों को ही बहुत पसंद थी। यही कारण था कि इतने सालों के व्यावसायिक गठजोड़ के बाद भी आज तक किसी भी प्रकार का कोई विवाद या परेशानी न हमें उनके साथ आई और न ही उन्हें हमारे साथ। उनका व्यापार करने का नज़रिया व्यापक था। बड़ी सोच और बहुत ही विनम्र व्यवहार ने उन्हें तरक्की दिलाई। उनके संबंध न सिर्फ रियल इस्टेट से जुड़े लोगों से थे बल्कि समाज के हर वर्ग और हर तरह के लोगों से उनके बहुत ही सौहर्द्रपूर्ण संबंध रहे। कार्पोरेशन और सरकारी कार्यालयों में ऊपर से लेकर नीचे तक के अफसरों और अधिकारी-कर्मचारियों से वे समान गर्मजोशी से मिलते थे और बदले में समान आदर उन्हें मिलता रहा।

उनके संस्कारों का ही असर है कि दोनों बच्चे उनकी विचारधारा को आगे बढ़ा रहे हैं और सबके साथ उनके संबंध पूर्ववत ही बने हुए हैं। मुझे याद है कि 1985 से हम लोग मिलन समारोह रखते थे। मुझे गर्व है कि मैं उस मिलन समारोह का एक हिस्सा होता था। व्यापार में वे क्लीन डील पर विश्वास रखते थे। आर्किटेक्चर, कंस्ट्रक्शन आदि के बारे में उनका ज्ञान विस्तृत था। उनके समग्र जीवन से आप कई सीखें ले सकते हैं। परिवार, दोस्त, कर्मचारी, समाज, व्यापार, सहयोगी सबका उन्होने समान रूप से ध्यान रखा और सबके भले के लिए जीवन भर तत्पर और तैयार रहे। उनके पास यूं तो संपत्ति और धन ईश्वर ने बहुत दिया लेकिन मेरी नज़र में धन से भी मूल्यवान चीज़ जो उनके पास थी वह थी अटूट रिश्तों की एक शृंखला जो कि उनके जाने के बाद भी उनकी स्मृतियों से सबको जोड़े रखे हुए है। उनके रूप में मैंने एक दोस्त, सलाहकार, दार्शनिक और जीवन का एक बहुत ही अमूल्य धन खो दिया है। बस कामना यही है कि उनकी स्मृतियों को सँजोये हुए उनके दोनों बेटे और कुमार समूह के अन्य सभी लोग समूह को इसी तरह सफलता के सोपान चढ़ाते रहें।

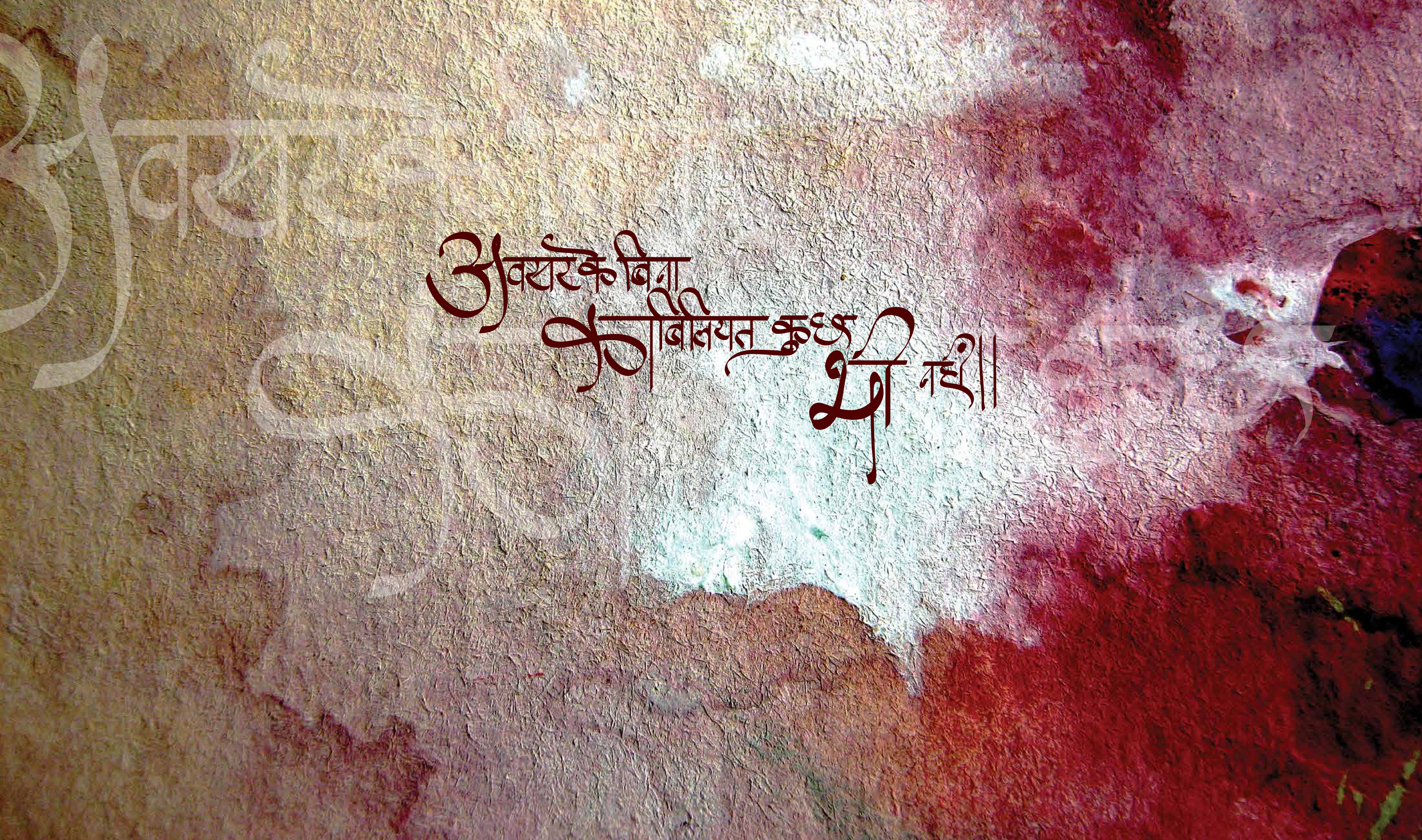
अवसर के बिना काबिलियत कुछ भी नहीं॥

पीएच पेशवे

पुणे शहर में पिछले 20 सालों में प्रॉपर्टी, रियल इस्टेट तथा निर्माण व्यवसाय में अभूतपूर्व तरक्की हुई है और इस तरक्की में कुमार प्रॉपर्टीज़ समूह का बहुत बड़ा योगदान है। ऐसा बहुत कम देखने को मिलता है जब कोई बिल्डर समूह का मुखिया अपने शहर के प्रति विकासवादी सोच तथा रवैया रखे। विमल कुमार जी में यह गुण था। वे इस शहर से बहुत प्यार करते थे। अक्सर इनफॉर्मल बातचीत में वे शहर के बारे में, यहां हो रहे विकास के बारे में, मास्टरप्लान के बारे में तथा क्या किया जाना चाहिए, इस बारे में मुझसे चर्चा किया करते थे। मेरे ऑफिस तक आने के लिए बीआरटीएस (बस रैपिड ट्रांज़िट सिस्टम) रोड से होकर आना पड़ता है। वे बीआरटीएस की सफलता को लेकर सशंकित थे। उनकी दूरदृष्टि तथा दक्षता का अंदाज़ा इसी से लगाया जा सकता है कि बीआरटीएस पूरा होने के बाद इस क्षेत्र में ट्रैफिक की समस्या घटने की बजाए बढ़ गई है।
यूं तो कुमार समूह तथा विमलकुमार जी से मेरा परिचय काफी पुराना है लेकिन व्यावसायिक रूप से हमारे सम्बन्ध 1994-95 से प्रारम्भ हुए। हमारी फर्म उनके प्रोजेक्ट्स की लाइज़निंग तथा कॉर्पोरेषन संबंधित कार्य देखती है। उनसे कई बार पीसीआरएफ, बीआइए तथा क्रेडाई के आयोजनों में भी मुलाकात होती रहती थी। मैं उनकी हाज़िर जवाबी तथा प्रेज़ेंस ऑफ माइंड का बड़ा कायल था। शायद उनकी इसी क्षमता का कमाल था कि उनके लिए हुए निर्णय बहुत त्वरित तथा सटीक होते थे। मुझे कभी भी उनके साथ काम करते हुए किसी भी प्रकार की समस्या नहीं हुई। वे बहुत आसानी से उपलब्ध थे। हम उनके सामने जाने से या बात करने से शुरू में कतराते थे लेकिन एक दो मुलाकातों के बाद से ही झिझक जाती रही क्योंकि उनका व्यवहार बहुत दोस्ताना हुआ करता था। उन्होंने हमेशा नई पीढ़ी को बढ़ावा दिया। वे ज़िम्मेदारियां देने में विश्वास करते थे। वे अपने साथ जुड़ने वाले हर व्यक्ति को समृद्ध तथा बढ़ता हुआ देखना चाहते थे, यही कारण रहा कि उनके साथ-साथ इस शहर के कई फ्रेशर आर्किटेक्ट्स एवं इजीनियर्स ने अपने करियर की नई उंचाइयों को छुआ। कुमार समूह ने उनके आदर्शों को अपनाकर सिर्फ पुणे ही नहीं बल्कि मुंबई तथा बैंगलुरू में भी अपनी सुदृढ़ उपस्थिति दर्ज कराई है। हमें कभी भी कुमार समूह से जुड़े किसी भी व्यक्ति से किसी भी प्रकार के व्यवहार के दौरान कोई परेशानी का सामना नहीं करना पड़ा। वे हमेशा पुणे से प्यार करने वाले विकासवादी तथा सुधारक व्यक्तित्व के रूप में याद किए जाएंगे।

एडवोकेट एस के जैन

1965 में मैंने फर्ग्युसन कॉलेज में विज्ञान में स्नातक करने के लिए प्रवेश लिया। उसी कक्षा में विमल ने भी प्रवेश लिया था तथा हमारी पहली मुलाकात वहीं हुई। एक तो हम दोनों ही हिंदी माध्यम के विद्यार्थी थे तथा दोनों ही जैन समुदाय से थे अतः जल्दी ही हम दोनों अच्छे दोस्त हो गए। विमल के बचपन के दोस्त श्री दिलीप मेहता से भी मेरा परिचय वहीं हुआ। इस तरह से जल्द ही हमारा एक ग्रुप बन गया और हम साथ-साथ घूमने फिरने तथा पढ़ाई करने लगे। उस समय तक विमल के पिताजी श्री केसरीमलजी ने कुमार प्रॉपर्टीज़ की स्थापना नहीं की थी। उनका प्राइवेट मनीलेंडिंग का व्यवसाय था। हांलांकि प्रथम वर्ष के बाद ही विमल ने वाडिया कॉलेज में प्रवेश ले लिया किंतु मैं फर्ग्युसन कॉलेज में ही रहा। इस दौरान सेठजी ने एक बिल्कुल ही नई अवधारणा के साथ प्रॉपर्टीज़ के क्षेत्र में कदम रखा तथा बिल्ट ऑपरेट ट्रांसफर की प्रक्रिया को रियल इस्टेट के क्षेत्र में संभवतः सम्पूर्ण भारत में सर्वप्रथम लागू किया। कुछ ही समय बाद विमल भी उनके साथ व्यवसाय में संलग्न हो गया। हांलांकि हम दोनों के साथ ही साथ हमारे पिताजी भी एक दूसरे से परिचित थे। मेरे पिताजी श्री कुंदनमल जी जैन का ज्युलरी का व्यवसाय था तथा उनकी और सेठजी की अच्छी जान-पहचान थी।

कॉलेज अलग-अलग होने के बावजूद भी अक्सर रविवार की छुट्टी का दिन हम साथ में बिताते और विभिन्न विषयों पर चर्चा करते, विमल के साथ साइट्स पर जाते या ऐसे ही आसपास कहीं घूमने निकल जाते। मेरी कॉलेज की पढ़ाई खत्म होने के बाद 1966-67 में मेरी सगाई हुई जिसमें विमल और अन्य सभी मित्र शामिल हुए। मेरी पत्नी तथा विमल की माताजी राजस्थान में एक ही गांव से थी। इस कारण से हमारा पारिवारिक मेलजोल भी बाद में और प्रगाढ़ हो गया। वस्तुतः हमारा सम्बन्ध दोस्ती से कहीं आगे बढ़ गया था तथा हम दोनों एक दूसरे के परिवारों के अनन्य हिस्से बन गए थे। 1972 के बाद से मैं लॉ की पढ़ाई में तथा प्रैक्टिस में संलग्न हो गया तथा विमल अपने व्यवसाय में अतः हमारा मिलना बहुत कम हो गया। लेकिन 1980 में दादावाड़ी मंदिर ट्रस्ट के प्रथम गठन के समय हमारी मुलाकातों का दौर फिर से प्रारंभ हो गया। हम दोनों ही प्रथम ट्रस्ट में सदस्य थे। हम दोनों ही अपने-अपने व्यवसायों में अच्छे से स्थापित हो चले थे। फिर भी विमल का और मेरा व्यावसायिक गठजोड़ उस समय तक नहीं हुआ था। 1984 के आसपास किसी एक मामले में विमल ने मुझसे एक एडवोकेट के नाते सलाह ली। उनके बाद से तो कुमार समूह के कई मामलों को मैं देखने लगा। दादावाड़ी मंदिर से जुड़ने के बाद तथा विमल से फिर से नज़दीकियां बढ़ने के बाद मैंने जाना कि विमल समाज सुधार, अपने अधीन काम करने वालों को लेकर, परिजनों को लेकर तथा समाज के अन्य हितैषियों को लेकर एक अलग प्रकार की सोच रखता है जो औरों की मानसिकता से पूरी तरह से हटकर थी। रियल इस्टेट के व्यवसाय में उस तरह की सोच को लेकर काम करने वाले मेरे हिसाब से तो पूरे भारत में गिने-चुने ही लोग होंगे। विमल की विचारधारा थी ''उत्तम दो, उत्तम पाओ।'' जहां एक ओर उस दौर में बिल्डर्स अधिक से अधिक जगह का उपयोग कर पूरा मुनाफा कमाने की जुगत में लगे रहते वहीं विमल अपने ग्राहकों को पूर्ण संतुष्टि प्रदान करने के लिए हरसंभव तरीके से यह सुनिष्चित करता कि ग्राहक को उनके दिए हुए मूल्य का पूरा लाभ मिले तथा किसी प्रकार की परेशानी न हो। ज़मीनों की ख़रीद-फरोख़्त तथा किस क्षेत्र में किस प्रकार की ज़मीन खरीदना है, इसे लेकर उसका विजन अद्भुत था। उसने उस समय में कई ऐसी ज़मीनें कुमार समूह के लैण्डबैंक में दर्ज कर ली थी जिनका आज के दौर में मूल्य सैकड़ों गुना है। उनके इन्हीं गुणों से प्रभावित होकर मैंने तथा मेरे भाई भंवर जैन ने दो प्रोजेक्ट्स: कोहिनूर प्लाज़ा तथा नीता पार्क में उनके साथ साझेदारी की थी। दोनों ही प्रोजेक्ट आज पुणे की प्राइम लोकेशंस पर हैं। जब हम पढ़ाई कर रहे थे तभी मैंने विमल के व्यक्तित्व का एक गुण अच्छे से परखा था वह था उसकी तीक्ष्ण मेधा तथा बेहतरीन ग्राह्य क्षमता। किसी भी नई चीज़ के प्रति उसकी ग्राह्य क्षमता बहुत ही तेज़ थी। सीखना और उस विषय पर शीघ्र ही कुशलता प्राप्त कर लेना, यह उसके लिए बहुत ही आसान था। इसका प्रमाण एक सीधा है कि इंजीनियरिंग तथा आर्किटेक्चर की कोई औपचारिक पढ़ाई अथवा डिग्री न होने के बावज़ूद इन दोनों विषयों पर उसके अद्भुत आधिपत्य का लोहा उनके अधीन काम करने वाले इंजीनियर तथा आर्किटेक्ट खुद मानते हैं।

समाजसेवा के प्रति उसमें एक जुनून की भावना थी। पीएमसी में वरिष्ठ अधिकारियों तथा राजनेताओं से मिलकर वह अक्सर रास्तों, चैराहों तथा पब्लिक पार्कों को बनाने को लेकर सुझाव देता रहता और कई चौराहों तथा रास्तों के सौंदर्यीकरण के लिए उसने स्वयं आगे रहकर प्रयास किए व कुमार समूह की ओर से वहां सौंदर्यीकरण करवाया। अपने मित्रों तथा हितैषियों के लिए भी प्रॉपर्टी सहित अन्य किसी भी प्रकार की मदद के लिए वह हमेशा तत्पर रहता था। थुबे पार्क स्थित मेरे कार्यालय वाली ज़मीन मैं कुछ पार्टनर्स के साथ लेना चाह रहा था। ज़मीन की स्थिति और स्थान देखकर विमल ने मुझे सलाह दी कि पार्टनरशिप के बजाए मैं स्वयं ही वह ज़मीन लूं। इसके साथ ही वहां बनाई जाने वाली इमारत की पूरी प्लानिंग, मेरे ऑफिस का इंटीरियर आदि सबकी प्लानिंग उसने ही की। धर्म तथा ज्योतिष को लेकर उसके विचार बहुत उच्च थे। वास्तु के लिए तो अपने परिजनों सहित सभी दोस्तों को भी वह समय समय सही सलाह दिया करता था।

परिवार में एक बड़ा भाई तथा बड़ा बेटा होने के सभी कर्तव्य उसने निभाए। पिताजी की मृत्यु के बाद उसने माताजी की सभी इच्छाएं पूरी की तथा अपने छोटे भाइयों व खुद के व उनके बच्चों के बेहतर भविष्य के लिए हरसंभव उपाय किए। हांलांकि एक ऐसा क्षण भी विमल के जीवनकाल में आया जो कि उसके लिए बहुत दुःखदायक था। जब ललित ने उससे अलग होने की घोषणा की, वह एक अप्रत्याषित क्षण था जिससे कि भविष्य की पूरी दशा-दिशा बदल गई। उस पूरे वाकये में तथा उनके शांतिपूर्ण अलगाव का मैं एक प्रमुख साक्षी था। हांलांकि दोनों की पक्षों ने बड़ी ही समझदारी और सूझबूझ के साथ यह प्रक्रिया निपटा ली तथा दोनों ही उसके बाद से अच्छी तरक्की कर रहे हैं। यही बड़ी सुकून की बात है। मेरे विचार में विमल सिर्फ एक व्यक्ति नहीं था वह एक सम्पूर्ण विचारधारा थी जिससे हर कोई प्रेरणा ले सकता है। अपने अल्प जीवन में उसने एक मित्र, व्यवसायी, परिजन, घर के मुखिया, समाज के एक सदस्य तथा सबसे महत्वपूर्ण एक अच्छा इंसान होने की सभी जिम्मेदारियां पूरी की तथा अपने पीछे वह एक इतनी पुख्ता साख और सीख छोड़ गया है जो इस परिवार, प्रतिष्ठान तथा सम्पूर्ण समाज के लिए मील का पत्थर साबित होगी। उसका जाना महज़ भौतिक है। वस्तुतः अपनी यादों व अपने आदर्शों के साथ वह हमेशा ही हम सभी के बीच जीवंत है और रहेगा।

रामकुमार राठी

आर्किटैक्ट रामकुमार राठी

कुमार समूह से मैं बहुत शुरूआत से ही जुड़ा हुआ हूं। मैं तथा आर्किटेक्ट केशव देसाई संभवतः कुमार समूह के सबसे पहले तथा सबसे अधिक समय तक जुड़े रहने वाले आर्किटेक्ट, कंसल्टेंट तथा पार्टनर हैं। हमारी फर्म स्ट्रक्चर्स ने प्रारंभिक वर्षों में कुमार समूह के सबसे अधिक प्रोजेक्ट्स पर काम किया है। 1970 में विमल ने उनके एक प्रोजेक्ट सोमानी मार्केट को लेकर मुझसे सम्पर्क किया था। वह मेरा कुमार के साथ पहला प्रोजेक्ट था। वह उनका भी शुरुआती दौर ही था। तब से लेकर वर्तमान तक, हम आपस में एक दूसरे से जुड़े हुए हैं। पहले क्लाइंट फिर दोस्त तथा बाद में पारिवारिक तौर पर हमारे सम्बन्ध गहरे हुए हैं। 1976 में संयोग से हम दोनों व्यावसायिक तौर पर भी एक दूसरे से जुड़े। मेरे एक मित्र दत्ताजी गायकवाड़ तथा विमल आपस में पार्टनरशिप में कुछ प्रोजेक्ट करना चाहते थे। दत्ताजी और विमल की उस दौरान नई नई पहचान हुई थी तथा दोनों ही चाहते थे कि उनकी पार्टनरशिप फर्म में मैं भी एक हिस्सेदार के तौर पर शामिल रहूं। उन दोनों के आग्रह पर मैंने उसके लिए हामी भर दी तथा कुमार गायकवाड़ जेवी में मैं भी एक पार्टनर बना। हम लोगों ने साथ में कुछ प्रोजेक्ट्स भी किए। हांलांकि मैं 1979 में उस फर्म से अलग हो गया। उसी वर्ष मेरी, विमल की तथा श्री अशोक बेहरे की पार्टनरशिप फर्म कुबेरा (कुमार बेहरे राठी) अस्तित्व में आई व हमने आनंद सोसायटी, कुबेरा गुलशन, कुबेरा पार्क सहित तकरीबन 10 से अधिक प्रोजेक्ट्स पर साथ में काम किया। विमल के व्यक्तित्व के विषय में कई बातें मुझे उस दौरान जानने में आई तथा मैं बहुत प्रभावित भी हुआ। वह मेरा एक बड़े भाई की तरह आदर करते थे। हम लोगों का तकरीबन रोज़ ही मिलना होता था। कभी ड्राइंग्स के सम्बन्ध में तो कभी किसी साइट की विज़िट पर। व्यवसाय के प्रति उनका नज़रिया बहुत व्यापक था तथा पुणे शहर से उन्हें बहुत प्यार था। दोस्ताना व्यवहार, शांत सौम्य व्यक्तित्व तथा बेहद विनीत स्वभाव यह विमल की पहचान थे। कभी मैंने उनके माथे पर लकीरें नहीं देखीं जो चिंता के समय किसी व्यक्ति के चेहरे पर आती हैं। अपने काम के प्रति उनमें एक लगन थी, एक समर्पण का भाव। यही समर्पण था जिसने कुमार समूह को आसमान की बुलंदियों तक पहुंचा दिया। मैं संस्था का फाउंडर प्रेसिडेंट था तथा विमल उसके कुछ फाउंडर मेम्बर्स में से एक थे। कंस्ट्रक्शन के क्षेत्र में रीसर्च व डेवलपमेंट को लेकर तथा पुणे शहर के समीचीन विकास को लेकर वे हमेशा कुछ न कुछ करते रहते थे। हम कुछ लोगों के प्रयासों से ही हमने पुणे कंस्ट्रक्शन इंजीनियरिंग रीसर्च फाउण्डेशन की स्थापना की थी। स्वभाव से वह बड़े ही दयालु थे तथा जैन धर्म की शिक्षाओं में उनकी गहरी आस्था थी। उन्होंने कई धर्मार्थ संस्थाओं की खुद स्थापना की या जो पहले से थी उनके कार्यकलापों में बढ़-चढ़ कर हिस्सा लिया। समाज के अन्य तबकों में भी विमल का बड़ा आदर था। हर वर्ग व समुदाय में होने वाले सामाजिक कार्यक्रमों में वे न सिर्फ शामिल होते बल्कि यह सुनिश्चित करते कि उस आयोजन में किसी प्रकार की कमी न होने पाए। जितने भावुक इन मामलों में थे उसके ठीक विपरीत उतने ही सख्त मिज़ाज़ काम के मामले में थे। काम में लापरवाही या गैरजिम्मेदारी उनके लिए असहनीय थी। अगर कहीं किसी सौदे में या किसी प्रोजेक्ट के सम्बन्ध में थोड़ी भी उंच-नीच या बेईमानी की बात सुन लेते तो चाहे उससे कितना ही लाभ होता हो, वे आगे नहीं बढ़ते। ग्राहकों के प्रति वे हमेशा समर्पित थे। इसीलिए कभी भी कुमार के किसी भी प्रोजेक्ट में दोयम दर्जे का मटेरियल इस्तेमाल नहीं किया गया। विमल की अप्रत्याशित मृत्यु हम सबके लिए एक गहरा धक्का है। उसके साथ बिताया हुआ एक एक पल आंखों के आगे घूम जाता है। विमल जैसी शख्सियत को भूलना नामुमकिन है। वे हम सबकी स्मृतियों में सदैव जीवंत रहेंगे।

श्री जयकुमार भण्डारी

श्री जयकुमार भण्डारी

श्री विमल कुमार जैन से मेरा परिचय 1970 के आसपास हुआ। तब तक इनके पिताजी कुमार एंड कंपनी के नाम से निर्माण व्यवसाय में कदम रख चुके थे, लेकिन विमल उस समय उम्र में छोटे भी थे और पढ़ भी रहे थे। मेरा वाकड़ेवाड़ी में शोरूम था और वहाँ पर पहली बार आए थे। इनके भाई केवल गिफ्ट आर्टिकल्स पर प्रिंटिंग का काम किया करते थे और मैंने शायद दिवाली के समय गिफ्ट देने के लिए कुछ केल्क्युलेटर प्रिंट होने दिये थे और उसी की डिलिवरी देने विमल वहाँ आए थे।

पहली मुलाक़ात सतही ही थी और मैं उस समय उस व्यक्ति की गहराई को नहीं समझ पाया था। मेरे पिताजी के और श्री केसरीमल जी के भी अच्छे संबंध थे। जैन समाज के ही होने की वजह से धार्मिक और अन्य आयोजनों में मुलाक़ात हो जाती थी। धीरे-धीरे जब इन्होने खुद निर्माण व्यवसाय में अपनी साख कायम करना शुरू की तब कहीं जाकर मुझे लगा कि यह व्यक्ति विलक्षण प्रतिभा का धनी है।

बोली में मिठास, काम में ईमानदारी और स्पष्टता, संबंध निभाने की अद्भुत कला और बहुत ही मददगार स्वभाव, इन गुणों से मैं उन्हे याद करता हूँ। अपने भाइयों, दोस्तों, परिचितों मिलने जुलने वालों, सबकी उन्होने भरपूर मदद की। इंदर की असामयिक मृत्यु के बाद जिस आत्मीयता और बड़प्पन का परिचय देते हुए उन्होने पूरे परिवार को सम्हाला है, वह आजकल बहुत ही कम देखने को मिलता है। इंदर की बेटी की शादी में भी उन्होने कोई कमी नहीं रहने दी। उस शादी में मेहमानों को दिये महालक्ष्मी माता के चार सिक्के आज भी मेरे ऑफिस की टेबल पर रखे हैं और उनकी याद दिलाते हैं।

अलीबाग में मेरे पोते की शादी थी और ठीक उसके अगले दिन अशोक बेहरे जी के यहाँ भी एक शादी थी। वे सपत्नीक उस शादी में शामिल हुए और सुबह दोनों पति-पत्नी मेरे पास आए और बहुत ही आदर से विदा लेते हुए कहा कि बेहरे जी के यहाँ जाना है। उनकी इस सहृदयता ने मेरा दिल जीत लिया। वरिष्ठों को मान देना और संबंध निभाना उनके प्रमुख गुण थे।

उनकी हिम्मत की भी मैं दाद देता हूँ। एक मुलाक़ात में उन्होने कहा था कि व्यवसाय में हिम्मत ही सबसे बड़ी चीज़ है। हिम्मत करके शुरू करना, और कर-कर के सीखना इसी से व्यवसाय में तरक्की संभव है। वे हमेशा एक सम्मानित व्यक्ति रहे। उनके कहे को मान दिया और उनके किए की सबने हमेशा तारीफ ही की। एक ऐसे व्यवसाय में, जहां पर लोग यह मानकर ही चलते हैं कि विश्वास नहीं करना है, उसमें उन्होने अपने समूह की जो साख और ग्राहकों के मन में जो विश्वास पैदा किया है, वह सिर्फ उनके गुणों की ही वजह से संभव हो सका है।

उनकी मृत्यु उनसे जुड़े हर व्यक्ति के लिए गहरा आघात देने वाली दुर्घटना रही। काल के क्रूर प्रहार ने हम सब लोगों के बीच से विमल कुमार जैन जैसे व्यक्तित्व को छीन लिया। लेकिन आज खुशी इस बात को देखकर होती है कि केवल, मनीष, राजस और अन्य सभी परिजन उनके दिखाये पथ पर चलते हुए कुमार समूह को तरक्की की राह पर अग्रसर किए हुए हैं।

जब तक काम न हो जाए तो असंभव लगता है

रेखा काले

रेखा काले

(कुमार पद्मजा)

सन् 2002 में मैंने मुम्बई में एचआर-एड्मिन एक्ज़ीक्युटिव का अपना जॉब छोड़कर पुणे शिफ्ट होने का निर्णय लिया। नई जगह थी और बिल्डर्स के बारे में मुम्बई में रहने के बाद मेरे मन में कोई बहुत अच्छी इमेज नहीं थी। इंटरनेट पर सर्च कर मैंने कुल 4 बिल्डर्स को चुना तथा पुणे आकर खोज प्रारंभ की। कुमार प्रॉपर्टीज़ उनमें से एक थी। कुमार समूह के सेल्स एक्ज़ीक्युटिव ने सबसे पहले मुझे कुमार करिश्मा में फ्लेट दिखाया लेकिन मैंने कुमार पद्मजा की प्लानिंग तथा लोकेशन सही समझकर वहां अपना फ्लेट बुक किया। बुकिंग से लेकर पज़ेशन तक मुझे कुमार समूह की ओर से ज़रा सी भी परेशानी नहीं पेश आई तथा तय समय से तीन महीने पूर्व ही मुझे फ्लेट का पज़ेशन भी मिल गया। 9 जनवरी 2004 से मैंने पद्मजा में रहना भी प्रारंभ किया। यह मेरे

लिए अद्भुत अनुभव था। इसे मैंने ‘‘अनुभव’’ शीर्षक से ही एक कविता के रूप में पंक्तिबद्ध कर इंदर भाई को भेजा। मेरे आश्चर्य का ठिकाना नहीं रहा जब उन्होंने मुझे थोड़े दिनों बाद फोन कर बुलाया तथा कुमार पद्मजा के सभी ग्राहकों की मीटिंग में मुझसे वह कविता सुनी। आमतौर पर बिल्डर्स द्वारा की जाने वाली धोखाधड़ी का यहां दूर तक नामोनिशान नहीं था। इसका पूरा श्रेय जाता है श्री विमल कुमार, श्री इंदर कुमार तथा श्री केवल कुमार जैन के सही और ईमानदार नेतृत्व को। पिछले 46 वर्षों से निरंतर कुमार समूह इसी तरह अपने परिवार में संतुष्ट ग्राहकों की वृद्धि करता जा रहा है। हांलांकि विमल भाई से मेरा परिचय बाद में हुआ। पहले कुमार पद्मजा से जुड़े सभी मामलों को इंदर भाई देखते थे तथा एग्रीमेंट हमने श्री राजस जैन के साथ साइन किया था।

इंदर भाई की दुःखद मृत्यु के बाद विमल भाई से कई बार मुलाकात का मौका आया। हमारी सोसायटी के कंवेयेंस डीड ड्राफ्ट के समय हमने एक छोटा सा आयोजन किया था जिसमें बिल्डर की ओर से मिलने वाले सभी दस्तावेज़ हमें तुरंत दे दिए गए तथा कुमार पद्मजा सोसायटी का भी गठन हुआ। कंस्ट्रक्शन के दौरान भी साइट पर काम करने वाले सभी स्टाफ की ओर से हमें हर बार हर संभव मदद मिली। इंदर भाई के बाद विमल भाई ने हमें सोसायटी से संबधित विभिन्न मुद्दों पर हमारी मदद की। सोसायटी का क्लब हाउस तथा स्विमिंग पूल किन्ही अपरिहार्य कारणों से नहीं बन सका। विमल भाई ने तत्परता से इस हेतु हमारी जमा रकम हमें समय पर लौटा दी। वे बहुत ही नम्र स्वभाव के तथा ग्राहक हितैषी व्यक्ति थे। हमारे द्वारा सोसायटी की मीटिंग में बुलाने पर वे मात्र एक ही फोन कॉल में राज़ी हो गए तथा तय समय पर मीटिंग में आए और हमारी क्वेरीज़ को सॉल्व किया।

हमें कभी यह लगता ही नहीं था कि हम लोगों का सम्बन्ध बिल्डर और ग्राहक का है बल्कि हमेशा एक पारिवारिक सदस्य के तौर पर हमें सम्मान दिया गया। आज विमल भाई व इंदर भाई हम लोगों के बीच नहीं हैं लेकिन उनसे जुड़ी हुई यादें तथा कुमार प्रॉपर्टीज़ से मिलने वाला अविस्मरणीय सहयोग अभी भी यथावत है। मैं कामना करती हूं कि यह समूह इसी तरह सफलता की राह पर अग्रसर रहे।

आर्किटेक्ट गोखले

आर्किटेक्चर के क्षेत्र में जब आप फील्ड में आते हैं तभी आपकी असली ट्रेनिंग शुरू होती है। 1981 में आर्किटेक्चर में स्नातक करने के बाद मैंने देसाई राठी असोसिएट्स में बतौर आर्किटेक्ट जॉइन किया था। उस समय देसाई राठी फर्म के पास कुमार समूह के लगभग सभी प्रोजेक्ट्स का काम होता था। मैं फील्ड में एकदम नया था और मैं खुशनसीब रहा कि मेरे करियर का पहला ही काम मुझे कुमार ग्रुप का मिला। उस समय औंध स्थित कुमार क्लासिक का आर्किटेक्चरल तथा लाइज़निंग वर्क चल रहा था और मैं सबसे पहले विमल जी तथा कुमार समूह से उसी प्रोजेक्ट के माध्यम से जुड़ा।

विमल जी का तकरीबन रोज़ाना ही ऑफिस आना होता था। कभी काम के सिलसिले में तो कभी ऐसे ही केशव देसाई साहब या रामकुमार राठी साहब से मुलाकात करने हेतु वे ऑफिस आते रहते थे। ऑफिस आने पर वे सभी स्टाफ के सदस्यों से हंसकर मिलते और बातचीत करते। उनकी सादगी और आदरपूर्ण व्यवहार से मैं बहुत प्रभावित हुआ था। कुमार क्लासिक तथा अन्य कई प्रोजेक्ट्स पर उनके साथ काम करते हुए मैंने अपनी ही फील्ड के कई बेहतरीन गुर उनसे सीखे। वे आर्किटेक्ट न होते हुए भी इस क्षेत्र में गहरा ज्ञान रखते थे। उनका पूरा अप्रोच प्रेक्टिकलिटी लिए हुए था तथा उनके सुझाव व करेक्शन्स वाकई में बेहद सटीक होते थे। मेरे लिए तो विमल जी एक गॉडफादर की तरह हैं। 1994 में मेरे मित्र (बाद में पार्टनर) आर्किटेक्ट दोशी, जो कि मेरे साथ देसाई राठी असोसिएट्स में ही थे, ने सेल्फ प्रैक्टिस शुरू की और काम के सिलसिले में विमल जी से मिले। विमल जी उनसे बोले के यदि शशि और तुम मिलकर करोगे तो मैं एक प्रोजेक्ट शुरू करने वाला हूं, उसका पूरा काम तुम्हे दे दूंगा। उसके बाद मैंने भी देसाई राठी असोसिएट्स से नौकरी छोड़ दी तथा आर्किटेक्ट दोशी के साथ ख़ुद की फर्म प्रारंभ की। हमारी फर्म का पहला प्रोजेक्ट था कुमार पार्क। मेरी ही तरह उन्होंने कई ऐसे लोगों की मदद की तथा आत्मनिर्भर बनाया जो उनसे जुड़े। वे अपने से जुड़ने वालों की भलाई के लिए ख़ुद आगे होकर सलाह देते थे और उनसे हो सकने वाली हरसंभव मदद करते थे।

उनके साथ वर्षों तक काम करने के बाद मैं उनकी वर्किंग स्टाइल को समझ गया था। वे प्लानिंग फेज़ में क्या-क्या चाहते हैं, उन्हें किस तरह की डिज़ाइन पसंद आएगी इन चीज़ों का मुझे अंदाज़ा हो चला था। उन्हें भी पूरा विश्वास था कि अगर काम मेरे पास है तो वह उनके अनुरूप ही होगा। कई बार ऐसा भी हुआ कि उन्होंने किसी अन्य आर्किटेक्ट द्वारा बनाई हुई ड्राइंग पर भी चर्चा करने के लिए मुझे बुलाया और उसमें मैंने उनके अनुसार सुधार बताए। कमर्शियल और रेसीडेंशियल प्रोजेक्ट्स के अलावा उन्होंने मुझे दादावाड़ी मंदिर प्रांगण में होने वाले निर्माण तथा ऐसे ही एक दो अन्य सामाजिक भवनों का भी काम पूर्ण विश्वास से दिया। मुझे उनकी डीटेलिंग पर गहरी पकड़ काफी प्रभावित करती थी। वे हर एक प्रोजेक्ट को पिछले से अच्छा बनाने का प्रयास करते थे और यदि आप कंपनी की वर्कलिस्ट देखें तो आपको यकीन हो जाएगा कि वे इसमें सफल भी हुए। चूंकि हर प्रोजेक्ट का एक अलग लोकेशन, दिशा, ग्राहक वर्ग तथा डिज़ाइन होता था अतः वे उसी के अनुरूप प्लानिंग फेज़ में ही पूरी तैयारी कर लेते थे। वे एक पर्फेक्शनिस्ट थे। यही कारण है कि आज कुमार प्रॉपर्टीज़ के किसी भी प्रोजेक्ट में क्वालिटी से कोई समझौता नहीं होता है। वॉल्स, सीलिंग से लेकर सेनिटरी तक हर चीज़ उच्च गुणवत्ता की तथा लंबी उम्र वाली होती हैं। इसीलिए कुमार समूह के ग्राहकों को कभी भी आफ्टर सेल्स होने वाली परेशानियों से नहीं जूझना पड़ता है। इस क्षेत्र में काम कर रहे अन्य लोगों के मुकाबले वे ग्राहकों के लिए सदैव पहुंच में थे। उनके जीवन के अंतिम दिन मेरा उनसे शाम 5.30 बजे का अपॉइंटमेंट था। किसी ड्राइंग के सिलसिले में वे मुझे कुछ करेक्शन्स बताने वाले थे। मैं ड्राइंग को अंतिम रूप दे ही रहा था कि वह दुःखद खबर आ पहुंची कि वे एक भयानक हादसे में वे नहीं रहे। मैं क्षणभर के लिए तो ठगा सा रह गया। जहां था वहीं का वहीं खड़ा रह गया। एक दो फोन लगाकर यह खबर पक्की की और तुरंत हॉस्पिटल के लिए रवाना हुआ। वहां उनसे जुड़े हुए लोगों तथा अन्य शहरवासियों का सैलाब लगा हुआ था जो कि इस बात का प्रमाण था कि पुणे शहर ने क्या खोया है। मेरी स्मृतियों में वे सदैव एक गुरू, एक पितृतुल्य व्यक्ति तथा गॉडफादर की तरह अंकित रहेंगे।

प्रभाकर टेलर्स

प्रभाकर टेलर्स

पुणे शहर में तेज़ी से बढ़ती जनसंख्या के फलस्वरूप अब अपार्टमेंट लिविंग का प्रचलन बढ़ गया है और इसी की वजह से अब लोगों में पड़ोसियों से मेल-जोल की भावना ख़त्म होती जा रही है। लेकिन हमारे दौर में ऐसा नहीं था। 1958 में मैंने केदारी रोड़ पर अपनी टेलरिंग शॉप खोली। मेरे ठीक सामने श्री केसरीमलजी का घर था। उस वक्त कुमार कंपनी की स्थापना नहीं हुई थी तथा सेठजी का प्राइवेट बैंकिंग का व्यवसाय चल रहा था। बहुत जल्दी ही उस परिवार से काफी घनिष्ठता हो गई। एक दूसरे के घर आना-जाना सुख-दुख बांटना प्रारंभ हो गया। एक ख़ास बात जो इस परिवार में है वो यह कि सभी बहुत मिलनसार प्रकृति के हैं। इसके साथ ही वे हमारे नियमित ग्राहक भी बन गए। विमल भाई, केवल भाई, सेठजी इन सबके कपड़े हमारे यहां ही सिलने आते थे। वैसे इस रूप में हमारे व्यावसायिक सम्बन्ध आज भी कायम हैं।

कुमार प्रॉपर्टीज़ के कर्मियों की यूनिफॉर्म हमारे यहां ही सिली जाती है। केसरीमलजी ने जब प्रापर्टी का काम शुरू किया तब इस क्षेत्र में बहुत ही कम व्यवसायी मौजूद थे। उन्होंने अपने रिश्तेदार के साथ काम प्रारंभ किया और जल्दी ही अच्छा नाम कमा लिया। हमने भी उनके प्रारंभिक प्रोजेक्ट्स में से एक में दुकान और कुमार हाउस नामक प्रोजेक्ट में दुकान तथा फ्लेट खरीदा था। आज कुमार कंपनी बहुत बड़ी रियल इस्टेट कंपनियों में से एक है लेकिन आज भी इस परिवार के साथ हमारे सम्बन्धों में कोई फर्क नहीं आया है। विमल भाई ने सेठजी के बाद हर चीज़ व्यवसाय, परिवार, सम्बन्ध आदि को इतने बेहतर ढंग से निभाया है और अपने बाद की पीढ़ियों को भी इतनी अच्छी शिक्षा और समझ दी है कि यह कंपनी और यह परिवार इसी तरह से तरक्की करता रहेगा, यह मेरा यकीन भी है और शुभेच्छा भी।

डॉ. रमेश केरिंग

विमल और मैं दोस्त भी थे और हितैषी भी साथ ही हम दोनों एक दूसरे के लिए हेल्पलाइन भी थे। मुझे कहीं कोई समस्या आती तो उनसे चर्चा करता और उन्हे कोई परेशानी होती तो मुझसे बात करते। हमारी दोस्ती सिर्फ हम तक ही सीमित नहीं थी बल्कि हम पारिवारिक रूप से भी बहुत ही घनिष्ठता के साथ जुड़े हुए थे। मेरी पत्नी सरोज और पुष्पा भाभी भी बहुत हिले-मिले हुए हैं और हमारे बच्चे भी आपस में बहुत ही क्लोज़ हैं। हम दोनों परिवार जब पदुम जी पार्क में शिफ्ट हुए तो हमारा सुबह शाम का मिलना हो गया। साथ में चाय पीना और रात को खाने के बाद घूमने जाना होने लगा। शहर के धार्मिक आयोजनों में, दूसरे परिचितों के यहाँ सुख दुख में हमारे परिवार आपस में एक साथ ही रहते और जाते थे।

मुझे एक बार की बात याद है कि विमल के 50वें जन्मदिन पर दोनों बच्चे उन्हें मर्सिडीज देना चाहते थे। दोनों ने विमल से एक महीने पहले पूछा तो उन्होने मना कर दिया और कारण दिया कि अभी थोड़ी आर्थिक परेशानी है, बाद में लेंगे। मनीष ने मुझसे इजाजत मांगी तो मैंने भी कुछ सोच कर कहा कि खरीद लो। जन्मदिन के दिन दोनों ने चाबी उनके बेडरूम के बाहर टाँगी और उनके उठने का इंतज़ार किया। वे उठे, चाबी देखी और गुस्से में फेंक दी। मनीष ने मुझे फोन किया और बुलाया। मैं और मेरी पत्नी शाम को वहाँ गए और देखा कि विमल तो गुस्से में भी थे और मूड भी बहुत खराब था। उन्हे लेकर मैं घूमने गया और समझाने की कोशिश की। इस पर मुझसे बोले कि “मुझे मार्केट में लोगों को पैसा देना है, ऐसे समय में फिजूलखर्ची क्यों करना। मैं बड़ी गाड़ी में बैठूँगा तो मेरा स्टेटस नहीं बदलेगा, गाड़ी का ज़रूर बदल जाएगा।” इस जवाब ने मुझे निरुत्तर कर दिया। इससे पता चलता है कि वह कितने सादे विचारों वाले और केयरिंग नेचर के थे। हालांकि परिस्थिति ऐसी भी गंभीर नहीं थी कि नई गाड़ी न ले सकें, लेकिन फिजूल का दिखावा उन्हे पसंद ही नहीं था।

वे बेबाक बोलने वालों में से थे। लाग लपेट की बातें उन्हे पसंद नहीं थी। मेरी बेटी की शादी तय हुई थी और लड़के वालों को उसके पहले हमने अपने घर बुलाया था। विमल और एडवोकेट एस के जैन भी आए थे। सब खाना खाने के बाद बैठ कर बातें कर रहे थे कि मुझे गुस्से से बोले “तुमको समझ नहीं है, मेहमानों के लिए बफे स्टाइल में खाना क्यों रखा। अरे बैठ कर खिलाने में और आग्रह करने में जो अपनापन है, वह इस तरीके में कहाँ।” उसके बाद से तो मैं हर फंक्शन से पहले उनसे सलाह लेता और मैन्यू भी वही डिसाइड करते थे। इतने अपनेपन से और बेबाकी से सलाह देने वाले लोग कहाँ मिलते हैं आजकल।

मेरे पिताजी महाबलेश्वर में घर लेना चाहते थे। उसके लिए उन्होने विमल को बोला। कुछ दिनों के बाद पिताजी को किसी ने ज़मीन बताई और उसे देखने के लिए हम दोनों के परिवार साथ में गए। गाड़ी से उतरे और प्लॉट देखा और दक्षिण मुखी होने की वजह से विमल ने मना कर दिया। उसके बाद 3-4 बार इसी सिलसिले में वहाँ जाना हुआ लेकिन बात नहीं बनी। एक बार तो मुझे एक जगह बहुत पसंद आई। विमल को उसके बारे में बताया तो मुझे रात में 8.30 बजे लेकर गए और वहाँ उतरकर मुझसे पूछा कि इस जगह अकेले रह सकते हो? मुझे उनकी सूक्ष्म दृष्टि पर आश्चर्य भी हुआ और खुशी भी कि इतने अनुभवी व्यक्ति मेरे इतने घनिष्ठ हैं। आखिर 6 महीने की खोज के बाद उन्होने मेरे भाई को फोन किया और बताया कि उन्होने एक साथ 4 प्लॉट लिए हैं फिर वहाँ पर पोतनीस, गायकवाड, जैन और केरिंग परिवार के लिए बंगले बनाने की ज़िम्मेदारी भी उन्होने ली।

हम दोनों परिवारों ने देश-विदेश में कई यात्राएं भी साथ में की। एक दफा हम लोग स्विट्ज़रलैंड गए थे और वहाँ यात्रा के दौरान ही पुष्पा भाभी का जन्मदिन भी आने वाला था। मैं और सरोज हम दोनों होटल से बाहर एगलेस केक ढूँढने गए लेकिन वहाँ कहीं एगलेस केक नहीं मिला। आखिरकार हमने कुछ फूल लिए और केक की जगह प्लान किया कि आइसक्रीम लेकर चलते हैं। आइसक्रीम ली, कैंडल्स लिए और उनके होटल के कमरे में पहुंचे की याद आया माचिस भूल गए हैं। फिर से रिसेप्शन की ओर गए और माचिस लेकर आए। उस छोटे से आयोजन की मीठी यादें आज तक हमारी आँखों के सामने हैं।

वाकये तो कई हैं जो याद आते हैं, लेकिन एक भावुक क्षण ऐसा आया था जिसने हम दोनों को और करीब कर दिया। महाबलेश्वर में राजस और मनीष घोड़े पर से गिर गए थे। राजस को तो ज़्यादा चोट नहीं आई लेकिन मनीष की सर्जरी करने की ज़रूरत पड़ी और जहाँगीर हॉस्पिटल में मैंने ऑपरेशन किया। दोनों का इन्श्युरेंस था। मनीष की इन्श्युरेंस कंपनी ने जब ऑपरेशन की फीस हॉस्पिटल को लौटाई और हॉस्पिटल ने मुझे वह फीस दी तो मैं उसे देने विमल के पास गया। जैसे ही मैंने वह नकद राशि विमल को दी, उसकी आँखों में से आँसू आ गए। उससे पहले मैंने कभी उन्हे रोते नहीं देखा था। मैंने उनसे कहा कि “तुम ही बताओ, क्या मुझे यह पैसे रख लेने चाहिए।” तो कुछ नहीं बोले और धीरे से बस मुझसे हाथ मिलाकर बिना बोले ही सब कह दिया। प्यार, अपनत्व, दूसरों के प्रति सहृदयता और दयालुता, इन गुणों ने विमल को वह ऊंचाई दी जिसके वे हकदार भी थे और काबिल भी। आज उनकी मृत्यु के 3 साल बाद भी जीवन के हर ऐसे क्षण में जब कोई सुख-दुख की बात हो, तो उनकी याद सहज ही आ जाती है और आँखों में आँसू आ जाते हैं। हालांकि हमारे परिवार आज भी उतने ही घनिष्ठ हैं जितने कि पहले थे, लेकिन विमल की कमी बहुत खलती है।

रमेश केरिंग

सौभग्य की जननी है।

सुभाष शाह

सुभाष शाह

आपके जीवन के सफर में आने वाले अलग-अलग व्यक्तियों से आपके अलग-अलग रिश्ते बनते हैं और उन रिष्तों के अलग-अलग नाम होते हैं। कोई आपके परिजन होते हैं, कोई मित्र होते हैं, कुछ सिर्फ चेहरे होते हैं व कुछ हितैषी होते हैं। लेकिन यदि कोई रिश्ता ऐसे व्यक्ति से बने जिसका व्यक्तित्व और कृतित्व आपको इतने गहरे तक प्रभावित कर जाए कि आप उनसे अपने रिश्ते को कोई एक नाम नहीं दे पाएं, ऐसा बहुधा बहुत ही कम होता है। कुछ ऐसा ही रिश्ता मुझसे पूरे जीवन निभाया विमल भाई ने। मैं उन्हें अपना भाई कहूं, गुरू कहूं, हितैषी कहूं, मित्र कहूं, सम्बन्धी कहूं, जो चाहूं वो कह सकता हूं क्योंकि उनके रूप में मुझे इन सब रिश्तों को एक साथ निभाने वाला व्यक्ति मेरे जीवन में मिला।

मैं 1973 में मुम्बई से काम के सिलसिले में पुणे आया। रमेश बिल्डर्स समूह के रमेश भाई ने मुझे पुणे में पहला काम दिया। हांलांकि मैं पुणे आना ही नहीं चाहता था लेकिन रमेश भाई ने मुझे इसके लिए न सिर्फ आग्रह किया बल्कि आदेश दिया कि मुझे पुणे आ जाना चाहिए तो मैं आ गया। कैम्प क्षेत्र में मुझे उन्होंने पहला काम दिया और उसकी ओपनिंग सेरेमनी में मेरी मुलाकात श्री केसरीमलजी व विमल भाई से हुई। पहली ही मुलाकात में उनसे इतनी घनिष्ठता हो गई मानो बरसों से उनसे पहचान हो। दरअसल यह विमल भाई का बड़ा ही अद्भुत गुण था। वे किसी को भी अपना बनाने में देर नहीं करते थे। उनसे मिलने के बाद मन में एक अलग सी शांति का अनुभव होता था। उनके साथ हर कोई एक कम्फर्ट लेवल में होता था। उनके साथ धर्म, दर्शन, वास्तु, ज्योतिष आदि विषयों पर चर्चा करते हुए वक्त कैसे बीत जाता था पता ही नहीं चलता। उनसे इतनी मुलाकातों के बाद भी बड़े लम्बे अरसे तक मुझे उनके साथ काम करने का संयोग नहीं मिला था। यह सुअवसर मुझे मिला उनके विश्रांतवाड़ी के प्रोजेक्ट विश्रांत सोसायटी के साथ। वह मेरा कुमार समूह के साथ पहला प्रोजेक्ट था। उस वक्त तक हमारे सम्बन्ध इतने प्रगाढ़ हो चले थे कि उस प्रोजेक्ट के एवज में उनसे मैं क्या फीस लूं, यह तय करना मेरे लिए बड़ा मुश्किल हो रहा था। मेरे भाई जीतू भाई शाह जो मेरे ही साथ काम करते थे और विमल भाई के भी बहुत करीब थे, उन्होंने उस वक्त मेरी मदद की और एक मीटिंग में विमल भाई को मैंने अपनी फीस बताई और मुझे सुखद आश्चर्य हुआ कि उन्होंने बिना किसी परेशानी के उसे स्वीकार कर लिया। उसके बाद कभी भी मुझे उन्हें अपनी फीस बताने की ज़रूरत नहीं पड़ी। एक वक्त मुझे अचानक से बहुत अधिक रुपयों की ज़रूरत पड़ी। मुझे मुम्बई में अपने लिए एक ऑफिस खरीदना था। मुझे तो पता भी नहीं चला कि मेरे किन-किन बिलों के भुगतान के रूप में उन्होंने मुझे रुपए दिए पर उस वक्त उन्होंने एकमुश्त एक बड़ी रकम मुझे दी जिसकी वजह से मुझे वह ऑफिस ख़रीदने में बिल्कुल रुपए की दिक्कत नहीं आई। आज भी उनकी वह बात याद करता हूं तो आंखों में पानी भर आता है। इतना तो आज के समय में सगे नहीं करते जितना उन्होंने मेरा सगा न होने के बावज़ूद ध्यान रखा। ऐसे व्यक्तित्व का यूं अचानक छोड़ कर चले जाना किसी को भी विचलित कर सकता है। मेरे लिए तो वह बड़ा दुखद क्षण था जब मैंने उनके अवसान की खबर सुनी। कई व्यक्तियों को फोन किया, सर्वप्रथम तो मुझे मेरे कानों पर विश्वास ही नहीं हुआ। भला ऐसा कैसे हो सकता है। काल इतना क्रूर नहीं हो सकता। लेकिन मेरे सभी अंदेशों को सही साबित करते हुए काल ने उन्हें अपना ग्रास बना लिया।

उनकी असमय मृत्यु न सिर्फ उनके परिवार पर बल्कि उनसे जुड़े हर व्यक्ति पर एक कुठाराघात थी। उनकी दुःखद मृत्यु के बाद से मुझे तो कई बार अपने धर्मशास्त्रों में पढ़ी हुई बातों और कर्मयोग के सिद्धांतों पर फिर से विचार करने की इच्छा होती है। सबका भला चाहने वाले और बिल्कुल अपने नाम के अनुरूप किसी भी प्रकार के मलिन कार्यों से परे रहने वाले व्यक्ति के साथ भी ऐसा हो सकता है? यह प्रश्न रह-रहकर मेरे मन में आता है। लेकिन शायद यही नियति है और यही भाग्य का लेखा है। मृत्यु के बाद भी शायद कोई जीवन होगा जहां पर उनके जैसे व्यक्ति की ज़रूरत होगी, इसीलिए वे जल्दी हमें छोड़कर चले गए। ख़ैर वे भले ही भौतिक रूप से चले गए हों लेकिन उनके विचारों से और उनकी सेवाधर्मिता की वजह से वे सबकी यादों में वे सदैव जीवित रहेंगे।

सुनील मुतालिक

सुनील मुतालिक

मेरे करियर की शुरूआत देसाई राठी असोसिएट्स की फर्म स्ट्रक्चर्स के साथ हुई। मैंने 1987 में यह कंपनी स्टक्चरल इंजीनियर के तौर पर जॉइन की। देसाई राठी असोसिएट्स के पास कुमार समूह का अधिकतर काम हुआ करता था। उसी दौरान कुमार समूह के लिए काम करने का मौका मिला। श्री विमल कुमार जैन से भी पहली मुलाकात तथा जान पहचान उसी दौरान हुई थी। लेकिन 1990 में मैंने जब स्ट्रक्चर्स छोड़कर अपनी खुद की फर्म प्रारंभ की और श्री अशोक पालेशा ने मुझे व्यक्तिगत तौर पर विमल सर से मिलवाया तब से मेरा कुमार समूह से जो रिश्ता जुड़ा है वह अभी तक कायम है। कुमार समूह के साथ मेरे पहले प्रोजेक्ट कुमार कैसल से लेकर अभी तक जारी प्रोजेक्ट्स तक का मेरा उनसे जो जुड़ाव व अनुभव है, वह अभूतपूर्व रहा है। श्री विमल कुमार जैन का मेरे करियर में ही नहीं मेरे जीवन में भी महत्वपूर्ण स्थान रहा है। उन्होंने मुझे स्ट्रक्चरल इंजीनियरिंग को ब्यूटीफाई करना सिखाया। उन्होंने मेरी काबिलियत तथा प्रतिबद्धता की कद्र की और मुझ पर विश्वास कर एक के बाद एक प्रोजेक्ट दिए। आज मैं कुमार समूह के लगभग 60 प्रोजेक्ट पर काम कर चुका हूं और ईश्वर की कृपा से अभी भी कर ही रहा हूं।
कुमार समूह यूं तो प्रारंभ से ही अग्रणी रहा है लेकिन पिछले 15 सालों में समूह की छवि तथा आकार में जो वृद्धि हुई है वह अभूतपूर्व है। पुणे शहर के हर कोने में समूह के प्रोजेक्ट्स हैं। सबसे ख़ास बात यह है कि विमल सेठ ने शहर की आवश्यकताओं को नज़र में रखते हुए जैसे-जैसे और जहां-जहां ज़रूरत थी वहां ज़मीन खरीदी अथवा जॉइंट वेंचर कर प्रोजेक्ट्स लांच किए। लोगों का समूह पर विश्वास इतना था कि लगभग हर प्रोजेक्ट सफल रहा तथा उस क्षेत्र की सामाजिक तथा आर्थिक उन्नति का कारण भी बना। यह कहना गलत नहीं होगा कि आधुनिक शहर के निर्माण में कुमार समूह तथा विमल सेठ का योगदान अतुलनीय ही नहीं बल्कि अत्यधिक है। उनकी प्लानिंग कमाल की थी। प्रोजेक्ट किस क्षेत्र में है, वहां किस प्रकार का ग्राहक वर्ग आएगा, उनकी क्या-क्या आवश्यकताएं हो सकती हैं, उन आवश्यकताओं को सबसे बेहतर ढंग से कैसे पूरा किया जा सकता है, वे यह सब सोच-विचार कर ही किसी भी
प्रोजेक्ट पर आगे बढ़ते थे। चाहे गृह प्रकल्प हो या व्यावसायिक वे हमेशा अपने पुराने काम से बेहतर करने को प्रयासरत रहते थे। हर नए प्रोजेक्ट के एलीवेशन और लेआउट में कुछ नवीन करने का उनका हमेशा प्रयास रहता था। मैंने उनके साथ कई प्रोजेक्ट्स पर काम किया लेकिन हर बार एक नया अनुभव मुझे मिला। एकरूपता और निरंतरता को उन्होंने कभी नहीं अपनाया। कुछ भी नया सीखने के लिए और अपना अनुभव नई पीढ़ी को बांटने के लिए वे हमेशा तत्पर रहते थे। वे न सिर्फ युवा पीढ़ी को सिखाते बल्कि उन्हें जिम्मेदारियां देकर आगे बढ़ने का मौका भी देते थे। वे कहा करते थे कि नए-नए इंजीनियर, आर्किटेक्ट अथवा अन्य लोग हमेशा कुछ नया विचार लेकर आते हैं इसलिए उन्हें थोड़ा संवार कर आगे बढ़ने का मौका दिया जाना चाहिए। उन्होंने निर्माण की ऑफिशियल ट्रेनिंग बिल्कुल बेसिक लेवल से ली थी इसलिए इसके हर एक आयाम में वे पूरी तरह से दक्ष थे। साइट इंस्पेक्शन के दौरान छोटी से छोटी बातों पर उनकी नज़र रहती और कई बार वे मुझे साइट पर से ही फोन किया करते और कुछ गलत हो रहा हो या जहां उन्हें थोड़ा भी संदेह हो तो तुरंत दूर करते थे। विमल सर अपने ग्राहकों की छोटी-छोटी ज़रूरतों को ध्यान में रखकर उसके अनुरूप प्रोजेक्ट्स की डिज़ाइन तैयार करवाते थे। उसमें थोड़ी भी कमी होने पर वे ख़ुद आर्किटेक्ट के साथ बैठकर अपनी बात समझाते और अपने अनुसार डिज़ाइन बनवा कर लेते थे। वे ज़मीन से जुड़े हुए एक अद्भुत लीडर थे। उन्हें कभी अपनी आर्थिक समृद्धि और सामाजिक रुतबे पर अभिमान नहीं हुआ। यह उनकी खासियत थी। उनसे कभी भी किसी सामाजिक या व्यावसायिक गोष्ठी में मुलाकात होती तो वे आगे रहकर मिलते और अपने साथ खड़े लोगों से मेरा परिचय करवाते थे। उनके साथ रहने के कारण मेरा भी परिचय पुणे शहर के कई गणमान्य व वरिष्ठ व्यक्तियों से हुआ। एक वक्त की बात है, विमल सेठ, अशोक बेहरे साहब, राठी सर, देसाई सर आदि सब एक बिल्डिंग के भूमिपूजन के अवसर पर इकट्ठे हुए थे। मैं उस प्रोजेक्ट का आरसीसी कंसल्टेंट था। इतने में किसी ने उनसे पूछा कि मुताल्लिक ने आपके इतने सारे प्रोजेक्ट्स किए हैं, आप इनसे ही हर काम क्यों करवाते हैं? इस पर उन्होंने जो जवाब दिया उससे न सिर्फ मैं गर्व से भर गया बल्कि द्रवित भी हुआ। उन्होंने कहा कि ''यह अपना काम पूरी निष्ठा, लगन और जवाबदारी से करता है इसलिए''।
कुमार समूह आज पुणे शहर के शीर्ष पर स्थित डेवलपर्स में से एक है। इसके कई कारण हैंः सर्वप्रथम तो कुमार समूह ने कभी भी इस सेक्टर के बुरे चलन अपनाए नहीं। इनका हर एक प्रोजेक्ट फ्री फ्रॅाम हैसल्स रहा। इसके साथ ही गुणवत्ता से कभी समझौता नहीं किया गया। यदि कभी कोई सप्लायर इन्हें कम गुणवत्ता का कोई उत्पाद सप्लाय कर भी देता तो वे न सिर्फ उसे लौटा देते बल्कि उसे सख़्त हिदायत भी देते कि आगे से ऐसा न हो। विमल सर कहा करते थे कि हम बड़े भाग्यवान हैं कि हमें ऐसा व्यवसाय मिला है जिसमें हम लोगों के सपने पूरे होने का निमित्त बनते हैं। यदि हम गुणवत्ता से समझौता करेंगे और हमारे ग्राहकों को इसकी वजह से दुख हो तो यह उनके साथ नहीं बल्कि खुद के साथ ही धोखा करना होगा। यही विचारधारा कुमार समूह में ग्राहकों के असीम विश्वास का मूल है।

मनोज भण्डारी

मनोज भण्डारी

मैंने व मेरे भाई राहुल भण्डारी ने 1980 के आसपास बिल्डिंग मटेरियल सप्लाय फर्म प्रारंभ की थी। उस समय

बिज़नेस के सिलसिले में मेरी इंदर सेठ व केवल सेठ से मुलाकात हुई और कुमार समूह के साथ मैंने काम शुरू किया। तब मेरे व्यवसाय का भी शुरूआती दौर था और इस समूह से जुड़ने के बाद से तीव्र वृद्धि हुई। इसके बाद मैंने श्री स्टील्स के नाम से एक फर्म शुरू की तब भी इंदर सेठ तथा केवल सेठ ने सपोर्ट किया था। विमल सेठ से नज़दीकी पहचान 1998 में हुई जब मैंने सूर्या सिरेमिक शोरूम प्रारंभ किया। शोरूम की ओपनिंग सेरेमनी में वे आए थे। उसके बाद तो हम व्यावसायिक रूप से एक दूसरे के और नज़दीक आए और मैंने दो प्रोजेक्ट्स कुमार प्रीमियर तथा कुमार प्रिविलेज में उनके साथ पार्टनरशिप भी की। सबसे

अच्छा अनुभव जो कुमार प्रॉपर्टीज़ के साथ व्यवसाय करने के दौरान होता है वह है कि कभी भी ऐसा आभास नहीं होने पाता है कि आपके सम्बन्ध सप्लायर और बिल्डर के हैं। सदा

ही एक घनिष्ठ सम्बन्धी जैसा व्यवहार किया जाता है। न सिर्फ व्यवसाय में बल्कि उन्होंने हमें अन्य बातों के लिए भी हमेशा मदद की। मेरे बंगले का जब निर्माण कार्य चल रहा था तब एक बार उनसे संयोगवश मुलाकात हो गई। बात ही बात में मैंने जब उन्हें बताया कि बंगले का काम चल रहा है तो उन्होंने तुरंत उससे संबंधित दो तीन महत्वपूर्ण बातें मुझे बताई व अपनाने की सलाह दी जो कि काफी उपयोगी सिद्ध हुई। उनसे प्रेरित होकर उनके विचारों को मैंने अपने व्यवसाय में भी अपनाया तो मुझे उसका लाभ मिला। भण्डारी परिवार तथा सूर्या सिरेमिक की ओर से हम उनको भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं।

सतीश मगर

सतीश मगर

विमल जी से पहली मुलाक़ात 1987-88 में एक प्लॉट की खरीद के सिलसिले में हुई थी। साथ में थे दत्ताजी गायकवाड और उनके दामाद श्री गिरमे। उसके बाद पुणे के डेव्लपमेंट प्लान पर एक कोर्ट केस के सिलसिले में लंबी मुलाक़ात हुई थी। मैं ही उनसे मिलने उनके भवानीपेठ स्थित ऑफिस में गया था। बातचीत के दौरान ही वे मुझे PBAP का सदस्य बनने को बोले। उसके बाद से PBAP की गोष्ठियों में भी उनसे मुलाक़ात होती रही।

हम लोग एक ही व्यवसाय में रहे लेकिन फिर भी कभी उनके साथ काम करने का मौका आया नहीं। लेकिन फिर भी व्यावसायिक मामलों में उनकी सलाह मैं लेता रहता था। उन्होने मगरपट्टा सिटी की प्लानिंग और निर्माण के समय भी सलाह दी थी और हर संभव मदद के लिए आश्वासन भी दिया था। वे मुझ पर गुरुत्तर भाव रखते थे। समूह के बँटवारे के दौरान कई आर्बिट्रेटर्स में से एक मैं भी था। उनके साथ खुद को जोड़ पाना बड़ा ही सहज था क्योंकि वे अपने साथ वाले व्यक्ति को बड़ा ही सहज महसूस करवाते थे।

इसे संयोग ही कहें कि मेरी और उनकी कंपनी का अकाउंट भी एक ही बैंक में है और मेरे अकाउंट खुलने के समय उन्होने ही फॉर्म पर अपने हस्ताक्षर किए थे। महाबलेश्वर में भी उनसे कभी कभार मिलना हो जाता था। वे रियल इस्टेट क्षेत्र के उन चंद मालिकों में से थे जो कि प्लान पर ही प्रोजेक्ट की पूरी रूपरेखा तैयार कर लेते थे और कमी बेशी का भी अंदाज़ा लगा लेते थे। वे एक व्यावहारिक निर्माता थे। उनके प्रोजेक्ट्स उपयोगिता के अनुसार होते थे। फ़ैन्सी और दिखावे वाले काम उन्होने कभी नहीं किए। समाज के सबसे बड़े तबके, मिडिल क्लास के लिए उन्होने बहुत ही उम्दा और बेहतरीन प्रोजेक्ट्स किए और इस वर्ग की जरूरतों के अनुसार शहर में जहां ज़रूरत थी वहाँ प्रोजेक्ट्स शुरू किए और सही कीमत पर ईमानदारी के साथ सही समय पर प्रोजेक्ट्स डिलीवर भी किए।

रियल इस्टेट के क्षेत्र में कई व्यावसायिक संगठनों में भी उनकी भूमिका बहुत ही सक्रिय रही और वे कई संगठनों में शीर्ष पदों पर भी रहे। इसके अलावा भी कम्यूनिटी डेव्लपमेंट के कई कामों में उनकी सक्रिय भागीदारी रही। उनसे अंतिम बार मेरी बातचीत मृत्यु से 8-10 दिन पूर्व ही हुई थी। उन्होने क्रेडाई के माध्यम से कार्पोरेशन रीफ़ोर्म्स के संबंध में बात करने के लिए मुझे फोन लगाया था। उनकी मृत्यु इस परिवार और मित्रों सहित इस इंडस्ट्री के लिए भी बहुत बड़ी क्षति है। उनकी अंतिम यात्रा में जिस तरह का समागम लोगों का हुआ था, उसे देख कर लगा कि लोग उनका कितना सम्मान करते थे।

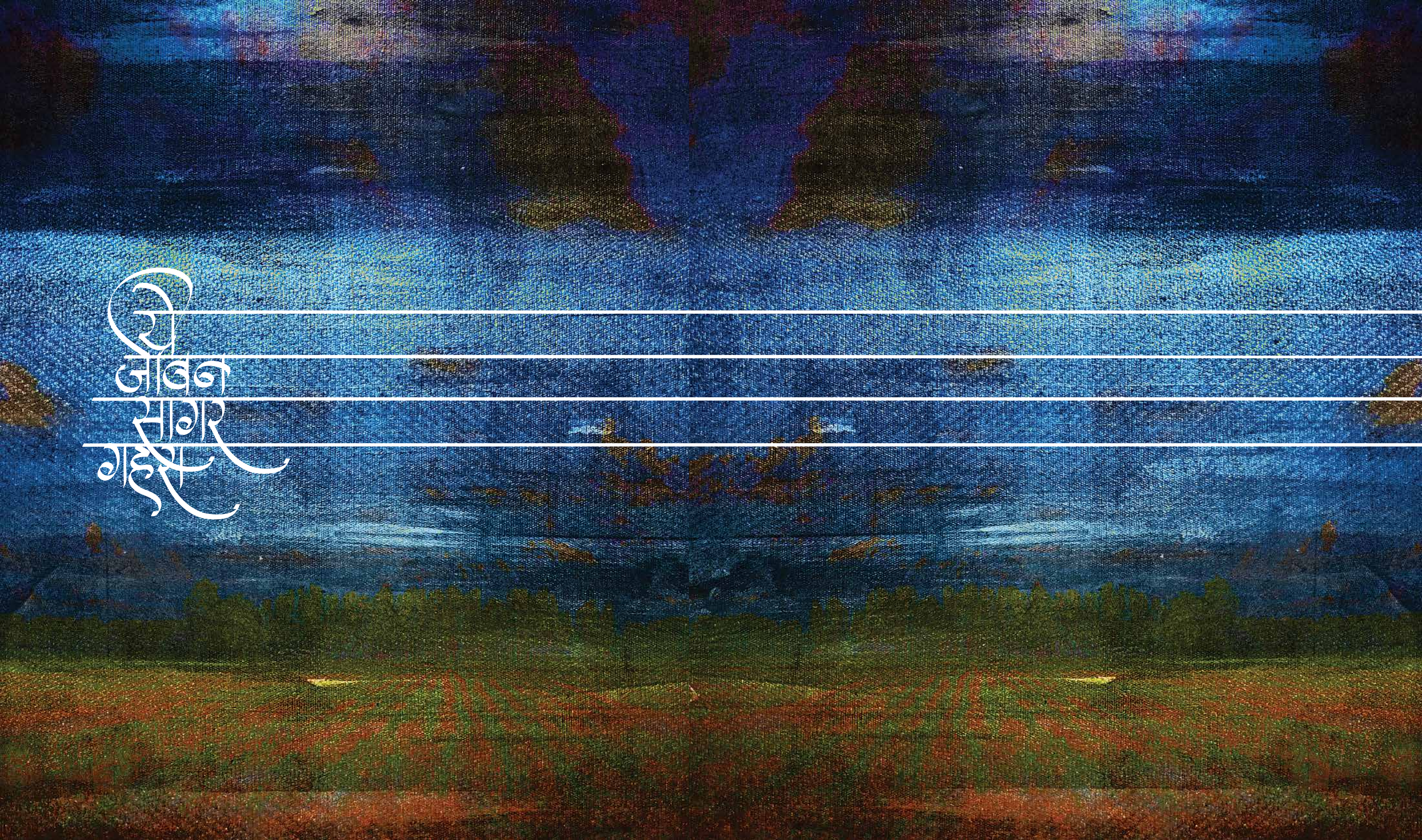
ये
जीवन
सागर
गहरा

वालचंद्र पालरेचा

महाभारत में एक प्रसंग आता है द्वारकाधीश कृष्ण और उनके दोस्त सुदामा का। दोनों की शिक्षा-दीक्षा तो साथ हुई लेकिन उनकी आर्थिक स्थिति में जमीन आसमान का फर्क था। कुछ ऐसी ही थी मेरी और विमल की जोड़ी। कलियुग के कृष्ण और सुदामा। मेरी और उसकी आर्थिक स्थिति में ज़मीन आसमान का फर्क था। लेकिन बचपन की दोस्ती और प्यार इतना गहरा था कि कभी हम लोगों के रिश्ते में यह अंतर देखने को नहीं मिला। मैं, विमल और दिलीप मेहता की तिकड़ी ''वि वा दि'' के नाम से जानी जाती थी। हम तीनों साथ में पढ़ते थे। हांलांकि मैं अलग स्कूल में था लेकिन वहां से आने के बाद पढ़ाई साथ में ही किया करते और फिर अपनी साइकिल पर पूना की सड़कें नापते। मैं 1959 में पुणे आया। तब मैं 5वीं कक्षा में था। विमल की भाषाई विषय जैसे मराठी और सामाजिक विज्ञान पर अच्छी पकड़ थी और मेरी गणित में। हम तीनों ही पढ़ने में अव्वल थे।

स्कूल की पढ़ाई खत्म करने के बाद उसने फर्ग्युसन कॅालेज में प्रवेश लिया तथा मैंने वाडिया कॅालेज में। तब तक सेठजी कुमार प्रॅापर्टीज़ की स्थापना कर चुके थे। हम तीनों उनकी साइट्स पर जाया करते थे और वहां लेबर से लेकर हिसाब रखने तक सारा काम देखते और सीखते थे। विमल ने बड़ी ही जल्दी उस काम में दक्षता हासिल कर ली। अपने बहनोई श्री नयन पालरेचा, जो कि आर्किटेक्ट थे और सेठजी के पहले 5-6 प्रोजेक्ट्स में साथ थे, के अंडर रहकर उसने बांधकाम का पूरा ज्ञान अर्जित किया और जल्दी ही कॅालेज छोड़ कर पूरी तरह से सेठजी के साथ बिज़नेस में जुट गया। मैंने भी कॅालेज के बाद प्लानिंग डिपार्टमेंट के सांख्यिकीय विभाग में नौकरी जॅाइन कर ली। हम दोनों हांलांकि अपने-अपने काम में व्यस्त हो गए लेकिन हमारा तकरीबन रोज़ मिलना हो ही जाता था। मेरा, दिलीप मेहता तथा विमल का परिवार एक दूसरे की एक्सटेंडेड फैमिली की ही तरह था। माताजी तथा सेठजी ने हमेशा मुझे विमल जैसा ही समझा और मैं तथा पूरा परिवार भी उनसे उतनी ही आत्मीयता से जुड़ा हुआ था। विमल का सोशल सर्कल बढ़ने लगा तथा धीरे-धीरे कई बड़े-बड़े लोग उसके परिचय में आने लगे लेकिन मैंने उसके व्यवहार में ज़रा भी फर्क नहीं देखा। यहां तक कि वो और जैसी रियल इस्टेट संगठनों की गोष्ठियों में भी मुझे लेकर जाता और सभी से गर्मजोशी से परिचय करवाता। 20 साल नौकरी करने के बाद मेरे लगातार होते ट्रांसफर्स और बढ़ती पारिवारिक जिम्मेदारियों को देखते हुए उसने मुझे सलाह दी कि मुझे नौकरी छोड़ देनी चाहिए और अपना कुछ बिज़नेस शुरू करना चाहिए। लेकिन मैं उसके लिए आर्थिक और मानसिक रूप से तैयार नहीं था। आखिरकार परेशान होकर मैंने नौकरी छोड़ दी और चाखण में वायर बनाने की फैक्ट्री प्रारंभ की लेकिन घर से दूरी बहुत होने के कारण और आने-जाने में दो बार एक्सीडेंट होने के कारण अंततः वह भी बंद कर दी।

विमल के ही सहयोग से तब मैंने सेनेटरी वेयर की एजेंसी शुरू की। जब जैसल एजेंसी प्रारंभ हुई तब विमल ने अपने सभी बड़े सप्लायर्स को कह दिया कि मैं दो साल तक जैसल से ही सेनेटरी वेयर लूंगा। धीरे-धीरे मेरा सेनेटरी वेयर का बिज़नेस जमने लगा और कुमार कंपनी के अलावा और भी कई बिल्डर्स मुझसे डील करने लगे। आज विमल की सलाह, मदद और मेरी तथा मेरे बेटे की मेहनत से जैसल एजेंसीज़ स्थापित नाम है। सिर्फ इतना ही नहीं मैंने जब-जब जहां-जहां रहने के लिए फ्लेट लिया, विमल ने मेरी मदद की। कुमार गैलेक्सी स्थित मेरा अभी का फ्लेट भी विमल ने ही मुझे लेने के लिए फोर्स किया था। मेरे पास तो इसकी रजिस्ट्री कराने तक के पैसे नहीं थे लेकिन उसने मुझे कहा ''तुमसे पैसे का पूछा किसने? मैं तो इतना कह रहा हूं कि यह बिल्डिंग है, यह फ्लेट है जो कि तुम्हारे नाम से बुक कर रहा हूं'', बस इतना हुआ और फ्लेट मेरे नाम पर हो गया। सिर्फ ऐसा नहीं कि मैं उसका दोस्त था इसलिए वह मेरी मदद कर रहा था। बल्कि यह उसका बेसिक नेचर था। न सिर्फ मुझे बल्कि उस दौरान ऐसे कई लोगों की उसने हरसंभव मदद की, फिर चाहे वह बिज़नेस को लेकर हो, घर को लेकर हो या अन्य किसी प्रकार से हो। समाज के काम में भी वह तन-मन-धन से सहयोग करता। दादावाड़ी जैन मंदिर, अहिंसा भवन, स्कूल, हॅास्पिटल समाजसेवा के ऐसी कई इमारतें उसने स्वयं रुचि लेकर बनवाई। इन इमारतों की ज़मीन, प्लानिंग, निर्माण से लेकर इनके लोकार्पण तक हर कार्य में विमल सक्रिय रूप से शामिल हुआ। जो व्यक्ति समाज के लिए इतना करता हो वह अपने परिवार के प्रति कैसा रहा होगा इसका आप सहज ही अंदाज़ा लगा सकते हैं। एक तो यूं भी परिवार में बड़ा होने के कारण उसकी ज़िम्मेदारी ज़्यादा थी, फिर उसमें स्वाभाविक बड़प्पन की भावना भी थी, इसलिए उसने शुरूआत से ही पूरे परिवार को एक सूत्र में बांधे रखा तथा सबको साथ में लेकर चला। अपने तीनों छोटे भाई तथा सभी बहनों का समान रूप से ध्यान रखा और व्यवसाय, परिवार, समाज इन सबमें सफलतापूर्वक तारतम्य बैठाया। उसने सही समय पर अपने तीनों भाइयों को उनकी ज़िम्मेदारी सौंपी और तीनों ने उसे अच्छे से निभाया भी। वैसे उसके पूरे जीवनकाल में मैंने कभी उसके साथ कोई ऐसी परिस्थिति नहीं देखी जहां उसे बहुत गहरा धक्का लगा हो या नुकसान हुआ हो, किंतु जब ललित ने उससे अलग होने का फैसला लिया, उस समय वह बहुत परेशान हुआ था। परिस्थिति को भांपते हुए उसने तुरंत ही निर्णय लिया और माताजी तथा अन्य परिजनों व घनिष्ठ परिचितों से चर्चा कर अपना व्यवसाय अलग कर लिया। विमल ने अपनी नीतियों तथा जीवन जीने के तरीके से निर्माण व रियल इस्टेट क्षेत्र में, समाज में तथा शहर में अपनी एक अलग जगह बनाई है। वह एक कभी भी न भूला जा सकने वाला व्यक्तित्व है।

ताजुद्दीन सोमजी

रोजमर्रा के जीवन में आपको सैकड़ों लोग मिलते हैं तथा आपके परिचितों की लिस्ट में भी कई चेहरों का समावेश होता है लेकिन बहुत थोड़े ही चेहरे ऐसे होते हैं जिन्हें देखकर आप दिल से खुश होते हैं। कुछ ही ऐसे व्यक्ति होते हैं जिनसे मिलकर आप अपनी परेशानी भूल जाते हैं और आपके चेहरे पर मुस्कान आ जाती है। मेरे जीवन में बहुत थोड़े ऐसे व्यक्तियों में विमल जी शुमार थे। हमेशा हंसता हुआ चेहरा लिए वे आपके सामने आते, चाहे उनके खुद के साथ कितने ही उतार-चढ़ाव चल रहे हों लेकिन चेहरे पर शिकन का नामोनिशान नहीं होता था। उनके साथ बात करते हुए आप स्वयं उनकी सकारात्मक उर्जा और खुशमिज़ाजी को अपने अंदर स्थानांतरित होता हुआ सा पाते थे। छोटा-बड़ा, ऊंच-नीच इन विचारों को तुच्छ समझते हुए उन्होंने अपने जीवन को भरपूर जिया और ऐसी मिसाल कायम की है कि आज उनके निधन के बाद जिससे भी आप सुनें वह उनकी तारीफ ही करेगा। ऐसा भरपूर सम्मान बहुत ही कम लोगों को नसीब होता है।

मैं विमल जी को बहुत करीबी रूप से जानता था। वय में मुझसे भले ही छोटे थे लेकिन उनकी नेतृत्व क्षमता, व्यावसायिक काबिलियत, रिश्ते निभाने की कला और दोस्ताना मिज़ाज का मैं बड़ा कायल था। अपनी आवश्यकताओं को कम तथा परिवार की आवश्यकताओं को प्रायोरिटी पर रखकर उन्होंने पूरे परिवार को एक सूत्र में बांधे रखा तथा सभी को अच्छी शिक्षा व अच्छे संस्कार दिए तथा उनकी रुचि तथा काबिलियत के हिसाब से जवाबदारियां भी दी। सबको खुश रखने का जैसे उन्हें शौक था। कंस्ट्रक्शन के व्यवसाय में भी उन्होंने उच्च कोटि के मापदण्ड स्थापित किए हैं। वे कहा करते थे कि ‘‘व्यापार में जबान सबसे बड़ी होती है। यह मेरा व्यापार करने का तरीका है। कुछ लोग पैसे को बड़ा मानते हैं और लाभ के कम ज्यादा होने की दशा में कई बार अपने ग्राहकों की मांगों तथा गुणवत्ता से समझौता करते हैं, यह मुझे पसंद नहीं।’’ लाभ हो, न हो, लेकिन जो कहा वह पूरा करना, यह उनका परम गुण था। मुझे बहुत खुषी है कि नई पीढ़ी भी उन्हीं के पदचिन्हों पर चल रही है। यहां तक कि कुमार प्रॉपर्टीज़ का स्टाफ भी उसी नम्रता और दोस्ताना तरीके को अपनाए हुए है। मैं उनके साथ अब तक लगभग 10 से अधिक प्रोजेक्ट्स कर चुका हूं। कभी भी उनकी तरफ से लेशमात्र भी गुंजाइश ऐसी नहीं रखी गई जहां मुझे यह अहसास हो कि कुछ गलत हुआ है। इतनी साफगोई और इतनी ईमानदारी के साथ हर डील हुई है कि संदेह का प्रश्न भी कहीं नहीं उठा।

उनके नेतृत्व में कुमार समूह ने नई उंचाइयां छुई है तथा अब अगली पीढ़ी के हाथ में कमान है और मुझे पूरा भरोसा है कि वे भी इस समूह को और समृद्ध करेंगे।

ताजुद्दीन सोमजी

तुषार करकरे

तुषार करकरे

मैंने अपने करियर की शुरुआत श्री रामकुमार जी राठी तथा श्री केशव देसाई की कंपनी स्ट्रक्चर्स से की। वहां पर स्ट्रक्चरल इंजीनियर के तौर पर काम करते हुए मेरी मुलाकात विमल सर से हुई थी। वे वहां अपने प्रोजेक्ट्स के सम्बन्ध में अक्सर आया करते थे। इन दोनों प्रोजेक्ट्स पर काम करते हुए मेरी पहचान श्री विमल कुमार जी से बढ़ी तथा मैंने उनसे काफी कुछ सीखा। हालांकि हम दोनो के सम्बन्ध क्लाइंट तथा सर्विस प्रोवाइडर के तौर पर प्रारंभ हुए लेकिन विमल भाई के व्यवहार से कभी यह अंतर झलका नहीं। वे हमेशा एक अच्छे दोस्त की तरह व्यवहार करते। 1987 में मैंने अपनी फर्म एल्ट्रॉन कंसल्टेन्ट्स प्रारंभ की। मेरे शुरुआती दौर में उन्होंने मेरी बहुत मदद की तथा प्रोजेक्ट्स पर राय भी ली। एक वक्त की बात है मैं छुट्टी मनाने के लिए शहर से बाहर गया हुआ था। इंदिरापुरम प्रोजेक्ट पर मैं उन दिनों कुमार समूह के लिए काम कर रहा था। मेरी गैरहाजिरी में विमल जी को स्लेब से जुड़ा एक महत्वपूर्ण निर्णय लेना था तथा उसके अनुसार ड्राइंग में फेरबदल करना था। चूंकि मैं शहर से बाहर था और काम बहुत ज़रूरी था, अतः उन्होंने ड्राइंग के बिना ही स्लेब में परिवर्तन कर दिया। मैं जब वापस आया तब उन्होंने मुझे उसके बारे में बताया। मुझे बड़ी हैरत हुई कि बिना किसी इंजीनियर से सलाह लिए इन्होंने कैसे इतना सटीक निर्णय लिया? ड्राइंग में तो बदलाव मैंने बाद में किया। साइट पर काम पहले ही हो चुका था। यह वाकया सिद्ध करता है कि उन्हें इस क्षेत्र का कितना गहन ज्ञान था। ड्राइंग तथा प्लानिंग के दौर में वे कई इतनी छोटी-छोटी बातों का ध्यान रखते हुए बदलाव करवाते थे जिन पर कई दफा हम तकनीकी लोगों का ध्यान ही नहीं जाता था। वे हमेशा हर प्रोजेक्ट के समय यह प्रयत्न करते थे कि आर्किटेक्चरल ड्राइंग वह ही बने जो कि स्ट्रक्चरल डिज़ाइन के तौर पर अपनाई जा सके। आरसीसी प्लान और आर्किटेक्चरल प्लान में एक साम्यता रहे, यह उनका प्रयत्न रहा करता था।

आमतौर पर बिल्डर्स खासकर मालिक कभी इतना डीटेल्ड रूप से ड्राइंग पर चर्चा नहीं करते थे। इसके दो फायदे थे एक तो कंस्ट्रक्शन साइट पर निर्माण सहज होता था साथ ही वेस्टेज कम से कम होता था जिससे कि प्रोजेक्ट का खर्च अनावश्यक रूप से नहीं बढ़ता था। निर्णय लेने की जो तत्परता तथा सटीकता मैंने उनके अंदर देखी वो आमतौर पर सभी बिल्डरों में देखने को नहीं मिलती है। उसके लिए विमल कुमार जी जितनी बारीक नज़र व विराट अनुभव होना आवश्यक है। उनकी निगाह हमेशा अपने ग्राहक की ज़रूरतों को बेहतर ढंग से पूरी करने में लगी रहती थी। ग्राहकों को कोई भी परेशानी होने पर वे तुरंत क्रियाशील होते व कई बार सीमाओं के परे जाकर भी ग्राहकों की मदद करते। वे जितनी आसानी से ग्राहकों के लिए उपलब्ध होते हैं उतने अन्य बिल्डर्स नहीं होते हैं।

उनके इन्हीं गुणों की वजह से सर्वत्र उनका आदर किया जाता था। एक बार नाकोड़ा प्रताप बिल्डर समूह के मालिक ने मुझसे उनके किसी प्रोजेक्ट को लेकर सम्पर्क किया। चूंकि मैं उस समूह से तथा उसके मालिक से परिचित नहीं था इसलिए मैं सहज ही उस प्रोजेक्ट के लिए तैयार नहीं हुआ। फिर उन्होंने बताया कि उन्हें विमल जी ने मेरे बारे में बताया है तथा मुझे ही यह प्रोजेक्ट करना होगा क्योंकि वे उनका कहा नहीं टालते हैं। व्यक्तिगत तौर पर भी वे बड़े ही सहज थे। उस दौर में उनके पास एक ग्रे रंग की वेस्पा स्कूटर थी। हम दोनों कई बार उसी पर साइट विज़िट को निकल पड़ते थे। कई बार उन्होंने मुझे उस स्कूटर से मेरे घर तक भी छोड़ा। इतनी सहजता और सरलता इतने बड़ी पदवी पर बैठे व्यक्ति से मैंने तो कतई उम्मीद नहीं की थी लेकिन मेरे सुखद आश्चर्य की सीमा तक उन्होंने मुझे अपने गुणों से प्रभावित किया। मेरे कई मित्रों ने भी उनसे कंस्ट्रक्शन लाइन में आने के लिए सलाह मांगी और उन्होंने सबको न सिर्फ प्रोत्साहन दिया बल्कि कईयों को मदद भी की। उनकी वजह से मेरा सोशल सर्कल भी पुणे शहर में और बढ़ा तथा कई नामी गिरामी लोगों से मेरी पहचान हुई।

एस सी नागपाल

एस सी नागपाल

मैं 1993 में इलाहाबाद से पुणे डाइरेक्टर, इन्वैस्टिगेशन, इंकम टैक्स के रूप में ट्रान्सफर होकर आया था। सरकारी घर कोई खाली था नहीं और मेरा पूरा परिवार मेरे साथ था इसलिए मैं जगह की तलाश में जुट गया। विमल जी अपनी ओर से खुद ही आए और मुझे दो तीन जगहों का प्रस्ताव दिया। उसमें से एक था सोमजी का पुराना बंगला। लेकिन एक तो वह बहुत बड़ा था और दूसरा वह पुराना था, तो मैंने उसके लिए मना कर दिया। उन्होने मुझसे कहा कि भले ही मैं उसमें रहूँ नहीं लेकिन सामान रख दूँ। उसके बाद उन्होने मेरे रहने के लिए घर ढूँढने में भी बड़ी मदद की और हम लोगों के संबंध जुड़ गए।

मैं सरकारी महकमे में हूँ, और वो भी आयकर विभाग में, तो अक्सर ही हमसे जो भी कोई बाहरी व्यक्ति मिलने आता, उसका कहीं न कहीं कोई स्वार्थ रहता था। लेकिन विमल जी वास्तविकता में मेरी मदद करने के उद्देश्य से ही मुझसे मिले और न तो पहली बार मिलने पर और न ही उसके बाद कभी भी उन्होने मुझसे कोई भी फ़ेवर नहीं मांगा और न ही किसी प्रकार का कोई अनुचित काम करने को कहा। एक तो बिल्डर होने की वजह से मैं वैसे ही उनसे मिलने का इच्छुक नहीं था, और फिर उन्होने मिलने पर जिस तरह से मुझे मदद का प्रस्ताव दिया, उससे मैं और सशंकित हो गया। लेकिन मेरे दूसरे मातहतों ने मुझे बताया कि ये उन लोगों में से नहीं है, फिर मैं उनसे मिला और इतना प्रभावित हुआ कि हमारे संबंध प्रगाढ़ होते गए।

शहर के प्रति उनका नज़रिया बहुत ही व्यापक था। वे हर चीज़ को टोटलिटी में देखते थे। कुमार समूह की प्रतिष्ठा के बारे में और ग्राहकों के इन पर विश्वास के बारे में जानकर इनके प्रति मेरा आदर और बढ़ गया। एक बार बात-बात में मैंने उन्हे फार्म हाउस लेने की इच्छा जताई। उन्होने उसके बाद मुझे इस मामले में बहुत मदद की और वाघोली में फार्म हाउस भी दिलाया। न सिर्फ इतना, बल्कि उन्होने वहाँ सॉइल टेस्टिंग भी करवाई और एक छोटा सा निर्माण करने की भी सलाह दी। 1996 में मेरा ट्रान्सफर चंडीगढ़ हुआ और फिर से 1997 में मैं पुणे आया। उसके बाद मैंने यहाँ फ्लेट खरीदने की इच्छा जाहीर की तो इसमें भी उनका बहुत योगदान रहा। वे हर समय मेरे लिए मददगार रहे और बदले में कभी कुछ नहीं चाहा। ऐसे लोग नसीब से ही मिलते हैं।

जब तक काम
ना होजाय वो असंभव
लगता है

जब तक काम
ना होजाय
वो असंभव
लगता है

विजय मेहता

विजय मेहता

मेहता परिवार तथा ओसवाल (जैन) परिवार के सम्बंध तीन पीढ़ियों से हैं। केसरीमलजी व मेरे पिताजी श्री देवराज जी मेहता अच्छे दोस्त थे। मैं तथा विमल भाई आपस में अच्छे दोस्त रहे। यही नहीं विमल भाई की माताजी तथा मेरी माताजी सायरबाई मेहता के भी आपसी सम्बन्ध काफी प्रगाढ़ रहे हैं। कुल मिलाकर हम एक दूसरे की एक्सटेण्डेड फैमिली जैसे हैं। हम कई सालों तक केदारी रोड़ में पड़ोसी रहे। उस समय पूना शहर के कुछ उंगलियों पर गिनने लायक बिल्डर्स में से ये एक थे। इसके साथ ही मारवाड़ी समुदाय के तो यह पहले बिल्डर ही थे। हमारे पिताजी का ज्वेलरी व्यवसाय था। प्रारंभ में केसरीमलजी द्वारा बनाई गई एक बिल्डिंग में, जो कि संत कबीर चैक पर है, हमने हमारी बहन के लिए एक दुकान भी ली थी। विमल भाई एक विरले तथा प्रेरक व्यक्ति थे। वे बिना झिझक अपने साथ वालों को सलाह देते थे और वह भी ऐसी सलाह कि माननी ही पड़े। हमें ज्वेलरी के बिज़नेस से रियल इस्टेट में लाने में भी विमल भाई का ही हाथ था।

मेरी फर्म अम्बा बिल्डर्स ने उनके साथ पंचरत्न नामक प्रोजेक्ट भी किया था। वे मेहनती तथा लगन के पक्के थे। अपने व्यवसाय के प्रति किसी में ऐसी निष्ठा और लगन देखने को आमतौर पर नहीं मिलती है। कंस्ट्रक्शन के क्षेत्र में श्रेष्ठता के नए मापदण्ड स्थापित करने का श्रेय उन्हें ही जाता है। उनके बाद कई लोगों ने उनसे प्रेरित होकर कंस्ट्रक्शन व्यवसाय अपनाया। वे बहुत ज्ञानवान थे। हम तो उनके सामने प्राइमरी के विद्यार्थियों जैसे थे। अपने अन्य मामलों के लिए भी हम उनकी सलाह लिया करते थे। इस परिवार की खासियत यह रही कि सभी लोग जमीन से जुड़े रहे। किसी ने भी कभी अपने पद एवं प्रतिष्ठा का अभिमान नहीं पाला व उसका दुरूपयोग नहीं किया। इंदर, केवल उनके बेटे आदि सब जहां मिलते आदर भाव से मिलते। यदि आप कभी उनके कार्यालय जाएं और आपके जाने से पहले यदि किसी कारण से उनका मन उखड़ा हुआ भी हो तो भी आपको कभी महसूस नहीं होने देंगे और तुरंत ही सामान्य तरीके से आपसे बात करेंगे। यह गुण विमल भाई में तो बहुत था। जैन समाज के लिए उन्होंने कभी भी नहीं भुला सकने वाला योगदान दिया है।

सामाजिक प्रतिबद्धताओं के बारे में मैंने उनसे बहुत सीखा। ईश्वर की कृपा से आज मैं भी समाजसेवा के कई कार्यों में अपना थोड़ा योगदान दे रहा हूं तथा इसकी प्रेरणा मैंने उन्हीं से ली थी। भले ही आज वे हमारे बीच नहीं हैं लेकिन अपने इन्हीं गुणों की वजह से वे हमारी स्मृतियों में सदैव बने रहेंगे और प्रेरित करते रहेंगे। सिर्फ जैन समाज ही नहीं बल्कि पुणे के सामाजिक वातावरण में उनके किए कार्यों की वजह से वे हमेशा आदर के साथ याद किए जाते रहेंगे।

विमल जोशी

मोरबी टाइल्स तथा जोशी परिवार को ख़ुद पर बहुत गर्व है कि हम विगत 25 वर्षों से कुमार समूह के साथ व्यापारिक सम्बन्ध कायम किए हुए हैं। मेरे बड़े भाई धर्मेंद्र जोशी ने 1982 में मोरबी की स्थापना की थी तथा लगभग अपनी शुरूआत से ही हम कुमार समूह के सम्पर्क में आए थे। इनके साथ जुड़ने के बाद से हमारे व्यवसाय में तो समृद्धि आई ही बल्कि बाज़ार में स्थापित होने में भी हमें काफी मदद मिली। श्री विमल कुमार जी एक विलक्षण व्यक्तित्व थे। मुझे याद ही नहीं आता कि इतने वर्षों के व्यावसायिक व्यवहार के दौरान कभी भी इस समूह के साथ हमें किसी भी प्रकार की किसी परेशानी का सामना करना पड़ा हो। हम प्रारंभ में इंटरलॉक टाइल्स सप्लाय किया करते थे तथा धीरे-धीरे टाइल की अन्य वैरायटीज़ भी इस समूह को सप्लाय करने लगे।

विमल जी के साथ काम करते हुए हमने यह सीखा कि सदा ही उच्च गुणवत्ता युक्त उत्पाद रखना और अपने ग्राहकों को भी वह ही इस्तेमाल करने की सलाह देना। व्यवसाय में उनके जैसी पारदर्शिता बड़ी मुश्किल से ही देखने को मिलती है। उन्हीं के कारण हमें एच वी देसाई हॉस्पिटल सहित अन्य कई बड़े ऑर्डर्स मिले जिससे हमारे व्यवसाय में वृद्धि हुई। उनका निधन से न सिर्फ हमारी फर्म ने बल्कि उनसे जुड़े इस शहर के कई अन्य व्यवसायियों ने एक शुभचिंतक को खो दिया है।

विमल जोशी

विवेक पोतनीस

विवेक पोतनीस

'साझेदार'; यह एक बहुत ही छोटा और हल्का शब्द है हमारे और विमल भाई के रिश्ते को समझने के लिए। क्योंकि उन्होंने कभी मुझे एक साझेदार की तरह देखा ही नहीं। उनका मेरे साथ जो व्यवहार था उसे मैं दो संज्ञा दे सकता हूं, एक गुरू या गाइड और दूसरी बड़े भाई। मैं बुटाला एंड डाढ़े असोसिएट्स के साथ होने वाली एक ज़मीन की डील के सम्बन्ध में पहली बार विमल भाई से मिला, यह बात करीब सन् 1985 की है। मैं ग्लेक्सो में मार्केटिंग विभाग में नौकरी करता था। तब से मुलाकातों का सिलसिला चल निकला जो सन् 1988 आते-आते एक पार्टनरशिप फर्म कुमार एंड पोतनीस के रूप में समृद्ध हुआ। यह वह दौर था जब पुणे शहर अपनी भौगोलिक सीमाओं को लांघ रहा था और डेक्कन, कोथरूड व कर्वे नगर आदि क्षेत्र अस्तित्व में आने लगे थे। साथ ही पुणे सांस्कृतिक, सामाजिक व आर्थिक तौर पर बदलाव की करवट ले रहा था। विमल भाई से मेरा जुड़ना दो कारणों से हुआ। पहला, वे तेज़ी से बढ़ते दक्षिणी-पश्चिम क्षेत्र में अपनी पैठ बनाना चाहते थे और इसी के साथ वे चाहते थे कि उनके छोटे भाई स्व. श्री इंदर कुमार जैन भी कंस्ट्रक्शन के क्षेत्र में आ जाएं।

इसी के चलते उन्होंने मुझे और इंदर भाई को लॉ कॉलेज रोड पर एक ऑफिस खोल कर दिया और कोथरूड तथा उस क्षेत्र के सभी प्रोजेक्ट्स की पूरी जिम्मेदारी सौंप दी। विमल भाई की सबसे बड़ी ख़ासियत थी उनकी सही समय पर, सही व्यक्ति को चुनकर सही निर्णय लेने की क्षमता। उन्होंने मुझे, जिसे कि निर्माण के क्षेत्र की समझ नहीं थी, एक ऑफिस खोल कर पूरी ज़िम्मेदारी दे दी। लेकिन मैंने भी उनके विश्वास को डिगने नहीं दिया और एक साल खत्म होते होते ही हमारी फर्म ने दो बड़े प्रोजेक्ट्स शुरू कर दिए थे। कुमार एंड पोतनीस समूह ने साथ में कई लैण्डमार्क प्रोजेक्ट्स किए हैं और अभी भी कर रहे हैं।

उन्होंने मुझे जीवन जीने की बहुत सी सीखें दीं। ऐसी कई चीज़ें थीं उनकी जो उनसे जुड़ने वाले हर व्यक्ति को एकदम प्रभावित कर लेती थीं। वे दूरदर्शी थे। भविष्य के प्रति वे न सिर्फ संवेदनशील थे बल्कि मैं तो यह भी कहने से नहीं हिचकूंगा कि उन्हें दैवीय शक्तियां प्राप्त थीं। वे जैसे सब कुछ पूर्व में ही देख लेते थे। विशेषकर किसी भी प्रोजेक्ट से पहले उसके प्लानिंग फ़ेज़ में उनके द्वारा लिए गए निर्णय बिना इफ या बट के मानने जैसे होते थे। कम बोलना और सही बोलना यह एक ऐसा गुण था जिसने मुझे सबसे ज़्यादा प्रभावित किया। वे तेज़ी से निर्णय लेते थे और उस पर अडिग रहते थे। उनकी कथनी और करनी में कोई फर्क नहीं था। उनकी ग्रास्पिंग पॉवर और हर विषय के बारे में उनका ज्ञान अविष्वसनीय था। उनका टाइम मैनेजमेंट एकदम पर्फेक्ट था। इतने व्यस्त शेड्यूल के बावजूद वे हरसंभव तरीके से दिन में 1.30 बजे तथा शाम 7.30 बजे खाना खाने के लिए घर पर मौजूद होते थे। पुणे शहर से उन्हें बड़ा लगाव था। इसके साथ ही वे धर्म तथा मानव सेवा कार्यों में भी वे बहुत सक्रिय थे। पुणे में कई मंदिर तथा सेवास्थान बनवाने में उन्होंने तन-मन-धन से सहयोग किया। जीवन के प्रति उनका नज़रिया हमेशा सकारात्मक रहा। उनके साथ रहने वाले उनकी सकारात्मक ऊर्जा को महसूस

कर सकते थे। उनके निधन के बाद कुमार प्रॉपर्टीज़ समूह में एक ऐसा शून्य निर्मित हो गया है जिसे शायद कोई नहीं भर सकता है।

मेरी कलम से...

श्री विमल कुमार केसरीमल जैन मेरे जीवन को एक नई दिशा देने वाले परम आदरणीय और प्रातः-स्मरणीय व्यक्तित्व हैं। मैं मूलतः मध्यप्रदेश का निवासी हूँ। हुआ यूं कि 2011 में मेरा विवाह पुणे में हुआ और समारोह में अन्य कई लोगों के बीच मंच पर मुझे बधाई देने एक व्यक्ति आए और मैंने झुककर उन्हे प्रणाम किया। उन्होने मेरे पास आकर मेरे कानों में कहा कि "यंग मैन, यू आर वेरी लकी टू बी हिज़ सन इन लॉ।" उनका इशारा मेरे ससुर आर्किटेक्ट प्रकाश शर्मा की ओर था। यूं उस भीड़ में कई लोग आ-जा रहे थे लेकिन जिस आत्मीयता से वे मुझसे मिले, मैं तुरंत ही उनसे प्रभावित हुआ और मेरे ससुर जी ने फिर उनका परिचय दिया "आप है विमल शेठ, कुमार प्रॉपर्टीज़ के मालिक, और लकी आप मुझसे जुड़कर नहीं, बल्कि मेरे माध्यम से इनसे जुड़कर हुए हो।"

बस इतनी सी मुलाक़ात मुझे याद है। मैं फिर से इंदौर लौट गया और फिर उनसे मुलाक़ात के ठीक एक महीने बाद 7 जून को मुझे खबर मिली कि विमल शेठ नहीं रहे। भले ही मेरा परिचय उनसे बस विवाह समारोह में हुआ हो, और सीमित रहा हो, लेकिन इस खबर ने मुझे अंदर तक झकझोर दिया। उस दिन मुझसे कई लोग मिले थे लेकिन विमल शेठ का चेहरा मेरे स्मृति पटल पर अंकित हो गया था। उनके अवसान की खबर सुनते ही वह हंसमुख चेहरा और उनके कहे शब्द मेरे मन-मस्तिष्क में गुंजायमान होने लगे।

इसे नियति ही कहें, या ईश्वर का लेखा, कि 2011 का अंत आते-आते मेरे लिए एक ऐसा सुअवसर लेकर आया कि मुझे खुद के भाग्य पर ही आश्चर्य होने लगा। नवंबर, 2011 में श्री राजस जैन ने मुझे बुलाया और कहा कि वे शेठ की एक स्मारिका निकालना चाहते हैं और उसके संकलन-सम्पादन का जिम्मा उन्होने मुझे सौंप दिया। इंदौर छूटा और मैं सपत्नीक पुणे आ गया और स्मारिका के लिए काम शुरू किया। इस तरह से यह स्मारिका आकार लेने लगी।

हर दिन मैं शेठ से जुड़े लोगों से मिलता, उनसे बातें करता, उनके संस्मरण सुनता और हर गुजरते दिन के साथ मेरी उनके प्रति श्रद्धा में दिन-दुनी रात-चौगुनी वृद्धि होती जाती। अक्सर कई मौके ऐसे आए जब मुझसे संस्मरण साझा करते हुए कई लोग उनकी याद में फूट-फूट कर रोने लगते। मैं यह सोच-सोच कर विमुग्ध था कि इस अज़ीम शख्सियत को लोग कितना पसंद करते हैं और उनके प्रति सभी के मन में कितना आदर है। एक तो शहर मेरे लिए नया था, फिर हिन्दी भाषी होने की वजह से मराठी में भी ज़रा हाथ तंग था। लेकिन यकीन मानिए की न तो भाषा और न ही किसी अन्य वजह से मुझे कभी कोई परेशानी आई हो। ऐसा लगने लगा था मानो मैं तो बस निमित्त हूँ और वास्तविकता में तो कोई और शक्ति है, जो कि मुझे सहारा दे रही है। और, इस तरह से यह स्मारिका इस रूप में आप लोगों के समक्ष है।

प्रस्तुत स्मारिका में उनसे जुड़े विभिन्न वर्गों के व्यक्तियों के संस्मरणों का समावेश किया गया है। मुझे आशा ही नहीं वरन पूरा विश्वास है कि संस्मरणों को पढ़कर आप ख़ुद को उनके थोड़ा और करीब पाएंगे। विमल शेठ का व्यक्तित्व इतना विराट है कि शब्दों में समेट पाना असंभव है, लेकिन फिर भी इतना ही कहना चाहूँगा कि,
"है समय नदी की धार, सब बह जाया करते हैं, विरले ही होते हैं वे, जो इतिहास बनाया करते हैं"
इन पंक्तियों के साथ मैं नमन करता हूँ उस व्यक्तित्व को जिसने आधुनिक पुणे में निर्माण उद्योग की दशा और दिशा तय की है। सादर....

दुष्यंत सेवक
संपादक एवं संकलक